॥ ओ३म् ॥

# ज्योतिषदिवाकरः॥



तत्
श्रीयुत
पण्डित लाहौरीराम शर्म्मणा अलावलपुर
निवासिना संकलितः

पण्डित अनन्तरामशर्म्मप्रबन्धेन
जालन्धर पत्तनस्थ
सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालये मुद्रितः॥

संवत् १९६४ विक्रमी श्रावण॥



प्रथमावृत्ति ३००  मूल्यम् ।)

पुस्तकों पर सर्वप्रकार की निशानियां लगाना अनुचित है।

कोई विद्यार्थी पन्द्रह दिन से अधिक पुस्तक नहीं रख सकता।

विघ्नहर्त्रे नमः

# विज्ञापन ।

लीजिये महाशयवर शीघ्र ही इस नवीन संकलित पुस्तक पर आद्योपांत दृष्टि देकर देखिये और पुस्तक संग्रह कर परोपकार सिद्ध कीजिये, यह ग्रन्थ ज्योतिष पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिये मैंने बहुत से महर्षियों के मत मतान्तर स्वबुद्धयनुसार संस्कृत श्लोकों की हिन्दी भाषा की है, इस ग्रन्थ के यथोक्त पढ़ने से सर्व साधारण जनों के हृदय में ज्योतिषरूप दिवाकर ( सूर्य्य ) उदय होगा ( हां यह बात सत्य ही है, ) ( जैसा नाम वैसा काम ) और इस लघु ग्रन्थानुसार जन्म से मृत्यु पर्यंत सर्व वृत्तान्त दृष्टिगोचर हो सक्ता है, अनेक प्रकार के मुहूर्त प्रश्नादि इस में है । जितना फल जातक ताजक मुहूर्त प्रश्नादि अनेक ग्रन्थों के पढ़ने से होता है उतना वल्कि उससे भी अधिक फल इस अकेले छोटे से ग्रन्थ के पढ़ने से हो सकता है, महाशय वर यह ग्रन्थ मैंने बहुत ही यत्न से बनाया है और इस ग्रन्थ में जन्म पत्री वा वर्षफल बनाना, देखना और मुहूर्त प्रश्नादि आयु निकालने की रीति वा जातक की रीति और स्त्री जातक और भी इस में बहुत से विषय रक्खे हुए हैं, इस ग्रन्थ का एक वार अवलोकन करने से आप सर्व सज्जनों को मालूम हो जायगा ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ इत्यलम् ॥

**पुस्तक मिलने का पता:-**

पंडित लाहौरीराम शर्म्मा
पो० आ० अलावलपुर ज़िला जालन्धर

॥ ओ३म् ॥

विपाशिका तीर विराजमाने श्रीहाचाँवाले नगरेऽस्ति रम्ये ।
अभूच वासिष्ठ महर्षिवंशे श्रीघनश्यारामो द्विजराजकीर्त्तिः॥१॥
तस्यात्मजा वारि वभूयुरेषां श्रीरामकृष्णः प्रथमं बभूव ।
नित्यंच यत्तातसरोज पादसेवांप्रतीतो मनसाचकार ॥ २ ॥
तस्यांगजः शास्त्रकुशाग्र बुद्धिस्त्यागेशयोयस्य जनिर्लघिष्टः ।
सलहौरीराम जनकप्रदिष्टां करोतिवृत्तिं परमांप्रशस्ताम् ॥ ३ ॥
वासिष्ठ गोत्रसमुत्पन्नोजातः रामकृष्णतः । श्री अलावल पुरे वासी गौरजर कुलोद्भवः ॥ ४ ॥

छिद्रान्वेषण तत्पराः परकृते विध्वंसकादूषका ।
मात्सर्येण परार्थनाशन परादुर्बुद्धयोमानिनः ॥
सत्कार्ये शिथिला कुकर्मसुखिनो निंदन्तु नन्दतु वा ।
ममकृत्यं सुकृतं परोपकृतये कुर्वंतु दुर्मत्सराः ॥ १ ॥

भाषाः—जो पुरुष दूसरे के छिद्र ढूंढ़ने में तत्पर पराये किये सत्कर्मों का नाश करने वाले ( मत्सरी ) पराये भलाई से बिनाही आग जल भुन जाने वाले दूसरे के प्रयोजन को भंग करने में तत्पर और शुभ कृत्यों में शिथिल बुरे कामों से सुख मानने वाले दुर्बुद्धि हैं, वह मेरे परोपकारार्थ इस परिश्रम को देख कर निन्दा करें वा आनन्द होकर प्रशंसा करें परन्तु जो विज्ञ महाशय दुष्कृत्य से चिंता करने वाले वह इस कृत्य को सुकृत करें ॥ १ ॥

* ओम् सरस्वत्यै नमः *

# अथ ज्योतिषदिवाकर प्रारम्भः ।



गजाननं प्रणम्यादौदेवीं वाग्देवतां गुरुम् ।
ज्योतिषदिवाकरं वक्ष्येलोकानांहितकाम्यया ॥

प्रथम इस प्रकरण में जन्मपत्री बनाने की रीति लिखते हैं:—

श्लो. प्रस्तारस्तु यदाग्रेस्यादिष्टं संशोधयेदृणम् ॥
इष्ट कालं यदाग्रेस्यात्प्रस्तारं शोधयेद्धनम् ॥ १ ॥

भाषा—जेकर प्रस्तार आगे हो तो उस में से इष्ट को घटावे वह ऋण चालन होता है, और यदि इष्ट काल प्रस्तार से आगे हो तो इष्ट में से प्रस्तार को ऊन करे वह धन चालन होता है ॥ १ ॥

## ग्रहस्पष्टकरनेकीरीति ।

श्लो०—गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषड्हृतः ।
लब्धमंशादिकंशोध्यं योज्यंस्पष्टोभवेद्ग्रहः ॥ २ ॥

भाषा—गत वा एष्य दिवसादियों करके ग्रहों की गति को गुणना फिर ६० से भाग देना लब्ध जो अंशादि उन को पंचांगस्थ स्पष्ट ग्रहों के अंशादियों में जोड़ना वा घटाना (अर्थात्) एष्ये योज्यं गते शोध्यं । एष्य हो तो जोड़ना गत हो तो घटाना तो ग्रहस्पष्ट होते हैं, परन्तु यह याद रखना कि जो ग्रह वक्री हो उस को विपरीत रीति से स्पष्ट करना ॥ २ ॥

## अब चन्द्रमा स्पष्टकरने के लिए भयातभभोग की रीति लिखते हैं ।

श्लोक-गतर्चनाड्याःखरसेषुशुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषुयुक्ता ।
भयातसंज्ञाभवतीह तस्य निजर्चनाड्याःसहिताभभोगः॥ ३ ॥
चेत्स्वेष्टकालात्प्रागेवऋचं यदिसमाप्यतेतदिष्टकालतोऋक्षनाड्याः
शोध्याःगतर्क्षकम् भभोगापूर्ववत्कार्याततःसाध्यस्तुचन्द्रमा।४॥

भाषा—गत नक्षत्र की घड़ी पलों को ६० में से घटा देना फिर उस को दो जगह रखना एक जगह इष्ट जोड़ना और दूसरी जगह अपने नक्षत्र के घड़ी पल जोड़ने जिस जगह इष्ट जोड़ें वह भयात जिस जगह नक्षत्र जोड़ें वह भभोग होता है, ॥ ३ ॥ और जेकर इष्ट काल से नक्षत्र प्रथम ही समाप्त हो जाय तो इष्ट काल की घट्यादियों में से नक्षत्र की घट्यादि कम करनेसे गतर्क्ष होता है, और सर्वर्क्ष पूर्वोक्त रीति से बनाना ॥४॥

श्लोक—खषट्घ्नंभयातंभभोगोद्धृतंतत् ।
खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नंम् ॥
नवाप्तंशशीभागपूर्वस्तुभुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदा भभोगेनभक्ताः ॥ ५ ॥

भाषा—भयात को ६० से गुणा करे फिर भभोग से भागले, फिर अश्विन्यादि जितने गत नक्षत्र हों उन को ६० से गुणा करके उस में वह लब्धि युक्त करके २ से गुणे और ९ से भागले फिर अंशादि जेकर ३० से अधिक हों तो ३० का भाग लेकर राशी निकाले शेषअंश तोचन्द्रराश्यादि स्पष्ट होता है, ( अब चन्द्रमा की गति बनाने की रीति ) एक नक्षत्र का स्पष्ट अंश १३ कला २० विकला हैं, इस को कला ८०० को साठ से गुणाकर ४८००० विकला पिण्ड होता है इस में नक्षत्र के सर्वभोग्य से भागले जो फल मिले वह चन्द्रमा की स्पष्ट गति होती है ॥ ५ ॥

## अब द्वादशभाव स्पष्टकरने की रीति लिखते हैं ।

### प्रथम पलभा की रीति ॥

श्लो०-मेषादिगे सायन भागसूर्ये दिनार्धजाभा पलभा

भवेत्सा । त्रिस्थाहतास्युर्दशभिर्भुजंगैर्दिग्भिश्च राश्री-निघ्रोद्धृतान्स्यात् ॥ ६ ॥

भाषा-आगे जो रीति लिखेंगे उस रीति से अयनांशा बनाना फिर उसे स्पष्ट सूर्य में जोड़ देने से सायन सूर्य होता है, वह सायन सूर्य जिस दिन मेष राशि में राशि अंश कला विकला से शून्य होय उस दिन मध्याह्नकाल के समय एकसी भूमि पर बारह अंगुलका शंकु खड़ाकरे उसके खड़े करने से जो छाया पड़े वह पलभा होती है उस पलभा को तीन जगह धरे फिर एक जगह १० से दूसरी जगह ८ से तीसरी जगह १० से गुणा करे फिर अन्तको १० से गुणित पलभा में ३ का भाग देने से ३ चर खण्डे होते हैं।

## अथास्योदाहरणम्।

अलावलपुरको पलभा ७। २४। है इसको तीन जगह रक्खा पहिली जगह १० से गुणा तो ७०। २४० हुए दूसरी जगह ।५६।११२ तीसरी जगह ७०। २४० हुए अब पूर्वोक्त रीति से चरखण्डे बनाएतो तीन चरखण्डे ७२।५८।२४ हुए ॥

## अथ स्वोदय बनाने के लिए लंकोदय और रीति लिखते हैं

श्लो०-लंकोदयाविघटिका गजभानिगोङ्क। दस्रास्त्रिपक्ष दहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः । हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैर्मेषादितो-घटत उत्क्रमतस्त्विमेस्युः ॥ ७ ॥

भाषा प्रथम लंका के उदय में मेषादि राशियों का मान कहते हैं मेष का २७८ पल वृषका २९९पल मिथुनको ३२३ पल और इन्होको विपरीत रखने से कर्क से कन्या तक तीन राशियों केलंकोदय होतेहैं, और इस से विपरीत करने से तुला से मीन तक छः राशियों का मान होता है, चक्रमें देखलेना।

| लंकोदय चक्रम् | | |
|---|---|---|
| मे० | २७८ | मी |
| वृ० | २९९ | कु० |
| मि० | ३२३ | म० |
| क० | ३२३ | ध० |
| सि० | २९९ | वृ० |
| क० | २७८ | तु० |

फिर पहिले लंका के तीन राशियों के मानों में अपने देश के चरखण्डे को ऊन करे फिर उस से अगली तीन राशियों में अर्थात् कर्क सिंह कन्या इनके पलात्मक लंकोदय में अपने देशके चरखण्डे कोउलटा युतकरे ऐसे करनेसे अपने देशकेमेषादि छः राशियांका मान होता है इन्होको विपरीत स्थापन करने से तुलादि छः राशियों का मान होता है फिर इसो पूर्वोक्त रीति से स्वोदय बनायेतो यह स्वोदय अलावलपुर के हुए।

| अलावलपुर के स्वोदय | | |
|---|---|---|
| मे० | २०४ | मी० |
| वृ० | २४० | कु० |
| मि० | २८७ | म० |
| क० | ३५२ | ध० |
| सिं | ३५८ | वृ० |
| क० | ३५१ | तु० |

इस पूर्वोक्त रीति से सब कार्य करना और स्वोदय बनाने अयनांश कोलियेनत बनाने कीरीति लिखते हैं ।

श्लोक-पूर्वं नतं स्याद्दिन रात्रि खण्डम् ।
दिवानिशोरिष्टघटी विहीनम् ॥
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धम् ।
द्युरात्रि खण्डं स्वपरं नतं स्यात् ॥ ८ ॥

(भा० टी०) अर्धरात्री से उपरान्त दिनार्ध पर्यंत पूर्वनत और मध्यान्ह से उपरान्त सायंकाल पर्यंत परनतदिवाका । सूर्यास्त से अर्धरात्र पर्यन्त रात्री का पूर्वनत अर्ध-रात्रि से सूरयोदय तक रात्रीपश्चिमनत ॥

मध्यान्ह के भीतर इष्टकाल होतो दिनार्ध में से इष्टकाल घटादेनाशेषदिवा पूर्वनत होगा मध्यान्ह के बाद सूर्यास्त तक इष्टकालहोतो इष्टकाल में से दिनार्ध घटादेना तो दिवा परनत होता है, सूर्यास्त के बाद अर्धरात्र तक इष्टकाल होतो रात्र्यर्ध में से इष्टकाल घटादेना शेष रात्रिपूर्वनत और जेकर अर्धरात्र केबाद सूर्योदय तक इष्टकाल होतोरात्री पश्चिमनत ॥

यहां १५ में से नत ऊन करने से उन्नत होता है ॥

श्लो०-तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांश संगुणात् ॥
स्वोदयात् खाग्निलब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥ ९ ॥
इष्टनाडीपलेभ्यश्च गतगम्यान्निजोदयात् ।
शेषं खत्र्याहतंभक्तमशुद्धेन लवादिकम् ॥ १० ॥
अशुद्ध शुद्धभे हीनं युक्तनुर्व्ययनांशकम् ।
एवंलंकोदयैर्भुक्तभोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥ ११ ॥
पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वद्दशमं भवेत् ।
सखड्भे लग्नखेजाया तुर्यौलग्नोनतर्यतः ॥ १२ ॥

षष्ठांशयुक्ततनुः संधिरग्रेषष्ठांशयोजनात् ।
अयःससन्धयोभावाः षष्ठांशोनैकयुक् सुखात् ॥ १३ ॥
अग्रेत्रयः षडेवन्ते भार्द्धयुक्ताः परेपिषट् ॥
खेटेभावसमेपूर्णं फलंसन्धिसमेतुखम् ॥ १४ ॥

भा०टी०) तात्कालिक सूर्य स्पष्ट में अयनांश जोड़ना जो अंक राशि का है उसके आगे की राशि स्वोदय हुवा शेष अंशादिभुक्त हुए ३० में घटाकर भोग्यांश होते हैं इन भोग्यांशादिकों कोस्वोदय (अर्थात्) जिस राशि का अंशादि था उसी संख्या का स्वदेशीय लग्न खण्ड से तीनों स्थानों में पृथक् २ गुणाकर तीस से भागलेना लब्धिपलादि सूर्य के भुक्तवा भोग्यहोते हैं, ( अर्थात् ) भुक्तांशादिकों से स्वोदय को गुणते हैं तो ३०तीस का लाभ भुक्त संज्ञक होता है और भोग्य से लिये हैं तो भोग्य संज्ञक होताहै, इन पलादिकों को इष्टघटी की पलाओं में घटादेना जोशेष रहे उसमें स्वोदय कोराशि से नीचे वा उपरान्त जितने लग्नखण्ड घटे एक २ करके घटाते जाना, जो लग्न खण्डन घटे उसको अशुद्ध संज्ञा हुई घटाने से जो शेष रहा उसे ३० से गुणदेना अशुद्ध संज्ञक स्वोदय से भाग लेना लाभ अंशादि हुए स्वोदय से लेकर जितने लग्न खण्ड पूर्व घटावे उतनी संख्या को राशी उन लब्ध अंशादिकों के पूर्व में स्थापन करनी यह भोग्य रीति का क्रम है, भुक्तरीति में अशुद्ध घटादेना उपरान्त अयनांश घटा देना तो लग्न स्पष्ट होता है, ।

दशम की रीति वा और भावों के—पूर्वोक्त प्रकार से नतोन्नत तात्कालिक स्पष्ट सायन स्वोदय गुणित भुक्तभोग्यांश ऋण संज्ञक लग्नक्रम से करके भोग्य भुक्तका पलात्मक सूर्य स्पष्ट करके लग्न स्पष्ट में इष्टकालके पलों में घटाया यहांनतको इष्टमानकर उसकी पलाओं में घटाना और लग्न में जो स्वोदय से कार्य कियाथा यहां लंकोदय से करना तोदशम स्पष्ट होताहै ॥ इस प्रकार लग्न दशम स्पष्ट करके लग्न में ६ राशि युक्त करने से ७ भाव होता हैं, और दशम में ६ राशियुत करने से ४ भाव होता है फिर चतुर्थ भाव स्पष्ट में लग्न स्पष्ट घटा देना शेषमें ६ का भागदेना, तो लब्ध षष्ठांश होता है, उसको लग्नमें युत करने से लग्न संधि और संधि में युतकरने से २ द्वितीय भाव स्पष्ट होता है इसी तरह जोड़ते २ चतुर्थ भावतक बनजायेंगे आगे षष्ठांश को एक से ऊनकर फिर चतुर्थ भाव युत करे तो चतुर्थ सन्धि होती है और उसमें एकोन षष्ठांश को युत करने से ५ भाव होताहै उसमेंयुतकरने ५ की संधि स्पष्ट होती है इसमें युत करने से ६ भाव उस में युत करने से ६ भाव की सन्धि फिर आगे ६ राशि जोड़ कर बनावे ।

## ( अब षट्वर्ग की रीति )

श्लोक-ओजेरवीन्दोर्समइन्दुरव्यो गृहार्धप्रमितेयिर्चिहये ।
द्रेकाणपास्त्रेषु नवर्च्छनाथाः ॥ १६ ॥

भाषा—होरा नाम राशि के अर्ध भाग का है सो प्रथम विषम राशि में १५ अंश तक सूर्य का होरा १५ से ३० तक चन्द्रमा का होरा होता है ।

सम राशि में प्रथम १५ अंश तक चन्द्रमा का होरा बाद सूर्य्य का होरा '२॥ स्पष्ट चक्र में देखलेना और द्रेष्काण १० अंश तक अपना २० तक पांचवां बाद ३० तक नवमा ॥ १६ ॥

## सप्तमांश की रीति

विषमेस्वभात् समेसप्तमात् ॥ १७ ॥

भाषा- विषम राशि में अपने ही और समराशि में सप्तम राशि से ॥ १७ ॥

## ॥ सप्तमांश चक्रमिदम् ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | भाग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ८ | १२ | १७ | २१ | २५ | ३० | अं० |
| १७ | ३४ | ५१ | ८ | २५ | ४२ | ०० | क० |
| ८ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ०० | वि० |
| ३४ | ८ | ४२ | १६ | ५० | २४ | ०० | प्र० त्रि |

## अथ नवमांशक विधी

श्लोक-क्रयेणतौलिन्दुमतोनवांशाः ॥ १८ ॥

भाषा- मेष मकर तुल कर्क इन राशियों से नवांशा गिनना ॥ १८ ॥

नवमांशक चक्रमिदम्

| | |
|---|---|
| ३ | २० |
| ६ | ४० |
| १० | ०० |
| १३ | २० |
| १६ | ४० |
| २० | ०० |
| २३ | २० |
| २६ | ४० |
| ३० | ०० |

## अथ द्वादशांश विधी ।

श्लोक- द्वादशांशास्वभात्स्मृताः ॥ १९ ॥

भाषा-द्वादशांश १ राशि के १२ विभाग २ अंश ३० कला होते हैं जितने भाग में स्पष्ट हो स्वराशि से उतने संख्यक राशि का स्वामी द्वादशांश होता है ॥ ११ ॥

## अथ द्वादशांश चक्रम् ।

| मे० | वृ० | मि० | क० | सिं० | क० | तु० | वृ० | ध० | म० | कु० | मी० | रा० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ५ | ७ | १० | १२ | १५ | १७ | २० | २२ | २५ | २७ | ३० | अं० |
| ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | क० |

## अब त्रिंशांश की रीति लिखते हैं ।

श्लोक-कुजरविजगुरुज्ञशुक्रभागाः ।
पवनसमीरणकौर्प्यजूकलेयाः ॥
अयुजितुयुजिभेविपर्ययस्थाः ।
शशिभवनालिझषान्तमृक्षसन्धिः ॥ २० ॥

( टीका ) त्रिंशांशक में राशि के ३० अंश के भाग इस प्रकार होते है । कि विषम १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ में पहिले ५ अंश तक भौम का त्रिंशांश ५ से १० तक शनि का १० से १८ अंश तक गुरु का १८ से २५ तक बुध का २५ से ३० अंश तक शुक्र का ॥ २० ॥

## त्रिंशांश चक्रमिदम् ।

| मं० | श० | गु० | बु० | शु० | शु० | बु० | गु० | श० | मं० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ७ | ८ | ५ | ५ | ५ | ५ | ८ | ७ | ५ |
| ५ | १२ | २० | २५ | ३० | ५ | १० | १८ | २५ | ३० |

शशिभवन ( कर्क ) वृश्चिक मीन इन राशियों के अन्त में ऋक्ष सन्धि कहते है, ॥

## अथ विंशोत्तरी दशारीति ।

श्लोक-जन्मनोनजनुर्भमकहृत क्रमशोर्केन्दुकुजागुरुरियः ।
शनिचन्द्रजकेतुभार्गवाः परिशेषातुदशाधिपस्तथा ॥ २१ ॥

भाषा-जन्म नक्षत्र में से २ अंक घटावे ९ से भागले शेष बचे सो आ-चं-कु-रा-जी-श-बु-के-शु इस क्रम से दशा जाने। भुक दशा निकालने की रीति—भयात को दशा के वर्षों से गुणे और भभोग से भाग ले तो लब्धि वर्ष और शेष को १२ से गुणे फिर भयात से भाग ले तो लब्धि मास शेष को ३० से गुणे भयात से भाग ले लब्धि दिन शेष को ६० से गुणे भयात से भाग ले तो लब्धी घटी और शेष को ६० गुणा कर उसी तरह से पलादि निकाल लेने ॥

## अब योगिनी दशा की रीति लिखते हैं ॥

श्लो०-जन्मर्क्षेत्रिभिसंयोज्यं वसुभिर्भागमाहरेत् ॥ २२ ॥

टीका—जन्म नक्षत्र की संख्या के अंकों में ३ और जोड़ने, ८ से भाग लेना शेष मंगलादि दशा जानना इस दशा का भुक पूर्वोक्त रीति से निकालना ॥ २२ ॥

## अब विंशोत्तरी के वर्षों को कहते हैं ॥

| सू० | चं० | कु० | रा० | जी० | श० | बु० | के० | शु० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६- | १०- | ७- | १८- | १६- | १९- | १७- | ७- | २० |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | |

अथ योगिनीदशा वर्ष ।

| योगिनी | वर्ष |
|---|---|
| मंगला | १ वर्ष |
| पिंगला | २ ,, |
| धान्या | ३ ,, |
| भ्रामरी | ४ ,, |
| भद्रा | ५ ,, |
| उल्का | ६ ,, |
| सिद्धा | ७ ,, |
| संकटा | ८ ,, |

## अयनांश विधि ।

वेदाब्धयब्धयूनखरसहृतः
शकोयनांशाः ॥ २३ ॥

( भा०टी० ) वर्तमान शक में से ४४४ घटावे ६० का भागले तो अयनांश होता है ॥ २३ ॥

लाहौरीरामेण रचिते पुस्तक ज्योतिषदिवाकरे ।
प्रथमाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थः प्रकाशकः ॥ २३ ॥

※ ओम् सरस्वत्यै नमः ※

# अथ भाव फलाध्याय प्रारम्भः

अथ भृगुसंहितामतेन द्वादशलग्नानामायुप्रमाण लिख्यते ॥

तन्मध्ये मेषलग्नस्य फलम्

॥ श्री भृगुरुवाच ॥

मेष लग्ने यदा जन्म तदीशो बलसंयुतः ॥
शरास्त्री तेज पुंजश्च सौभाग्यो मैथुनप्रियः ॥ १ ॥
धर्मात्मा क्रोध युक्तश्च नृपैः पूज्यो सदा नरः ।
प्रथमेचाष्टमे वर्षे द्वितीयेपंचविंशके ॥ २ ॥
युक्त्वाणमितेत्तस्य महत्कष्टं भविष्यति ।
पञ्चसप्तमितेचायुः कार्तिकस्यसितेदले ॥ ३ ॥
भौमवारे यमर्क्षेच शृणुशुक्रयथामति ।
द्वितीयातिथिमध्यान्हे ऊर्द्धस्वासे मृतिंगतः ॥ ४ ॥

इति मेष लग्नफलम् ॥

अथ वृष लग्नफलम् ।

लग्नेवृषे यदिजन्मजातं मिष्टान्न भोगी परदारगामी ।
गांधर्वविद्या निपुणो नरश्च तीर्थान्वितो धर्मयुतोऽपि किंचित्॥५॥
सप्तविंशमितेवर्षे वाणवेदस्तथापुनः ।
पंच पंच महत्कष्टं तुलादानादिनासुखम् ॥ ६ ॥
शुभग्रहेयुतेलग्ने पंचाशीति सजीवति ।
मार्गशीर्षेसितेपक्षे दशम्यां भृगुवासरे ।
रोहिणीनाम नक्षत्रे अतिसारे मृतिंगतः ॥ ७ ॥

इति वृष लग्नफलम् ॥

## मिथुन लग्न फलम् ।

युग्मे लग्ने बुद्धिमान् देह पुष्टः ।
अल्याश्रस्यात्पूजने नित्य बुत्तिः ॥
द्रव्याधीशो कामिनीवल्लभश्च ।
युग्मेजातो गंधमाल्यप्रियं च ॥ ८ ॥
ऊनविंशे पंचविंशे वा पंचत्रिंशके त्रिवेदके ।
जायते महतीपीडा यत्नश्च विधिवत्कृतम् ॥ ९ ॥
अष्टमाधिपतिर्लाभे शुभग्रह निरीक्षते ।
युग्माशीतिप्रवक्तव्या आयुस्तस्य न संशयः ॥ १० ॥
पौषेमासे सितपक्षे अष्टम्यां बुधवासरे ।
आर्द्राभे प्रथमेचर्षे ज्वरान्मृत्युर्भविष्यति ॥ ११ ॥
इति मिथुन लग्नफलम् ॥

## अथ कर्क लग्नफलम् ।

कर्कलग्नोदयेजात सुशीलो गुण संयुतः ।
पुत्रवान्गुणसम्पन्नो जितक्रोध जितेन्द्रियः ॥ १२ ॥
एकादशमितेवर्षे एकविंशे मुनिद्वयं ।
पंचविंशे महत्कष्टं दानं देयं यथोक्तकम् ॥ १३ ॥
शुभग्रहयुते लग्ने शतमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥
माघे कृष्णचतुर्दश्यां चन्द्रवारे समागते ।
पुष्यभे निधनं ज्ञेयं स्वजन्माद्दक्षिणेदिशि ॥ १५ ॥
इति कर्क लग्नफलम् ॥

## अथ सिंह लग्नफलम् ।

सिंहलग्ने महाभागी धनवान् शीलसंयुतः ।
गुरुदेवार्चको नित्यं स्वल्पाहारी नरो भवेत् ॥१६॥
गंधमाल्यप्रियो नित्यं स्ववाक्य प्रतिपालकः ।
चतुर्थेदशमेवर्षे पंचविंशे पंचत्रिंशके ॥ १७ ॥

एकवेदमिते चैव ह्यल्पश्चेन्मृत्युदायकः ।
शुभग्रह निरीक्षित षष्टिवर्षे सजीवति ॥ १८ ॥
फाल्गुने धवलेपक्षे एकादश्यां रवौदिने ।
मघायां निधनं नूनं मध्यान्हे च ज्वरान्मृति ॥ १९ ॥
इति सिंह लग्नफलम् ॥

## अथ कन्या लग्नफलम् ।

कन्यालग्नेऽपि जाते प्रभवति सततं धर्मयुक्तो यशस्वी ।
सौदर्य सौख्ययुक्तो भवति गुणनिधी पुत्रवान् क्रोधयुक्तः ॥
स्वल्पाहारी हि नित्यं महति सुखयुतो जारयोगाधिकारी ।
सत्यंवाणीप्रवक्ताभवति नरपति राज्यमान्योधनाढ्यः ॥२०॥
प्रथमे वेदवर्षे च महत्कष्टं प्रजायते ।
त्रयोदशे जलाद्भीति षोडशे शस्त्रतो भयम् ॥२१॥
बाणवेदमिते यावत् पंचाशत महद्भयम् ।
तस्य यत्नविशेषेण कर्त्तव्यंविधिवन्नरः ॥ २२ ॥
शुभग्रहयुतो लग्ने पंचाशीति स जीवति ।
चैत्रशुक्ले अष्टम्यां हस्तभे मरणं ध्रुवम् ॥ २३ ॥
इति कन्या लग्नफलम् ॥

## अथ तुला लग्नफयम् ।

तुलालग्नोदयेजन्म क्रोधयुक्तो नरो भवेत् ।
देहकष्टं स्वल्पक्षुधा गंधमाल्यप्रियो भवेत् ॥२४॥
परदाररतो नित्यं नृपमान्यो विचक्षणः ।
आद्यवर्षे महत्कष्टं तृतीये अग्निजं भयम् ॥२५॥
चतुर्थेपंचमेचाब्दे रुधिराकोपजाव्यथा ।
षोडशे पतनं वृक्षात् सप्तत्रिंशन्मितेज्वरः ॥२६॥
शशि वेदे चैकशरः महत्कष्टेन कष्टितः ।
यदिजीवस्यसौबाक्षो शतमायुः प्रजायते ॥२७॥

वैशाखे शुक्लपंचम्यां भौमवारे समागते ।
मैत्रभेअर्द्धरात्रेषु विशूच्यात्मरणं व्रजेत् । २८॥
इति तुला लग्नफलम् ॥

## अथ वृश्चिक लग्नफलम् ।

अलिलग्ने समद्भूतः नृपैपूज्योधनाधिकः ।
पुत्रशोक समायुक्तो निपुणो जारकर्मणि ॥२६॥
गंधमाल्यप्रियो नित्यं निस्यं चातिथि पूजकः ।
भगवद्भक्तियुक्तश्च तीर्थयात्रापरायणः ॥ ३० ॥
यतस्ततः संभ्रमणं कारयेन्नात्र संशया ।
प्रथमे चाष्टमे पीड़ा जलाद्गीति द्विविंशके ॥३१॥
तुरगाद्भीति भवेनूनं लाभश्चैवयथोक्तकम् ।
चतुरासीति समाब्रूयात् ज्येष्ठेमासि सितदले ।
दशम्यां निधनं नूनं शूलरोगेण वाज्वरात् ॥३२॥
इति वृश्चिक लग्नफलम् ॥

## अथ धन लग्नफलम् ।

धनलग्नोदयेजातः धनवान् पुत्रवान् सुधी ।
चपलो स्वल्पाहारी च गुरुदेवार्चनेरतिः ॥
सत्यवाक् प्रियवादी च देहे पुष्ठप्रजायते ।
प्रथमे पंचमे रुद्रे गतेऽब्दे दुःखसम्भवः ॥ ३४ ॥
पंचविंशतिमेकष्टं अष्टत्रिंशेतथापुनः ।
द्विवेद महतीशंकातत्रयत्नमुदीरतः ॥ ३५ ॥
शुभग्रहनिरीक्षंते शतमायुर्विनिर्दिशेत् ।
आषाढ़े कृष्ण अष्टम्यां गुरुवारे समागते ॥३६॥
मूलभे प्रथमे यामे शूलरोगेण मृत्युयुक् ।
तीर्थेवै मरणं तस्य जायते नात्रसंशयः ॥ ३७ ॥
इति धन लग्नफलम् ॥

## अथ मकर लग्नफलम् ।

मकरलग्ने महामानी गुणवान् परदारगः ।
राज्यपूज्यो धनाढ्यश्च कामिनी वसनानुगः ॥ ३८ ॥
आद्यवर्षे ज्वराद्बाधा द्वादशेऽब्देजलाद्भयम् ।
विंशे च पतनं वृक्षात् तुरगतो भयमाप्नुयात ॥३९॥
एकत्रिंशन्मितेवर्षे सर्पतो भयमाप्नुयात् ।
द्विवेद महती शंकाद्विपंचाशतमब्दके ॥ ४० ॥
शुभग्रह निरीक्षेत नवत्यब्दान् स जीवति ।
आवर्षे धवलेपक्षे भूतानां शनिवासरे ॥
श्रवणभे च मध्यान्हे ज्वरान्मृत्युर्भविष्यति ॥४१॥

इति मकर लग्नफलम् ॥

## अथ कुम्भ लग्नफलम् ।

कुम्भलग्ने समुत्पन्ना बहुभाषारतिर्भवेत् ।
पुत्रवान् धनवान् भोगीक्रोधी शूरो विचक्षणः ॥४२॥
आद्यवर्षे महाकष्टं सप्तमे ज्वरजा व्यथा ।
त्रयोदशे जलाद्भीति खाग्निवर्षे महद्भयम् ॥४३॥
शुभग्रहे चितं लग्नं पंचाशीति सजीवति ।
भाद्रे शुक्ल सप्तम्यांशनिवारे जलर्क्षभे ॥ ४४ ॥
दारुणं शीतरोगेण व्रजेदायुप्रपूर्णता ॥ ४५ ॥

इति कुम्भ लग्नफलम् ॥

## अथ मीन लग्नफलम् ।

मीनलग्नोदयेजन्म गुरुदेवार्चनेरतिः ।
तेजस्वी राज्यमान्यश्च स्ववंशे नायको भवेत् ॥४६॥
भार्यावचोऽनुगामी च भगवद्भक्तिसंयुतः ।
प्रथमे पंचमे वर्षे गुल्मरोगो विशूचिका ॥

जायते महती पीडा तत्र यत्नसुदीरितः ।
अ·ादशेप्रमेहं च त्रयोविंशन्मितेज्वरम् ॥ ४८ ॥
त्रयस्त्रिंशन्मितेवर्षे जाग्राकष्टविनिर्दिशेत् ॥४६॥
शुभग्रहेक्षितं लग्नं नवत्यब्दाब् स जीवति ।
आश्विने कृष्णपक्षे द्वितीयायांगुरुवासरे ।
मैत्रभे मरणं तस्य ज्वरान्मृत्युर्भविष्यति ॥५०॥
इति मीन लग्नफलम् ॥

इति द्वादश लग्नानामायुः प्रमाणः ॥

इन श्लोकों का अर्थ सुगम है इस लिये भाषा नहीं लिखी ॥

## अब पुत्र जन्म के योगांतर लिखते हैं ॥

विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः सौरोऽपि पुंजन्मकरोविलग्नात् ।
प्रोक्तग्रहाणामबलौक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतो पुरुषोंगना वा॥५१॥

**भाषा**—शनिश्चर लग्न छोड़ कर विषम भाव ३।५।७।९।११ में हो तो पुरुष जन्म कहना, सम भाव में कन्या जन्म जो पु० क० योग कहे है इनमें कोई योग कन्या जन्म का कोई पुरुष जन्म का जब पड़े तो ग्रहों का बल देखना जो ग्रह अधिक बली हो उस का फल कहना ॥ ५१ ॥

### अथ नपुंसक योगः ॥

अन्योन्यं यदिपश्यतः शशिरवियद्यार्किसौम्यावपि ।
वक्रोवा समगं दिनेशमसमे चन्द्रोदयाचेत् स्थितौ ॥
युग्मौजर्क्षगतावपीन्दुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ ।
पुंभागे सितलग्नशीतकिरणाःषट्क्लीबयोगास्मृताः ॥ ५२ ॥

**भाषाः**—सम राशि में चन्द्रमा बैठा विषम राशिस्थ सूर्यको पूर्ण देखै सूर्य भी चन्द्रमा को देखे पहिला यह योग है शनि समराशि में, बुध विषम में दोनों परस्पर देखें तो दूसरा योग। और भौम विषम में सूर्य सम में हो और इन दोनों की परस्पर दृष्टि हो तो तीसरा योग होता है। लग्न चन्द्रमा विषम राशि में हो और समराशि में बै १२

मंगल चन्द्रमा दोनों को देखै यह चौथा योग है। समराशि में चन्द्रमा विषम में बुध हो और उन पर भौम की दृष्टि हो तो यह पांचवां योग। शुक्र लग्न चन्द्रमा पुंभाग में विषम नवांशों में हो तो यह छटा योग है। यह योग प्रश्न वा आधान पड़े तो नपुंसक जन्मेगा, जन्मपत्री में भी ऐसे योग हों तो वह हतवीर्य वा हिजड़ा होगा ॥ ५३ ॥

युग्मेचन्द्रसितौ तथौजभवने स्युर्ज्ञारिजीवोदया ।
लग्नेन्दू नृनिरीक्षितौच समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ॥
कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगताद्व्यंशांशकान्पश्यति ।
स्वांशेज्ञे त्रितयंज्ञगांशकवशाद्युग्मंच मिश्रैः समम् ॥ ५४ ॥

**भाषा**—चन्द्रमा शुक्र सम राशि में हों और बुध भौम बृहस्पति लग्न यह सब विषम राशियों में हों तो मिथुन एक कन्या एक पुत्र जन्म कहना और लग्न चन्द्रमा सम राशि में हों तो पुरुष ग्रह देखैं तो भी वही फल कहना अथवा बु० मं० बृ० लग्न सम राशि और बलवान् हो तो भी वही फल और पूर्वोक्त सभी ग्रह बु० मं० बृ० लग्न द्विस्वभाव राशि के अंशकों में हों और बुध की दृष्टि हो तो गर्भ से तीन बालक उत्पन्न होंगे इस में भी बुध विशेष है; क्योंकि बुध जिस नवांश में है; उस नवांश राशि के रूप का बालक होगा जैसे मेष से चौपाया वृश्चिक से सर्प बिच्छू आदि। जो बुध मिथुनांशक में बैठ कर पूर्वोक्त योग कर्त्ता ग्रहों को देखे तो गर्भ में २ पुत्र एक कन्या है और द्विस्वभावांशक में बुध बैठ कर पूर्वोक्त ग्रहों को देखै तो २ कन्या १ पुत्र है। जो बुध मिथुननवांशक में बेठ कर मिथुन धन नवांश वाले लग्न गत ग्रहों को देखै तो ३ पुत्र गर्भ में हैं। जो बुध कन्यांश में बैठकर कन्यांश वाले लग्न गत पूर्वोक्त ग्रहों को देखै तो ३ कन्या गर्भ में कहना चाहिये ॥ ५५ ॥

धनुर्धरस्यान्त्यगतेविलग्नेग्रहैस्तदंशोपगतैर्बलिष्ठैः ।
ज्ञेनार्किणा वीर्य युतेन दृष्टे संतिप्रभूताऽपिकोशसंस्था ॥५६॥

**भाषा**:—धन लग्न धन नवांशज हो और पूर्वोक्त योग करने वाले १। १२ अंशकों में हों और बलवान् बुध शनि लग्न को देखैं तो प्रसूता ( गर्भ में बहुत बच्चे ) ३ उपरांत १० पर्यंत हैं, कहना यह गर्भ जिस मास का पति निपीड़ित हो उसी मास में पतन होगा बहुत होने से पूरा प्रसव नहीं होता पतन होजाता है ॥ ५७ ॥

कललघनांकुरास्थिचर्मांगज चेतनतः ।
सितकुजजीवसूर्यचन्द्रार्किबुधाः परतः ॥
उदयपचन्द्रसूर्यनाथाः क्रमशोगदिता ।
भवन्ति शुभाशुभं च मासाधि पतेस्सदृशम् ॥५८॥

भाषाः– गर्भाधान जब होगया तो प्रथम एक २ मास पर्यंत कलल रुधिर और शुक्र वीर्य मिलते हैं, इस का स्वामी शुक्र होता है । दूसरे मास में घन वह रुधिर शुक्र जमकर पिण्ड सा बनता है इस का स्वामी भौम है । तीसरे मास उस पिण्ड पर अंकुर मुख हाथ पैर निकलते हैं, इसका स्वामी गुरु है एवं चौथ में हड्डी पैदा होती है इसका सूर्य स्वामी है, पांचवें चर्म लोथ, चन्द्रमा स्वामी । छठे में रोम स्वामी शनि है सातवें में चैतन्यता हाथ पैर हिलाना स्वामी बुध है । आठवें नवें में अशन ( माँ की खाई हुई वस्तु ) का असर उस पर भी होता है। मासाधिपति लग्नेश है । नवें में उद्वेग ( चलने के न्याई ) हाथ पैर हिलाना इसका स्वामी चन्द्रमा है । दशवें प्रसव जन्म स्वामी सूर्य है । मासाधिपति ग्रह पीडित हो तो उस मास में पीड़ा देता है, निर्मल ( बलवान् ) तो पुष्टि करता है ॥ ५८ ॥

## सूतिकागार के लक्षण ।

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति ।
विदेशस्थस्यचरभे मध्यान्द्रष्टे दिवाकरे ॥ ५९ ॥

भाषाः—जो जन्म लग्न को चन्द्रमा नहीं देखे तो उसका पिता उस समय परोक्ष होगा । इसमें भी यह विशेष है, कि लग्नको चन्द्रमा न देखे और सूर्य चरराशि में और ८ । ९ । ११ । १२ स्थान में हो तो पिता विदेश में था, जो सूर्य स्थिर राशि में उन्हीं स्थानों में से किसी में होवे चन्द्रमा लग्न को देखे तो उसी देश में था परन्तु उस समय परोक्ष था द्विस्वभाव में हो तो मार्ग चलता था कहना ॥ ५९ ॥

उदयस्थेपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते ।
स्थितेवान्तः क्षपानाथे शशांक सुतशुक्रयोः ॥ ६० ॥

भाषा.—लग्न में शनि हो तो पिता परोक्ष कहना और यदि भौम सप्तम होवे तो भी परोक्ष और चन्द्रमा बुध शुक्र के राशियों के वा अंशों के मध्य होतो भी परोक्ष ६०

शशांके पापलग्ने वा वृश्चिके शत्रिभागगे ।
शुभैः स्वायस्थितैर्जातः सर्पस्तद्वेष्टितोऽपिवा ॥ ६१ ॥

भाषाः—चन्द्रमा भौम के द्रेष्काण में और शुभ ग्रह २ । ११ स्थानमें हो तो वह बालक सर्प रूप होगा और लग्न पापग्रह की राशि का हो और चन्द्रमा भौम द्रेष्काण में हो २ । ११ स्थान में पापग्रह हो तो बालक सर्प वा सर्प वेष्टित होगा ॥ ६१ ॥

चतुष्पद गते भानौ शेषैर्वीर्यसमन्वितैः ।
द्वितनुस्थैश्चयमलौ भवतः कोशवेष्टितौ ॥ ६२ ॥

भाषाः—सूर्य चतुष्पद राशि १ । २ वा धनपरार्द्ध मकर के पूर्वार्द्ध में होवें और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में बलवान् हों तो यमल दो बालक एक जरायु से वेष्ठित होंगे ॥ ६२ ॥

न लग्नमिन्दुञ्च गुरुर्निरीक्षते-
नवा शशांकं रविणा समागतम् ।
सपापकोर्केण युतोऽथवा शशी-
परेण जातं प्रवदंति निश्चयात् ॥ ६३ ॥

भाषाः—लग्न और चन्द्रमा को बृहस्पति न देखे तो वह बालक जार पुत्र होगा अथवा सूर्य चन्द्रमा इकट्ठे हों और गुरु न देखे तो भी पूर्वोक्त फल है । अथवा सूर्य चन्द्रमा एक राशि में शनि भौम से युक्त हों तो भी वही फल है ॥ ६२ ॥

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्यूननवात्मजस्थितौ ।
बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वेवा राशिवशादथोपथि ॥६४॥

भाषाः—पापग्रह शनि वा मंगल क्रूरराशि २ । ५ । ८ । १० । ११ में हों और सूर्य से ७ वा ८ वा ५ भाव में हो तो बालक का पिता बंधन में है कहना इस में भी सूर्य चर राशि में हो तो परदेश बंधा है स्थिर राशि में स्वदेश में द्विस्वभाव में मार्ग में बंधा होगा ॥ ६४ ॥

पूर्णे शशिनिस्वराशिगेसौम्ये लग्नगते शुभे ।
सुखेलग्नेजलजेस्तगे पिवाचन्द्रे पोतगते प्रसूयते ॥६५॥

भाषाः—पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशि में और बुध लग्न में गुरु चतुर्थ भाव में हो तो वह प्रसव नौका वा पुल के ऊपर हुआ है अथवा लग्न में जल चर राशि हो और चन्द्रमा सप्तम हो तो भी वही फल होगा ॥ ६५ ॥

आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णः समवेक्षतेऽथवा ।
मेषूरणबन्धु लग्नगः स्यात्सूति सलिलेन संशयः ॥ ६६ ॥

भाषाः—यदि लग्न में जलचर राशि हो चन्द्रमा भी जलचर राशिका हो तो प्रसव जल के ऊपर हुआ कहना अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्न को पूर्ण देखे तो भी वही फल होगा

अथवा जलचर राशि का चन्द्रमा दशम वा चतुर्थ वा लग्न में हो तौ भी यही फल कहना ॥ ६६ ॥

उदयो ड्रुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्यामस्यापि निरीक्षिते यमे ।
अलि कर्कियुते विलग्नगे सौरे शीतकरे क्षिते वटे ॥ ६७ ॥

भाषाः—शनि लग्न व चन्द्रमा से बारहवां हो और उस को पापग्रह देखे तो कारागार में जन्म हुआ होगा और शनि वृश्चिक राशि का लग्न में हो चन्द्रमा भी देखे तो खात खाई में जन्म कहना ॥ ६७ ॥

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्येसितेन्दु गुरुरग्निहोत्रे ।
रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालयेज्ञः प्रसवं करोति ॥६८॥

भाषाः—मनुष्य राशि लग्न मे हो शनि भी लग्न का हो और भौम की दृष्टि शनि पर हो तो प्रसव श्मशान में हुआ होगा और नृराशि लग्न गत शनि को भृगु चन्द्रमा देखे तो सुन्दर रमणीय घर में जन्म हुआ ऐसे हो शनि को गुरु देखे तो अग्नि-होत्र वा हवनशाला वा रसोई के स्थान में जहां नित्य अग्नि रहती है वहां जन्म कहना और ऐसे हो शनि को सूर्य देखै तो राजगृह वा देवालय वा गोशाला में जन्म होगा और उसी शनि को बुध देखे तो शिल्पालय में जन्म हुआ ॥ ६८ ॥

राश्यंश समान गोचरे मार्गे जन्मचरे स्थिरे गृहे ।
स्वर्क्षांशगतेस्वमन्दिरे बलयोगात् फलमंशकर्क्षयोः ॥ ६९ ॥

भाषाः—लग्न राशि नवांशक जैसा हो वैसी हो भूमि में जन्म चरराशि नवांशक में मार्ग में स्थिर से घर में जन्म जो लग्न वर्गोत्तम हो तो अपने घर में जन्म कहना लग्न नवांशकमें से बलवानका फल होता है पूर्व योगोंके अभावमें यह योग देखना ॥६९॥

आरार्कजयोस्त्रिकोणगे चन्द्रेस्ते च विसृज्यतेम्बया ।
दृष्टेमरराजमन्त्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च सस्मृतः ॥ ७० ॥

भाषाः—भौम सूर्य एक राशि के हों और इनसे नवम वा पञ्चम वा सप्तम भाव में चन्द्रमा हो तो वह बालक माता से अलग हो जाता है और ऐसे योग मे चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि भी हो तो बालक माता का त्यागा हुआ भी दीर्घायु व सुखी होता है ॥ ७० ॥

पापेक्षितेतुहिनगावुधयेकुजेस्ते ।
त्यक्तो विनश्यति कुजोर्कजयोस्तथेन्दौ ॥

सौम्येपि पश्यति तथाविधहस्तमेति ।
सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनाशः ॥ ७१ ॥

भाषा—लग्न में चन्द्रमा हों पापग्रह उसे देखें और सप्तम भौम हो तो माता का त्यागा हुआ वह बालक मर जायगा और लग्न में चन्द्रमा हों शुभग्रह भी देखें शनि भौम एकादशस्थ हों, तो मातृत्यक्त बालक जिस वर्ण के शुभग्रह की दृष्टि चन्द्रमा पर है उसी वर्ण ब्राह्मणादि के हाथ लगेगा और बचेगा जो चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि और पाप ग्रह की भी दृष्टि हो और पूर्वोक्त योग भी पूरा हो तो बालक किसी के हाथ लग कर मर जायगा ॥ ७१ ॥

स्नेहः शशांकादुदयाच्चवर्तिर्दीपोर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यः ।
द्वारं च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥७२॥

भाषा—चन्द्रमा से तेल जैसे राशि के प्रारंभ में जन्म होगा तो दीये में तेल भरा था मध्य राशि में हो तो आधा था अन्त्य राशि में हो तो तेल नहीं था ऐसे लग्न आरम्भ हो तो बत्ती दीप मे पूर्ण थी. मध्य लग्न में आधा दग्ध, अन्त्य लग्न में बत्ती थोड़ी रही थी, सूर्य चरराशि में हो तो दीवा एक जगह से दूसरी जगह धरा गया स्थिर में स्थिर द्विस्वभाव में चालित कहना सूर्य राशि जिस दिशा को है, उस दिशा में दीवा होगा वा सूर्य ८ प्रहर आठ दिशों में घूमता है, उस समय जहां हो वहां ही दीवा कहना इन योगों में पापयुक्त में तेलादि मलिन शुभ युक्त से निर्मल और राशियों के रंग के समान रंग कहना केन्द्र में ग्रह हो उसकी जो दिशा है, उस ओर को सूतिका घर का द्वार होगा बहुत ग्रह केन्द्र में हों तो बलवान की दिशा और केन्द्रों में कोई भी न हो तो लग्न राशि की दिशा अथवा लग्न द्वादशांश की दिशा में द्वार कहना मुख्य बलवान् ग्रह फल देता है ॥ ७२ ॥

इति पुत्र जन्म योगान्तर ॥

## अथायुःप्रकरण प्रारंभः ॥

मययवनमणित्थशक्तिपूर्वैर्दिवसकरादिषुवत्सराः प्रदिष्टाः ।
नवतिथिविषयाश्विभूतरुद्रैर्दशसहितादशभिः स्वतुंगभेषु ॥७३॥

भाषाः—दशा अंशायु पिण्डायु निसर्गायु तीन प्रकार की कहते हैं । यहां आचार्य ने पहिले और आचार्यों के मत २ प्रकार के है, आपने बहुत ग्रन्थों से प्रमाण ज्ञान

कर अंशायुस्थापन करी है, वह पीछे लिखी जायगी परन्तु उसमें अनुपातकी रीति प्रकट नहीं यह। पूर्व मतमें प्रकट है अतएव पहिले वही मत जो मय नाम आचार्य, यवनाचार्य, मणित्थाचार्य, शक्ति पराशरादियों का कहा लिखाजाता है, दशा के लिये सूर्यादिग्रहों के वर्ष सूर्य के १ वर्ष दशा सहित ११ चन्द्रमा १५ दशा सहित २५ पक्ष दशा सहित सब के है भौम १५ बु १२ गुरु १५ शुक्र २१ यह वर्ष प्रमाण हैं ॥ ७३ ॥

नीचेतोर्द्धं ह्रसति हितलश्चान्तरस्थेऽनुपातो ।
होरास्वंश प्रतिममपरे राशितुल्यं वदंति ॥
हित्वावक्रं रिपुगृहगते हीयते स्वत्रिभागः ।
सूर्याच्छिन्नद्युतिषु च दलं प्रोह्यशुक्रार्कपुत्रौ ॥ ७४ ॥

भाषाः—जो ग्रह परमोच्चहो वह पूरे वर्ष पाता है, और परम नीच में आधा पाता है, जैसे सूर्य मेष के १० अंश पर होगा तो ११ वर्ष पूरे दशा में पावेगा जो परम नीच तुला के १० अंश पर हो तो आधा १ वर्ष ६ मास पावेगा इनके बीच हो तो अनुपात त्रैराशिक की रीतिसे करना उच्च के समीप तत्काल ग्रह स्पष्ट होतो उच्च राश्यादि के साथ नीच के समीप हो तो नीच राश्यादि के साथ नीच समीप हो तो नीच राश्यादि के साथ त्रैराशिक की रीति से अनुपात करना ॥ ७४ ॥ इस रीति से आयु निकालनी

( अन्य रीति )

कर्कोदयेज्ययुतौ बुधसितौकेन्द्रेत्र्यरीशेतरैः ।
आयुर्विद्धयमितंहि योगजनितान्यत्रोच्यतेथोन्मितम् ॥ ७५ ॥

भाषाः—कर्क लग्न में जन्म होय उस में चन्द्र गुरु युक्त हो बुध शुक्र केन्द्र में हों और इतर ग्रह ( रवि भौम शनि ) ३ । ६ । ११ स्थान में हों इस प्रकार ७ ग्रहों का योग हो तो अमित आयु जानना ॥ ७५ ॥

## अथ सत्याचार्यमतेनायुःसाध्याः ॥

सत्योक्ते ग्रहमिष्टं लिप्तीकृत्याऽशतद्वयेनाप्तम् ।
मण्डलभागविशुद्धेऽब्दाःस्युःशेषात्तुमासाद्याः ॥७६॥

भाषाः—सत्याचार्य के मत से आयुविधान ऐसा है कि तत्कालिक ग्रह लिप्तात्मक पिण्ड करना २०० से भाग लेकर जो मिले वह वर्ष जगह स्थापन करना ११ से अधिक हों तो १२ से तष्ट करदेना जो रहा उसको १२ से गुण कर २०० के भाग देने

मास मिलेंगे शेष को ३० से गुणा कर २०० से भाग देने से दिन मिलेंगे ऐसे ही शेष अंक को ६० से गुणा कर २०० का भाग देने से घटी शेष पल मिलते है ।

**उदाहरण**—स्पष्ट तात्कालिक राश्यादि १ । ८।४५ इसका लिप्ता पिंड २३ २५ इस में २०० का भाग लेने से लब्धि ११ ये वर्ष हुए १२ से अधिक होते तो १२ से तष्ट करना था यहां कम है शेष अंक १२५ मास १२ से गुन दिया १५०० हुए इस में २०० से भाग लेकर लब्धि ७ मास हुए शेष १०० इस को ३० से गुन ३००० हुए फिर दो सौ से भाग लियां १५ दिन मिलें शेष कुछ न रहा घटी पल ० । ० हुए वर्ष ११ मास ७ दिन १५ घटी पल समस्त फल हुए अब इन ११ । ७ । १५ । ० । ० को पहिले १२ से गुण दिया १३२ । ८४ । १८० हुए इन को फिर ९ से गुण दिया ११८८ - ७५६ । १६ । २० अब लिप्ता १६२० में ६० से भाग लिया बाकी घटी रही यहां विकला के स्थान में ० है अंक होता तो उसे भी १२ और ९ से गुण कर ६० से ऊपर चढ़ना था अब घटी स्थान ० से लब्धि २७ ऊपर अंक ७५६ में जोड़ दिया तो ७८३ हुए इस में ३० से भाग लेकर शेष ३ दिन हुए लब्धि २६ को ऊपर का अंक ११८८ में जोड़ दिया १२ १४ इस में भाग १२ से लेकर शेष २ मास रहे लब्धि ११ में से भाग लेना था नहीं जाने ११ ही रहे यह वर्ष हुए एवं दशा वर्ष ११ मा २ दिन ३ घ० प० हुए इतना संस्कार करके स्वतुङ्गवक्रत्यादि लोकोक्त संस्कार करना १२ वर्ष दिन से पर होने का आश्चर्य नहीं है, यह सत्याचार्य मत यवनेश्वर आस्फुजित् वादरायण वराहमिहिरादि बहुतों का सम्मत होने से यही ठीक है ॥ ७६ ।

**स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणं द्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागगैः ।**
**इयान्विशेषस्तुभदत्तभाषितेसमानमन्यत्प्रथमेप्युदीरितम् ॥७७॥**

**भाषाः**—सत्याचार्योक्त दशा में संस्कार पूर्व लिखित ही है इतना विशेष है, कि जो ग्रह अपने उच्च में हैं वा वक्रगति है उनके दशा वर्षादि जो मिले वहां त्रिगुण करना चाहिये और जो ग्रह वर्गोत्तमांश वा अपने नवांश वा चरराशि वा स्वद्रेष्काण में हो वह द्विगुण करना और सब कर्म पूर्वोक्त करना ( यथा ) जो ग्रह शत्रु राशि में है वह तीसरा भाग घटता है भौम शत्रु क्षेत्र गत भी नहीं घटता और शुक्र शनि विना अस्तंगत ग्रह आधा घटता है चक्र पात भी करना ॥ ७७ ॥

इति आयुर्दायाध्यायः ॥

## अथ नैर्याणिकाध्यायः ॥

मृत्युर्मृत्युगृहे चक्षेन बलिभिस्तद्धातु कोपोद्भव ।
स्तत्संयुक्त भगात्रजो बहुभवो वीर्यान्वितैर्भूरिभिः ॥
अग्न्यम्बायुधिजो ज्वरामयकृतस्तृट्क्षुत्कृतश्चाष्टमे ।
सूर्यांद्यैर्निधनेचरादिषुपरासाध्यप्रदेशोष्विति ॥ ७७ ॥

**भाषा**-जिस का अष्टम भाव शून्य हो तो बलवान ग्रह अष्टम भाव को देखे उस की मृत्यु धातु कोप से कहनी । सूर्य्य का पित्त । चन्द्रमा का वात । कफ भौम का पित्त बुध का वात पित्त श्लेष्म । बृहस्पति का कफ । शुक्र का वात कफ । शनि का वात वह है और अष्टम भाव में जो राशि है वह कालांग में यहां कहो उसी अङ्ग में पूर्वोक्त धातु का विकार होगा जो अधिक ग्रह बलवान हों और अष्टम को देखें तो सभी धातु अर्थात् बहुत रोग एक वार कहे हैं ( यथा ) सूर्य्य का अग्नि । चन्द्रमा का जल । मंगल का शस्त्र । बुध का ज्वर । गुरु का पेट रोग । भृगु का तृषा लुशको । शनि का क्षुधा । जो ग्रह अष्टम हो उस के हेतु से मृत्यु होगी इस में भी विचार है कि वह ग्रह बलवान हो तो शुभ कर्म से वह हेतु होगा निर्बल हो तो अशुभ कर्म से और जिस के अष्टम स्थान में चर राशि हो उस को मृत्यु परदेश में होगी । स्थिर राशि हो तो स्वदेश में द्विस्वभाव राशि होतो मार्ग में मृत्यु होगी ॥ ७७ ॥

शैलाग्राभिहतस्य सूर्यकुजयोर्मृत्युः स्वबन्धुस्थयोः ।
कूपेमन्द शशांक भूमितनयैर्बन्धवस्तकर्मस्थितैः ॥
कन्यायां स्वजनाद्धिमोष्णकरयोः पापग्रहैर्दृष्टयोः ।
स्यातां यद्युभयोदयेर्कशशिनौ तोयेतदामज्जतः ॥ ७८ ॥

**भाषा** जिस के जन्म में सूर्य्य भौम दशम और चतुर्थ स्थान में हो ( अर्थात् ) एक दशम एक चतुर्थ में हो तो पत्थर की चोट लगने से उस की मृत्यु होवे । और शनि चन्द्रमा भौम अलग २ दशम और चतुर्थ में और सप्तम में हों ( यथा ) शनि चौथा चन्द्रमा सप्तम भौम दशम होतो वह पुरुष कुए में गिर कर मरे । और सूर्य्य चन्द्रमा कन्या राशि के हों और पापी ग्रह उन्हें देखे सो अपने मनुष्य के हाथ से मृत्यु पावें । जो द्विस्वभाव राशि लग्न में हो और सूर्य्य चन्द्रमा लग्न में हो तो जल में डूब कर मरे ॥ ७८ ॥

मन्देकर्कटगेजलोदरकृतो मृत्युर्मृगांकेमृगैः ।
शास्त्राग्नि प्रभवः शशिन्य शुभयोर्मध्ये कुजर्चेस्थिते ।
कन्यायां रुधिरोत्थशोकजनितस्तद्वत् स्थिते शीतगौ ।
सौरर्चे यदितद्वदेवहिमगौ रज्ज्वग्निपातै कृतः ॥ ७९ ॥

भाषा:-जिस के जन्म में शनि कर्क का और चन्द्रमा मकर का हो तो जलोदर पाण्डु रोगसे मृत्यु होवे और चन्द्रमा भौम के घर का १।८ का हो और पाप ग्रहोंके बीच का हो तो शस्त्र सेवा अग्नि से मृत्यु होवे, जिस के चन्द्रमा कन्या का पाप ग्रहों के बीच का हो तो रुधिर विकार से मृत्यु होवे, अथवा शोक रोग से जिस का चन्द्रमा शनि की राशि १०।११ का पापों के बीच होतो रस्सी फांसी आदि से वा अग्नि में पड़ने से मृत्यु होवे ॥ ७९ ॥

बन्धाद्धीनवमस्थयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्टयोः ।
द्रेष्काणैश्चससर्पपासनिगडै छिद्रस्थितैर्बन्धतः ॥
कन्यायामशुभान्वितेस्तमयगं चन्द्रे सिते मेषगे ।
सूर्ये लग्नगते च विद्धिमरणं स्त्रीहेतुकं मन्दिरे ॥ ८० ॥

भाषा.-जिस के नवम पंचम पाप ग्रह हों और उन्हें शुभ ग्रह न देखें तो बन्धन से मृत्यु होवे और जन्म लग्न से अष्टम में तत्काल जो पाश वा निगड़ द्रेष्काण हो तो भी बन्धन से मरेगा ये द्रेष्काण कर्कट का प्रथम वृषक दूसरा कन्या को तीसरा कहते हैं । जिस के कन्या का चन्द्रमा सप्तम पाप युक्त और सूर्य लग्न में और शुक्र मेष का हो तो स्त्री के निमित्त गृह के भीतर मरे ॥ ८० ॥

रन्ध्रास्पदांग हिबुकैर्लगुड़ा हतांगः ।
प्रक्षीण चन्द्ररुधिरार्कि दिनेश युक्तैः ॥
तैरेव कर्म नवमोदय पुत्र संस्थैः ।
धूमाग्नि बन्धन शरीर निकुट्टनान्तः ॥ ८१ ॥

भाषा:—जिस के क्षीण चन्द्रमा अष्टम और मंगल दशम और शनि लग्न का और सूर्य चौथा हो तो लाठी से मरे और क्षीण चन्द्रमा दशम मङ्गल नवम शनि लग्न का सूर्य पञ्चम हो तो धुवां में बन्द होने से वा काष्ठ से शरीर कूट जाने से मरे ॥ ८१ ॥

इति लाहौरीराम विरचितायां ज्योतिषदिवाकरस्य
नैर्याणिकाध्यायः ॥

ओ३म् सरस्वत्यै नमः ॥

# अथ नष्टजातकाध्यायः ॥

## अब प्रश्न से जन्मपत्री बनाने की रीति कहते हैं ।

**आधानजन्मा परिबोधकाले सम्पृच्छतो जन्मवदेद्विलग्नात् ।**
**पूर्वापरार्द्धे भवनस्य विन्द्याद्भानावुदग्दक्षिणगे प्रसूतिम् ॥ ८२ ॥**

भाषा:—जिस का आधान समय और जन्म समय मालूम न हो तो प्रश्न लग्न से जन्म समय कहना प्रश्न लग्न जो पूर्वार्द्ध १५ अंशों के अन्तर्गत हो तो उत्तरायण का और १५ अंशों से उपरांत हो तो दक्षिणायन में जन्म कहना ॥ ८२ ॥

**लग्नत्रिकोणेषु गुरुस्त्रिभागैर्विकल्प्यवर्षाणि वयोनुमानात् ।**
**ग्रीष्मेर्कलग्ने कथितास्तुशेषैरन्यायनर्तो वृतुरर्कचारात् ॥ ८३ ॥**

भाषा:—जो प्रश्न लग्न प्रथम द्रेष्काण हो तो जो लग्न है उसी राशि के बृहस्पति में जन्म हुआ जो दूसरा द्रेष्काण हो तो उस लग्न से पांचवीं राशि है । जन्म में उसी राशि का गुरु होगा जो प्रश्न लग्न में तृतीय द्रेष्काण हो तो जो उस लग्न में नवम राशि है उस राशि के बृहस्पति में जन्म कहना, इस तरह बृहस्पति के निश्चय हुए में सम्वत् प्रमाण हो जाता है कि बृहस्पति प्रति राशि एक वर्ष चलता है, प्रश्नकर्ता की आयु देख कर १२ से वा २४ से वा ३६ से वा ४८ से वा ६० वा ७२ से भीतर का संवत् जिस में उस राशि पर गुरु है वह वर्ष जानना । दूसरा यह है कि लग्न में प्रथम द्वादशांश हो तो लग्न राशि के गुरु में जन्म कहना और दूसरा द्वादशांश हो तो द्वितीयस्थ राशि के बृहस्पति में जन्म कहना इसी तरह जितने द्वादशांश तत्काल में हों उतने भाव सम्बन्धि राशि के बृहस्पति में जन्म कहना । यहां १२ । १२ वर्ष विकल्प कहा है, जहां इस में भ्रांति हो तो पुरुष लक्षण से वर्ष विभाग जानना वह यह है ॥ ८३ ॥

**पादौ स गुल्फौ प्रथमम्प्रदिष्टं जंघेद्वितीये तु सजानुचक्रे ।**
**मेढ्रोरुमुष्काश्च ततस्तृतीय नाभिं कटिश्चेति चतुर्थमाहुः ॥८४॥**

उदयं कथयन्ति पंचमं हृदयं षष्ठमथस्तनान्वितः ।
अथ सप्तमंसजत्रुणी कथयन्त्यष्टममोष्टकं धरे ॥ ८५ ॥
नवमं नयने च राभ्रुणी सललाटन्दशमं शिरस्तथा ।
अशुभेष्वशुभं दशाफलं चरणाद्येषु शुभेषु शोभनम् ॥ ८६ ॥

भाषाः—प्रश्न समय में पृच्छक का हाथ जिस अंग पर लगा हो उसके प्रमाण वर्ष बारह के भीतर कहना । यथाः—पैरों में १ वर्ष, जंघा में २ वर्ष इत्यादि जानना जिसके परमायु १२० वर्ष से अधिक आयु हो उस नष्ट जन्मपत्री क्रम भी नहीं है, प्रश्न लग्न में रवि हो तो ग्रीष्म ऋतु में शनि हो तो शिशिर ऋतु भृगु हो तो वसंत भौम हो तो शरद् चन्द्रमा हो तो वर्षा गुरु हो तो हेमंत में जन्म और इन ग्रहों के द्रेष्काण लग्न में हो तो भी यथोक्त ऋतु कहना जो लग्न में कोई भी ग्रह न हो तो जिसका द्रेष्काण लग्न में हो उसकी ऋतु कहना अयन और ऋतु में कर्क हो जैसा अयन तो उत्तरायन लग्न पूर्वार्द्ध होने से पाया और लग्न में बृहस्पति हो तो हेमंत ऋतु पाया तो उत्तरायण हेमंत ऋतु असंभव है ऐसा विक्षेप यहां पड़े वहां अगले श्लोक से निश्चय कहा है ऋतु सौरमान से जानना ८४ । ८५ । ८६.

चन्द्रज्ञ जीवा परिवर्त्तनीयाःशुक्रारमन्दौ रयनेविलोमे ।
द्रेष्काण भागे प्रथमेतु पूर्वमासोनुपाताचातिथिर्विकल्प्यः॥८७॥

भाषा.—यहां ऋतु और अयन का व्यत्यास हो तो चन्द्रमा के ऋतु में भृगु की बुध के में भौम की गुरु के में शनि को ऋतु कहनो जैसे उत्तरायण आया और ऋतु वर्षा पाई तो वसंत कहना दक्षिणायन हो तो यही ऋतु पूर्वोक्त क्रम से परिवर्त्तन करना मास के लिये प्रश्न में तत्काल द्रेष्काण हो तो ज्ञात ऋतु का प्रथम मास दूसरा द्रेष्काण हो तो दूसरा मास तीसरा द्रेष्काण हो तो उसके दो भाग करने प्रथम भाग हो तो एक दूसरे में दूसरा महीना जानना जिस द्रेष्काण के पक्ष में वह भाग है, उस के प्रकारोक्त मास कहना मास भी सौरमास से लेना अब तिथि के लिए अनुपात त्रैराशिक है कि दश १० अङ्क का एक द्रेष्काण हुआ ६०० कला १० अंश की हुई इतनी कला में ३० तिथि होती हैं तो तत्काल द्रेष्काण कला से ३० गुन कर ६०० कला के भाग देने से जन्मतिथि मिलेगी यहां भी सौरमान है तिथि के जगह सूर्यके अंश जानना चाहिये चान्द्रमान तिथि अगले श्लोक में है ॥ ८७ ॥

अत्रापि होरा पटवो द्विजेन्द्राः सूर्यांश तुल्यां तिथिमुद्दिशन्ति ।
रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोमजन्म भागश्च वेलाः क्रमशो विकल्प्याः ॥८८॥

भाषाः—इस जगह पर भी होरा शास्त्र के जानने वाले मुनि श्रेष्ठ सूर्य के अंश तुल्य शुक्लादि तिथि कहते हैं, दिन रात्रि जन्म के लिये तत्काल प्रश्न लग्न जो दिवाबली हो तो रात्रिका जन्म और वह रात्रिबली होतो दिनका जन्मकहना सूर्य के स्पष्ट होनेसे दिनमान रात्रिमान भी हो जाता है, दिवा जन्म में दिनमान से तत्काल लग्न के जितने चषा भुक्त हुए उन को गुण दिया उपरांत अपने देश के लग्न खण्ड चषों से भाग लिया तो लब्धि जन्म समय की वेला मिलेगी ॥ ८८ ॥

## लग्नखण्डा काशी और श्रीनगर के ॥

| राशि | मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काश्याम् | २०० | २४० | २८० | ३२० | ३६० | ४०० | ४०० | ३६० | ३२० | २८० | २४० | २०० | काश्याम् |
| श्रीनगरे | २२२ | २८२ | ३३२ | ३५२ | ३४० | ३४८ | ३५३ | ३४९ | ३१४ | ३६० | २१८ | २०८ | श्रीनगरे |

केचिच्छशांकाध्युषितान्नवांशाच्छुक्लांत संज्ञं कथयन्ति मासम् ।
लग्नत्रिकोणोत्तम वीर्ययुक्तं भस्प्रोच्यतेंगालभनादिभिर्वा ॥८९॥

भाषा किसी का मत है कि चन्द्रमा के नवांश से मास कहना चन्द्रमा नवांशक में जो नक्षत्र है उस नक्षत्र में पूर्ण चन्द्रमा जिस मास में हो वह जन्म मास कहना जैसे मेष के ८ नवांश के ऊपर वृष के ७ नवांश भीतर चन्द्रमा हो तो कार्तिक महिने में जन्म कहना ऐसे ही वृष के ७ नवांश ऊपर मिथुन के ६ नवांश भीतर मार्गशीर्ष मिथुन के ६ से कर्क के ५ पर्य्यन्त पौष कर्क के ऊपर सिंह के ४ नवांश भीतर माघ सिंह के ४ ऊपर कन्या के ७ भीतर फाल्गुन कन्या के ७ ऊपर तुला के ६ भीतर चैत्र तुला के ६ ऊपर वृश्चिक के ५ भीतर वैशाख वृश्चिक के ५ भीतर धन के ४ भीतर ज्येष्ठ धन के ४ ऊपर मकर के ३ भीतर अषाढ मकर के ३ ऊपर कुम्भ के २ भीतर श्रावण कुम्भ के २ ऊपर मीन के ५ भीतर भाद्र पद मीन के ५ नवांश ऊपर मेष के ६ नवांश भीतर आश्विन मास में जन्म कहना ।

यह युक्ति उस नक्षत्र में पूर्ण चन्द्रमा के होने की है जैसे कृतिका रोहिणी चन्द्रमा नवांश से हो तो कार्तिक मृगशिर आर्द्रा मार्गशीर्ष पुनर्वसु पुष्य पौष आश्लेषा मघा माघ पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त फाल्गुन चित्रा स्वाती चैत्र विशाखा अनुराधा वैशाख ज्येष्ठा मूला ज्येष्ठ पूर्वाषाढा उत्तराषाढा आषाढ श्रावण धनिष्ठा श्रावण शतभिषा

पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा भाद्रपद रेवती अश्विनी, भरणी, आश्विन जानना । इस को शुक्लान्त मास कहते हैं कि कृतिका में पूर्णमासी होने से कार्तिक मृगशिर में होने से मार्गशीर्ष इत्यादि और प्रश्न समय में त्रिकोण ९।५ भाव में से जो राशि बलवान हो उस राशि के चन्द्रमा में जन्म कहना अथवा प्रश्न पूछने के समय जिस अंग में उस का हाथ लगा है उस अंग में कालांग को जो राशि शीर्ष मुख बाहु इत्यादि है उस राशि के चन्द्रमा में जन्म कहना आदि शब्द से तत्काल जीव दर्शन से भी कही जायगी जैसे भेड़ बकरी अकस्मात् देखी जावें तो मेष, गौ बैल देखे जाने से वृष राशि कहना इत्यादि ॥ ८९ ॥

यावान् गतः शीतकरो विलग्नाच्चन्द्राद्वदेत्तावतिजन्मराशिः ।
मीनोदये मीनयुगम्प्रदिष्टं भक्ष्याहृताकाररुतैश्च चिन्त्यम् ॥ ९० ॥

भाषा।—प्रश्न लग्न से जितने स्थान में चन्द्रमा है उस से उतने ही स्थान में जो राशि है उस के चन्द्रमा में जन्म कहना । यथाः— मेष लग्न से पंचम चन्द्रमा सिंह का है तो उस से भी पंचम धन के चन्द्रमा में जन्म कहना जो प्रश्न लग्न में १२ मीन राशि हो तो मीन ही का चन्द्रमा जन्म में कहना । इस प्रकरण में नक्षत्र विधि २ । ३ प्रकार है सभी प्रकार एक होने में निश्चय कहना जहां उन का व्यत्यास पड़ता हो तो लक्षण शकुन से निश्चय कहना । यथा—बिल्ली आदि जीव देखे जावें वा उन का शब्द सुनने में आवे अथवा तदाकार चिन्ह कोई दृष्टि में आवे तो सिंह का चन्द्रमा कहना, ऐसे ही भेड़ बकरी से मेष का, ऊंट घोड़े से धन इत्यादि अथवा राशिस्वरूप जो पहिले कहा गया है वह उस पर जिस राशि का मिले वह राशि जाननी ॥ ९० ॥

होरानवांश प्रतिमं विलग्नं लग्नाद्रविर्यावति च द्रकाणे ।
तस्माद्वदेत्तावति वा विलग्नं प्रष्टुः प्रसूताविति शास्त्रमाह ॥९१॥

भाषा:—जन्म लग्न जानने के लिए प्रश्न लग्न में जिस राशिका नवांशक तत्काल वर्तमान है ॥ उस से उतनी ही संख्या की जो राशि है, वह जन्म लग्न कहना ॥ जैसे सिंह लग्न १०-२२ अंश प्रश्न लग्न में हो तो चौथा नवांशकर्क राशि है, इस से चौथा (अर्थात् ) तुला जन्म लग्न होगा और दूसरी रीति यह है, कि प्रश्न लग्न में तत्काल वर्तमान द्रेष्काण से सूर्य का द्रेष्काण वर्तमान यावत् संख्या का गिनती में पड़ता हो उस से उतनी ही राशि जन्म लग्न कहना जैसे १० । २० । अंश लग्न में दूसरा द्रेष्काण धन है, और सूर्य । ८ । १८ । ५१ । ५ स्पष्ट है तो सूर्य धन के द्वितीय मेष द्रेष्काण मेष में हुआ यह लग्न द्रेष्काण से १३ वां है १२ से अधिक होने पर १२ से तष्ट किया शेष रहा सूर्य द्रेष्काण से गिन कर १ होने से वही रही । अर्थात् धन का द्वितीय द्रेष्काण मेष यह जन्म लग्न हुआ ॥ ९१ ॥

जन्मादिशेल्लग्नगवीर्ययुगेवा छायांगुलघ्नेर्कहतेवशिष्टम्। आसीन सुप्तोत्थिततिष्ठताभं जाया सुखाज्ञोदय सम्प्रदिष्टम् ॥ १२ ॥

**भाषा**—अब अन्यरीति से जन्म लग्न कहते हैं, कि प्रश्न लग्न में जितने ग्रह हैं उन का तत्काल स्पष्ट लिप्ता पर्यंत पिण्ड करना अथवा उन में से जो अधिक बलवान् हो उसी का लिप्ता पिण्ड करना। और समभूमि में द्वादशांगुल शंकु की छाया देखना कितने अंगुल है, उन अंगुलों से लिप्ता पिण्ड गुन देना १२ से भाग लेना शेष लग्न होता है, और रीति यह है, जो प्रश्न पूछने वाला बैठ कर पूछे तो तत्काल लग्न से सप्तम जो राशि है वह लग्न जानना, जो पड़े २ पूछे तो उस लग्न से दशम स्थान की राशि जो बिस्तरे से वा पृथ्वी से उठता हुआ पूछे तो जो वर्तमान लग्न है वही जन्म लग्न होगा ऐसे प्रकार से निश्चय कर के लग्न कहना ॥ १२ ॥

गोसिंहौ जितमाष्टमौ क्रियतुले कन्यामृगौ च क्रमात् ॥
संवर्ग्यादश काष्ट सप्तविषयैः शेषाः स्वसंख्यागुणाः ॥
जीवारास्फुजिदैन्दवाः प्रथमवच्छेषाग्रहाःसौमवत् ॥
राशीनां नियतो विधिग्रहयुतैः कार्याच तद्वर्गणाः ॥ १३ ॥

**भाषा**—अब और रीति से नष्ट जातक कहते हैं-प्रथम प्रश्न कालिक लग्न का लिप्ता अर्थात् पिण्ड करना उपरांत जो लग्न है, उस के गुणक से गुण देना वे गुणक यह है वृष २ सिंह ५ लग्न के पिण्ड को १० से गुनना मिथुन ३ वृश्चिक ८ आठ ८ से तुला मेष ७ से कन्याम कर ५, से और रशि अपनी २ संख्याओं से जैसे कर्क चार से कुम्भ ११ से इत्यादि इस प्रकार गुना कर के तब जो ग्रह कोई लग्न में हो तो पूर्व अपने गुणाकार से गुने पिण्ड को फिर उस ग्रहके गुनाकार से गुनना जब लग्न में बहुतग्रह हों तो सभी के गुनाकारों से १। १ वार गुनना लग्न गत ग्रहों को गुनाकार यह है, रवि चन्द्रमा बुध शनि ५ भौम ८ गुरु के १० शुक्र के ७ प्रथम तात्कालिक लग्न लिप्ता पिण्ड को अपने गुनाकार से गुन के पीछे लग्नगत ग्रह के गुनाकार से गुनाकर जो अंक हो उसे स्थापन करना आगे काम आवेगा ॥ १३ ॥

| सू० | चं० | मं० | बु० | बृ० | शु० | श० | ग्रहगुणक | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ८ | ५ | १० | ७ | ५ | राशियों के गुणक | | | | | |
| राशि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| गुणक | ७ | १० | ८ | ४ | १० | ५ | ७ | ८ | ९ | ५ | ११ | १२ |

सप्ताहतं त्रिघनभाजित शेषमृक्षम् ।
दत्वाथवा नव विशोध्य नवाथ वा स्यात् ॥
एवं कलत्र सहजात्मज शत्रुभेभ्यः ।
प्रष्टुर्वदेदुदयराशि वशेन तेषाम् ॥ ९४ ॥

भाषा—नक्षत्रके लिए कहते हैं, कि पहिले श्लोकोक्त प्रकार से गुनकर जो पिण्ड स्थापन किया है, उस को ७ से गुनदेना फिर यह लग्न राशि चर हो तो ७ से गुणे अंक में १ युत कर देने और द्विस्वभाव से १ ऊन करने स्थिर राशि में न जोड़ने न घटाने, इस प्रकार कई आचार्यों का मत है, परन्तु यह ठीक नहीं अभिप्रेत यह है, कि प्रश्न लग्न तात्कालिक जिस के पिण्ड को स्वगुनकार से गुना है, उस में तत्काल प्रथम द्रेष्काण हो तो १ जोड़ने दूसरा हो तो वैसा रहने देना तीसरा हो तो १ घटाय देना यह मत बिलकुल ठीक है, ऐसा कर्म करने से जो अंक मिला हैं, उस में २७ का भाग दे कर जो बचे उस संख्या का जो नक्षत्र हो वह जन्म नक्षत्र प्रश्न वाले का जानना) इसी तरह से जब कोई अपनी स्त्री का नक्षत्र पूछे तो उस लग्न से सप्तम राशि का यह सर्व कार्य करना भाईका तृतीय से पुत्र का पंचम से शत्रु का छटे से विचार करना ( अर्थात् ) लग्न स्पष्टको राशि बदल के अंशादि वही रहने देने जैसे पुत्र का पूछे तो लग्न स्पष्ट की राशि में ५ जोड़ कर शत्रु की में ६ स्त्री की में ७ जोड़ कर करना ॥ १४ ॥

वर्षर्तुमास तिथयो द्युनिशं ह्युडूनि ।
वेलोदयर्क्ष नवभाग विकल्पनाः स्युः ॥
भूयोदशादिगुणिताः स्वविकल्पभक्ता ।
वर्षादयो नवकदान विशोधनाभ्याम् ॥ ९५ ॥

भाषा—अब वर्षादि निकालने की विधि और दूसरी तरह समस्त नष्टजातक कहते हैं कि पूर्वोक्त विधि से लग्न का पिण्ड राशि वा ग्रह गुनकार से गुनाकर के जो मिला है उस को ४ जगह स्थापन करना पहिले स्थान में १० से गुनना दूसरे में ८ से तीसरे में ७ से चौथे में ५ से गुणा कर उन सभी में १ जोड़ना वा घटाना वा न जोड़ना न घटाना पूर्वोक्त क्रम से जैसा योग्य हो कर के अपने २ विकल्पों से भाग देकर वर्ष ऋतु मास मिलते हैं कौन से अंग से कौन मिलेगा इसी लिये ३ श्लोक लिखे हैं ।

विज्ञेया दशकेष्वब्दा ऋतुमासास्तथैवच ।
अष्टकेष्वपि मासार्द्धास्तिथयश्च तथास्मृताः ॥ ९६ ॥

भाषाः—पूर्वश्लोकोक्त विधि से जो ४ अंक स्थापित है, उन में १ ने जोड़ वा तोड़ वा न जोड़न तोड़ जैसी प्राप्ति हो करके प्रथम स्थान में जो १० गुणित है उस में १२७ परमायु का भाग देकर जो बाकी रहै वह वर्ष संख्या जानना और उसी में ६ का भाग देने से जो शेष रहे वह ऋतु जानना ऋतु शिशिरादि क्रम से गिनी जाती है, उसी अंक में २ से भाग देने से १ शेष रहे तो जो ऋतु पाई है उसी का प्रथम मास ०० शेष रहे तो दूसरा मास अब जो दूसरे स्थान में ८ गुनी राशि स्थापित है, उस में २ से भाग ले कर १ बचे तो शुक्लपक्ष ०० रहे तो कृष्णपक्ष जानना उसी में तिथि १५ से भाग देकर जो शेष रहे वह तिथि जानना ॥ १६ ॥

दिवा रात्रि प्रसूतिं च नक्षत्रानयनं तथा ।
सप्तकेष्वपि वर्गेषु नित्यमेवोपलक्षयेत् ॥ १७ ॥

भाषाः—जो तृतीय स्थान में ७ से गुनी राशि स्थापित है, उस में २ से भाग लेकर १ बाकी रहै तो दिन का जन्म ० ० रहै तो रात्रि का जन्म कहना और उसी अङ्क में २७ से भाग देकर जो शेष रहै वह अश्विन्यादि क्रम से नक्षत्र जानना ॥ १७ ॥

वेलामध्यविलग्नं च होरांशकमेव च ।
पञ्चकेषु विजानीयान्नष्टजातक सिद्धये ॥ १८ ॥

भाषाः—जो चौथे स्थान में पांच से गुनी राशि स्थापित है उस में दिनका जन्म हो तो दिन मान से रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान से भाग देकर जो बचे वह जन्म का इष्टकाल जानना जब इष्ट मिलगया तो उसी से लग्न स्पष्ट गृह स्पष्ट होरा नवांशादि साधन कर लेना नष्टजातक की २ । ३ प्रकार से रीति कही है अच्छी तरह से निश्चय कर के कहना ॥ १८ ॥

## इति द्वितीयोऽधिकारः सम्पूर्णः ॥

# अथ मुहूर्तप्रकरण प्रारम्भः ॥

## विवाह प्रकरणम् ॥

### विवाह प्रयोजनम् ॥

आर्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः ।
तस्माद्विवाह समयं परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुत शीलधर्म्माः ॥ १ ॥

**भाषा**—( शुभशील युक्त ) भर्त्रादिकों की अनुकूल जो भार्या है, वह धर्मार्थकाम त्रिवर्ग के साधन योग्य स्थान है, उस का शील लग्न के आधीन है, स्त्रियों का विवाह और पुरुषों का उपनयन दूसरा जन्म है, तस्मात् इन समयों में जैसा लग्न हो उस के सदृश सन्तान स्वभाव और धर्म होते हैं, देव पैत्र मनुष्य ३ ऋण गृहस्थो पर रहते हैं इन के उद्धार करने वाली शुभ सन्तान होती है, यह सन्तान शुभलक्षणा स्त्री के आधीन है, उस के शुभ गुणवती होने के हेतु विवाह मुहूर्त कहते हैं ॥ १ ॥

आदौ संपूज्य रत्नादिभिरथगणकं पूजयेत्स्वस्थाचित्तम् ।
कन्योद्वाहं दिगीशा नलहय विशिखे प्रश्न लग्नाद्यदीन्दुः ॥
दृष्टा जीवेन सद्यः परिणयनकरोगो तुला कर्कटाख्यम् ।
वास्थात्प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं तद्विदध्यात् ॥ २ ॥

**भाषाः**—यहां अथ शब्द ग्रन्थ मध्य होने से मंगलार्थ है, प्रथम प्रश्न पूछने के लिये स्वस्थ चित्त ज्योतिषी को सुवर्ण वस्त्र फलादिकों से सुपूजित करके कन्या के विवाह के लिये पूछे, प्रश्न योग कहते हैं ।

प्रश्न लग्न से यदि १० । ११ । ३ । ७ । ५ स्थानमें चन्द्रमा गुरुदृष्ट हो तो शीघ्र विवाह होगा तथा वृष तुला कर्क लग्न प्रश्नमें हो उसे शुभ ग्रह देखे वा शुभ युक्त हो तो भी विवाह शीघ्र होवे ॥ २ ॥

**विषम भांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहंबलिनौ यदि पश्यतः ॥**
**रचयतो वरलाभमियोयदा युगल भांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ ३ ॥**

**भाषा**—प्रश्न में चंद्रमा शुक्र यदि विषम राशि विषम नवांशक में हों बली हों तथा लग्नको देखें तो कन्या को वर मिले, तथा वही चंद्रमा शुक्र युग्म राशि नवांशक में हों तो वर को कन्या मिले यह दोनों विवाह योग एक ही प्रयोजनीय हैं ॥ ३ ॥

**षष्ठाष्टस्थः प्रश्न लग्नाद्यदीन्दुर्लग्ने क्रूरः सप्तमे वा कुजः स्यात् ॥**
**मूर्ताविन्दुः सप्तमेतस्यभौमो रण्डा सास्यादष्टसंवत्सरेण ॥ ४ ॥**

**भाषा**—यदि प्रश्न लग्न से चन्द्रमा छठा आठवां हो तो आठ वर्ष में विधवा होवे आप भी मरे ॥ १ ॥ तथा लग्न में पाप ग्रह सप्तम में भौम हो तो भी वही फल ॥ २ ॥ और लग्न में चन्द्रमा सप्तम में भौम हो तो भी वही फल है ॥ ३ ॥ यह तीन वैधव्ययोग है ॥ ४ ॥

**प्रश्नतनोर्यदिपाप न भोगः पंचमगोरिपुदृष्टशरीरः ॥**
**नीच गतश्च तदा खलुकन्या स्यात्कुलटात्वथवा मृतवत्सा ॥५॥**

**भाषा**—प्रश्न में पंचम पाप ग्रह शत्रु ग्रह से दृष्ट तथा नीच राशि गत हो तो (व्यभिचारिणी) वेश्या अथवा ( मृतवत्सा ) मरे पुत्र वाली ॥ ५ ॥

**यदि भवति सितातिरिक्त पक्षे तनु गृहतःसमराशिगः शशाङ्कः ।**
**अशुभ खचरवीक्षितो रिरन्ध्रे भवति विवाह विनाशकारकोयम् ॥६**

**भाषा**:—यदि कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा प्रश्न लग्न से २ । ४ आदि राशियों का ६ । ८ भाव में पाप दृष्ट हो तो ( विवाह का विनाश ) वह विवाह न होने पावे ॥ ६ ॥

**जन्मोत्थंच विलोक्य बालविधवा योगंविधायव्रतम् ।**
**सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतयादद्यादिमां वारहः ॥**
**सल्लग्नेच्युत मूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटम् ।**
**दद्यात्तां चिरजीविनेत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥ ७ ॥**

यदि जन्म के बाल वैधव्यकारक जातकोक्तादि योग कन्या के देखे जावें तो उस के पित्रादिकों ने ( रहः ) एकांत में निश्चयता से सावित्री व्रत करना तथा पिप्पल सम्बन्धी व्रत करना ( वा ) शुभ लग्न विवाहोक्त सद्गुण सौभाग्यकारक योगों में विष्णु प्रतिमा अश्वत्थ और घट के साथ विवाह विधि से विवाह कर के यह कन्या चिरंजीवि ( जिस वर के दीर्घायु ) योग हो को देना इस उपाय करने में वैधव्य दोष नहीं होता और ( पुनर्भू ) दोवरी के साथ विवाह का दोष नहीं होता ॥ ७ ॥

प्रश्नलग्ने क्षणेयादृशापत्ययुक्स्वेच्छया कामिनी तत्रचेदा व्रजेत् ॥
कन्यकावा सुतोवा तदा पण्डितैस्तादृशापत्यमस्याविनिर्दिश्यते॥८॥

भाषाः—प्रश्न समय में ज्योतिषी के समीप जैसी स्त्री आवे वैसा ही प्रश्न का उत्तर कहना जैसे कोई स्त्री पुत्र लेके आवे तो विवाह वाली कन्या के पुत्र होंगे कन्या लेके आवे तो कन्या दोनों हों तो कन्या पुत्र सभी होंगे उपलक्षण से उस स्त्री के जैसे लक्षण सुभगा दुर्भगा पुत्रवती बांझ आदि हों वैसे ही कन्या के कहना ॥ ८ ॥

## कन्यावरण मुहूर्त्त ।

विश्वस्वाती वैष्णव पूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचित ऋक्षैः । वस्त्रालङ्कारादि समेतैः फलपुष्पैः संतोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणं सत् ॥ ९ ॥

भाषाः—उत्तराषाढा, स्वाती, श्रवण, तीनों पूर्वा अनुराधा, धनिष्ठा कृत्तिका तथा विवाहोक्त नक्षत्रादिकों में वस्त्र भूषणादि वस्तु सहित फल पुष्पों से विधि पूर्वक कन्यावरण ( सगाई करना ) ॥

धराणिदेवोऽथवा कन्यका सोदरः शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः । वरवृत्तिं वस्त्र यज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ १० ॥

भाषाः—पुरोहित ने वा कन्या के सहोदर भाई ने शुभवारादि दिन में तथा ध्रुव नक्षत्रों सहित कृत्तिका, तीन पूर्वाओं में गीत वाद्यादि मङ्गल पूर्वक वस्त्र भूषण यज्ञोपवीतादिकों से वरका वरण ( वाग्दान ) करना ॥ १० ॥

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः॥११॥

**भाषा**—कन्या के गुरु शुद्धि ( पूर्वोक्त ) वर के सूर्य शुद्धि तथा दोनों के चन्द्र शुद्धि में कन्या के अवस्था छः वर्ष ऊपर समवर्ष में वर के विषम वर्षों में विवाह शुभ होता है यहां आर्योत्तर मत है, कि जन्म से विषम वर्ष के तीन मास ऊपर १ मास तथा सम के ३ मास पर्यंत विवाह शुभ होता है ॥ ११ ॥

मिथुन कुंभ वृषालिमृगाजगे मिथुनगेपि रवौ त्रिलवे शुचेः ।
अलिमृगा जगते करपीडनं भवति कार्तिक पौष मधुष्वपि ॥१२॥

**भाषा**:—मिथुन कुम्भ वृषभ वृश्चिक मकर मेष राशियों के सूर्य में विवाह शुभ होता हैं इन में आषाढ के ( त्रिलवा ) शुक्ल प्रतिपदा से दशमी पर्यंत मात्र शुभ है, हरिशयनी एकादशी से योग्य नहीं तथा वृश्चिक के सूर्य में ( कार्तिक ) मकर के सूर्य में पौष मेष के सूर्य में चैत्र भी विवाह को लेते हैं ॥ १२ ॥

आद्यगर्भ सुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभ तिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥१३॥

**भाषा**:—जन्म मास ( जन्म तिथि से ३० दिन ) जन्म नक्षत्र जन्म तिथि में आद्य गर्भ के पुत्र कन्या का विवाह उचित नहीं है, द्वितीयादि गर्भ वालों को पुत्र देने वाले जन्म मासादि विवाह में होते हैं ॥ १३ ॥

ज्येष्ठ द्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि ।
केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोह्यमाहुर्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोःस्याद्विवाहः ॥ १४

**भाषा**:—ज्येष्ठ पुत्र ज्येष्ठ कन्या ज्येष्ठ मास यह विवाह में त्रिज्येष्ठ कदापि योग्य नहीं हैं ज्येष्ठ पुत्र ज्येष्ठ मास वा ज्येष्ठ कन्या ज्येष्ठ मास यह ज्येष्ठ द्वन्द्व मध्यम होता है कोई कृत्तिका के सूर्य पर्यंत त्रिज्येष्ठ वा द्वन्द्व का दोष नहीं है ऐसा कहते हैं और आद्य गर्भ के कन्या पुत्र का विवाह नहीं होता ॥ १४ ॥

श्वश्रूविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः ।
कन्यासुतौनिर्ऋतिजौ श्वसुरं हतश्च ॥
ज्येष्ठा भजाततनया स्वधवाग्रजं च ।
शक्राग्निजा भवति देवरनाशकर्त्री ॥ १५ ॥

**भाषा**:—आश्लेषा के उत्पन्न कन्या पुत्र साक्षात् सास को नाश करते हैं तथा मूल के जन्म वाले श्वसुर का नाश करते हैं तथा ज्येष्ठ में जन्म वाली कन्या अपने पति के

सहोदर जेठे भाई ( ज्येष्ठ ) का तथा विशाखा में जन्म वाली देवर का नाश करती है। ग्रन्थान्तर वाक्य ऐसे भी हैं, कि ज्येष्ठा वाला पुरुष कन्या के ज्येष्ठ भाई को, विशाखा वाला छोटे भाई का नाश करता है। प्रमाण यह है कि:-

"पत्न्यग्रजामग्रजं वा हन्ति ज्येष्ठर्क्षजः पुमान्। तथा भार्या स्वसारं वा शालकं वा द्विदैवजः" इति॥ यहां ज्येष्ठ कनिष्ठ भाइयों के स्थान में बहिन भी कही है, उक्त से प्रथम वा पीछे के गर्भ वाला कन्या वा पुत्र जो हो यह भावार्थ है॥ १५॥

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाड़ीचैते गुणाधिकाः॥ १६॥

भाषा:-विवाह का मेल विचार कहते हैं कि वर्णमैत्री होतो (१॥) गुणवश्य में (२) तारा में ( ३ ) योनि में ( ४ ) ग्रहमैत्री में ( ५ ) गणमैत्री में ( ६ ) भकूटमैत्री में (७॥) नाड़ी गुण में ( ८ ) इन सब का योग ( ३६ ) गुण होते हैं, अधिक में मेलक शुभ हीन में क्रमशः अशुभ होता है। इन प्रत्येक का विचार आगे कहते हैं॥ १६॥

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः।
वरस्य वर्णतोधिका वधूर्नशस्यते बुधैः॥ १७॥

भाषाः-मीन १२ वृश्चिक ८ कर्कट ४ विप्र तथा १।५।९ क्षत्रिय २।६।१० वैश्य ३।७।११ शूद्र वर्ण हैं, वर से हीन वर्ण कन्या शुभ, कन्या के वर्ण से हीन वर्ण वर अच्छा नहीं होता, दोनों का एक ही अत्युत्तम होता है वर्णाधिक वर होने से (१) गुण मिलता है, कन्या अधिक में नहीं॥ १७॥

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्या भं वरभादपि।
गणयेन्नवभिः शेषेत्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम्॥ १८॥

भाषा -कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र, वर नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र पर्यन्त गिन कर जितने हों ९ से शेष करके तारा जाननी ३।५।७ शेष रहे तो अशुभ अन्य सब शुभ होते हैं, शुभ से ( ३ ) गुण मिलते हैं॥ १८॥

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयो कासरः।
सिंहोवस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्त्ययो कुञ्जरः॥
मेषोदेव पुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः।
स्याद्विश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चांद्राब्जयोन्योरहिः॥ १९॥

ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वातथा ।
मार्जारोदितिसार्पयोरथमघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ॥
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपिचगौर्यम्णाबुध्न्यर्क्षयो ।
योनिः पादगयोः परस्परमहावैरंभयोन्योस्त्यजेत् ॥२०॥

भाषा—अश्विनी शततारा की अश्व योनि स्वाति हस्त, महिष धनिष्ठा पूर्वभाद्रपदा, सिंह । भरणी, रेवती हस्त, । पुष्य, कृतिका मेष (मेढा) श्रवण पूर्वाषाढ, बानर उत्तराषाढा, अभिजित नेवला । रोहिणी, मृगशिर सर्प ज्येष्ठा, अनुराधा हरिण मूल आर्द्रा कुत्ता । पुनर्वसु, आश्लेषा बिल्ली । मघा, पूर्वाफाल्गुनी चूहा । विशाखा, चित्रा व्याघ्र उ० फा० उ० भा० गौ योनि एक योनी के वर कन्या उत्तम मित्र सम योनियों के सामान्य और परस्पर वैर योनी में अशुभ होता है इनका वैर गौ व्याघ्र । गज सिंह ॥ अश्व भैंस ॥ मृग कुत्ता । नेवला सर्प । बानर मेंढा । बिल्ली चूहा इत्यादि लोक व्यवहार से जानना योनि मैत्री होने से ४ गुण मिलते हैं ॥ १९ ॥ २० ॥

मित्राणिद्युमणेः कुजेज्य शशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ ।
सौम्यश्चास्य समोविधो बुधरवि मित्रेनचास्यर्यद्विषत् ॥
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः ।
शत्रुःशुक्र शनी समौ च शशभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥२१॥
मित्रेचास्यरिपुः शशी गुरु शनि क्ष्माजाःसमागीष्यते ।
मित्राण्यर्ककुजेन्दवो वुधसितौशत्रुसमःसूर्यजः ॥
मित्रेसौम्यशनीकवेःशशिरवी शत्रूकुजेज्यौसमौ ।
मित्रे शुक्रबुधौशनेः शशि रवी क्ष्मा जाद्विषोन्यः समः॥२२॥

भाषा—सूर्य के मं० बृ० चं० मित्र शु० श० शत्रु० बु० सम ॥ चन्द्रमा के बु० सू० मित्र, अन्य सम भौम के चं० गु० सू० मित्र बु० शत्रु श० शु० सम ॥ बुध के शु० सू० मित्र चं० शत्रु बृ० श० मं० सम । गुरु के सू० चं० मं० मित्र बु० शु० शत्रु श० सम ॥ शु० के बु० श० मित्र सू० चं० शत्रु बृ० मं० सम ॥ शनि के बु० शु० मित्र सू० चं० मं० शत्रु बृ० सम है ॥ वर कन्या के राशीश मित्र तथा एकाधिपत्य हों तो ५ गुण एवं सम मित्रमें ४ गुण सम सम में ३ गुण मित्र शत्रु में २ सम शत्रु में १ शत्रु शत्रु में (०) मिलता है शत्रु २ का मेल कहीं नहीं होना मृत्यु घटकारक होता है ॥ २१ ॥ २२ ॥

## मित्रा मित्र सम चक्रम् ॥

| सू० | चं० | मं० | बु० | बृ० | शु० | श० | ग्र० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं० मं० बृ० | र० बु० | गु० चं० र० | र० शु० | र० च० मं० | बु० श० | बु० शु० | मित्र |
| बु० | मं० बृ० शु० श० | शु० श० | मं० बृ० श० | श० | मं० बृ० | बृ० | सम |
| शु० श० | ० | बु० | चं० | बु० शु० | र० चं० | र० चं० मं० | शत्रु |

रक्षो नरामरगणाः क्रमतो मघाहि ।
वह्निन्द्रमूल वरुणानल तच्चराधाः ॥
पूर्वोत्तरा त्रय विधातृयमेभानि ।
मैत्रादितीन्दु हरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ २३ ॥

भाषा—मघा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा विशाखा, राक्षस गण, तीन पूर्वा, तीन उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, मनुष्य गण, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिर, श्रवण, रेवती, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त, देव गण है ॥ २३ ॥

| कन्यापक्ष | वर्ण गुण | | | |
|---|---|---|---|---|
| विप्र | १ | ० | ० | ० |
| क्षत्रिय | १ | १ | ० | ० |
| वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| शूद्र | १ | १ | १ | १ |
| | ब्रा० | क्ष० | वै० | शू० |
| वरपक्षे | | | | |

वश्यगुण

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुष्पद | २ | ॥ | १ | ० | २ |
| मनुष्य | ॥ | २ | ० | ० | ० |
| जलचर | १ | ० | २ | २ | २ |
| वनचर | ० | ० | २ | २ | ० |
| कीट | १ | ० | १ | ० | २ |

## तारा चक्रम् ।

| ता० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| २ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ३ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ४ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ५ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ६ | ०३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ७ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ८ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ९ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |

## गणगुणाः ।

वर

| कन्या | दि | म | रा |
|---|---|---|---|
| दि | ६ | ४ | ० |
| म | ४ | ६ | ४ |
| रा | ० | ० | ६ |

## योनिगुणः

| | अ. | ग. | मे. | स. | श्वा | मा. | मू. | गौ. | भैं. | व्या | ह. | वा. | न. | सिं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व. | ४ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | १ | ० | १ | ३ | ३ | २ | १ |
| गज. | २ | ४ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ३ | १ | २ | २ | २ | ० |
| मेष. | २ | ३ | ४ | २ | १ | २ | १ | ३ | ३ | १ | २ | ० | ३ | १ |
| सर्प. | ३ | ३ | २ | ४ | २ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ० | २ |
| श्वान. | २ | २ | १ | २ | ४ | २ | १ | २ | २ | १ | ० | २ | १ | १ |
| मार्जार. | २ | २ | २ | ३ | २ | ४ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | २ | २ |
| मूषक. | २ | २ | १ | १ | १ | ० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ |
| गो. | १ | २ | ३ | २ | ३ | २ | २ | ४ | ५ | ० | ३ | २ | २ | १ |
| भैंस. | ० | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | २ | २ |
| व्याघ्र. | १ | २ | ० | १ | १ | १ | २ | १ | १ | ४ | १ | १ | २ | २ |
| हरिण. | ३ | ३ | २ | २ | ० | ३ | २ | ३ | २ | १ | ४ | २ | २ | २ |
| वानर. | ३ | ३ | ० | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | १ | २ | ४ | ३ | २ |
| नकुल. | २ | ३ | ३ | ० | १ | २ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ४ | २ |
| सिंह. | १ | ० | १ | २ | १ | १ | ० | ० | ३ | २ | १ | २ | २ | ४ |

## भृकूट गुणाः

| | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे. | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| वृ. | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| मि. | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| क. | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| सिं. | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० |
| क. | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ |
| तु. | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० |
| वृ. | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| धं. | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ |
| म. | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ |
| कु | ० | ० | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ०. |
| मी. | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ |

## ग्रहमैत्रीगुणाः

| वधू० \ वर | र. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र. | ५ | ५ | ५ | ३ | ५ | ० | ० |
| चं. | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ॥ | ॥ |
| मं. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ३ | ॥ |
| बु. | ३ | १ | ॥ | ५ | ॥ | ५ | ४ |
| बृ. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ॥ | ३ |
| शु. | ५ | ॥ | ३ | ५ | ॥ | ५ | ५ |
| श. | ० | ॥ | ॥ | ४ | ३ | ५ | ५ |

## नाडीचक्रम्

| वधू० \ वर | आ. | म. | अं. |
|---|---|---|---|
| आ. | ० | ८ | ८ |
| म | ८ | ० | ८ |
| अं. | ८ | ८ | ० |

अक चट तप यशवर्गाः खगेशमार्जारसिंह शुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निज पंचम वैरिणामष्टौ ॥ २४ ॥

भाषा—अवर्ग गरुड़ । कवर्ग मार्जार । चवर्ग सिंह । टवर्ग कुत्ता । तवर्ग सर्प । पवर्ग चूहा । यवर्ग मृग शवर्ग बकरा यह ८ वर्गों के स्वामी हैं । अपने से पांचवां शत्रु होता है-जैसे-गरुड़, सर्प, मार्जार, चूहा, इत्यादि-पुरुष के नक्षत्र परस्पर भक्ष्य भक्षक हों तो शुभ नहीं होता कोई नामअक्षर से भी वर कन्या स्वामी सेवक आदि सभी को विचारते हैं ॥ २४ ॥

## विवाह नक्षत्राणि ॥

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाति मृगोमघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदाः ॥ २५ ॥

भाषा—रो० उ० रे० मू० स्वा० मृगशिर मघा अनुराधा-और हस्त यह नक्षत्र विवाह में मंगल के दाता है, ( अर्थात् ) इन नक्षत्रों में विवाह करना श्रेष्ठ हैं ॥२५॥

## ( अथ विवाह मासाः )

माघे धनवती कन्या फाल्गुणे शुभगा भवेत् ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ २६ ॥
आषाढ़े कुलवृद्धिस्यादन्यमासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे कोऽपिकोविदः ॥ २७ ॥

## इति विवाह मासाः ॥

भाषा—माघ में विवाह होय तो कन्या धन वाली होती है, और फाल्गुन में सौभाग्यवती होती है वैशाख वा ज्येष्ठ में विवाह हो तो पति को अति प्रिय होती है, आषाढ़ में कुल की वृद्धि हो अन्य मास विवाह में वर्जित है, कोई आचार्य मार्गशीर्ष भी शुभ बतलाते हैं ॥ २६ ॥ २७ ॥

अमावास्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभं ।
गण्डान्तं क्रूरवाराश्च वर्जनीया प्रयत्नतः ॥ २८ ॥

भाषा—अमावस्या ३० और रिक्ता तिथि ४।९।१४ और वार बेला जन्म का नक्षत्र और गण्डान्तयोग शूक क्रूरवार–र० मं० शनि ग्रह विवाह में वर्जित है ॥ २८ ॥

नन्दा भद्रा जयारिक्ता पूर्णाश्चतिथयः क्रमात् ।
वारत्रयं समावर्त्यातिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ २९ ॥

भाषा—नन्दा तिथि, भद्रा तिथि, जयातिथि, रिक्तातिथि, और पूर्णा तिथि, यह पांच नाम तिथियों के है, तिनमें, नन्दा १।६।११ भद्रा २।७।१२ जया ३।८ १३ रिक्ता ४।९।१४ पूर्णा ५।१०।१५ ॥ इनको तीन वार आवृत्ति करने से क्रम से होती है ॥ २१ ॥

तुर्यार्के सप्तश्चन्द्रे द्वितीयो भूमिनन्दन ।
चन्द्रपुत्रे पंचमश्च देवाचार्ये तथाष्टमे ॥ ३० ॥
दैत्य पूज्ये तृतीयश्च शनौ षष्ठश्चनिन्दतः ।
प्रहरार्धे शुभेकार्ये वारवेलाच कथ्यते ॥ ३१ ॥

भाषा—रविवार को ४ प्रहर के अर्ध प्रहर में वार वेला और चन्द्रवार को ७ भौमवार को २ गुरु को ८ शुक्र को ३ शनि को ६ इस तरह बार वेला कहते हैं इन यामों के अर्द्धयाम में बार वेला होती है, इन में शुभ कर्म न करना क्रम से समझ लेना ॥३०३१॥

वार बेला चक्र मिदम् ॥

| ४ | ७ | २ | ५ | ८ | ३ | ६ | याम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | ३॥ | घटि |
| र० | चं० | मं० | बु० | बृ० | शु० | श० | वार |

भद्रा कर्कट योगं च तिथ्यंतं यमघंटकम् ।
दग्धातिथिं च भान्तं च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥ ३२ ॥

भाषा—भद्रा कर्कट योग तिथि के अन्त की घडी यमघंटक योग दग्धातिथि नक्षत्र के अंत की ३ घडी और कुलिक योग इतने दोष विवाह में वर्जित है, ॥ ३२ ॥

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परेदले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टि पूर्वदले स्मृता ॥ ३३ ॥
मेष मकर वृष कर्कट स्वर्ग कन्या मिथुन तुला धन नागे ।
कुम्भ मीन अलि केसरि मृत्यु विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये ॥ ३४ ॥
स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोके यदा विष्टि सर्वकार्य्यविनाशिनी ॥ ३५ ॥
सन्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च ह्यधोमुखी ।
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सन्मुखे मरणप्रदा ॥ ३६ ॥

( चक्र में स्पष्ट देख लेना )

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृ० प० | ३ | १० | परार्द्ध तिथि |
| कृ० प० | ७ | १४ | पूर्वार्द्ध तिथि |
| शु० प० | ४ | ११ | परार्द्ध तिथि |
| शु० प० | ८ | १५ | पूर्वार्द्ध तिथि |

**भाषा**—मेष का चन्द्रमा हो मकर का हो वृष का हो और कर्क का हो तो स्वर्ग में भद्रा होती है, ॥ कन्या के में मिथुन तुला के में नाग लोक में रहती है, कुम्भ का चन्द्रमा होवे मीन का हो अलि (वृश्चिक) का हो तो मृत्युलोक में भद्रा होती है, इन तीन भुवनों में भद्रा फिरती रहती है, ॥ ३४ ॥

**भाषा**—स्वर्ग लोक में भद्रा हो तो शुभ कार्य को करती है, और पाताल में भद्रा हो तो धन को देती है, जे कर भद्रा मृत्युलोक हो तो सर्व कार्यों का नाश करती है, ॥ ३५ ॥

**भाषा**—मृत्यु लोक में भद्रा हो तो सन्मुख जानिये पाताल में हो तो अधोमुख ॥ स्वर्ग में होय तो ऊर्ध्व मुख जानिये । इनमें भद्रा का वास जो कहा है उनमें सन्मुख जो भद्रा है सो मृत्यु के देने वाली है, इसमें शुभ कार्य करना वर्जित है ॥ ३६ ॥

दिने भद्रा यदा रात्रौ रात्रि भद्रा यदा दिने ।
तदा विष्टिकृतं दोषं नभवे त्सर्व सौख्यदा ॥ ३७ ॥

इति भद्रा निर्णयः ॥

भाषा—जो कृष्ण पक्ष में चौदस सप्तमी और शुक्ल पक्ष में अष्टमी पूर्णमा को भद्रा पूर्वदल दिवाकर संज्ञक हैं सो रात्रि में जान पड़ें और शुक्ल पक्ष में ४ । ११ कृष्ण पक्ष में ३ १० को पर दल की भद्रा रात्रि संज्ञक है सो दिन में पड़े तो भद्रा का दोष न मानिये यह भद्रा सुख की दाता है ॥ ३७ ॥

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयो षष्ठी कन्यायां मिथुनेष्टमी ॥ ३८ ॥
दशमीः वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एता स्तु तिथियो दग्धा शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ ३९ ॥

भाषाः—मीन और धन के सूर्य में द्वितीया तिथि दग्धा होती वृष और कुम्भ के में ४ मेष और कर्क के सूर्य में ६ कन्या और मिथुन के में ८ वृश्चिक और सिंह के में १० मकर और तुला के में १२ इन २ संक्रांतियों में इतनी तिथि दग्धा जानिये ये शुभ कर्म में वर्जित हैं ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

मासांते दिनमेकन्तु तिथ्यंन्ते घटिका द्वयं ।
घटिका तृतीयं भान्तं विवाहे परिवर्जयेत् ॥ ४० ॥

भाषा—मास के अंत का एक दिन तिथि अन्त की दो घड़ी और नक्षत्र के अन्त की तीन घड़ी यह विवाह में वर्जित हैं ॥ ४० ॥

मासांते म्रियते कन्या तिथ्यंते स्याद् पुत्रिणी ।
नक्षत्रांते च वैधव्यं बिष्टी मृत्युर्द्वयो र्भवेत् ॥ ४१ ॥

भाषाः—मासांत मे विवाह होय तो कन्या की मृत्यु होय तिथि के अंत में अपुत्री ( पुत्र रहित ) होय नक्षत्र के अन्त में विधवा होय । अगर भद्रा में विवाह हो तो स्त्री पुरुष दोनों को मृत्यु होय ॥ ४१ ॥

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पंचमी ।
बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥ ४२ ॥
द्वितीया बर्जनीया च प्रतिपच्च शनिश्चरे ।
कुलिकाख्योहि योगोयं विवाहादौ न शस्यते ॥ ४३ ॥

इति कुलिक योगः ॥

भाषाः—रविवार को सप्तमी चन्द्रवार को षष्ठी भौम को पंचमी बुधवार को चतु·

र्थी गुरु को तृतीया शुक्र को दूज और शनि को प्रतिपदा इनका नाम कुलिक है, यह विवाह में यत्न करके त्यागने योग्य है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ स्पष्ट चक्र में देख लेना ॥

## कुलिक योग चक्र मिदम् ॥

| र० | चं० | मं० | बु० | वृ० | शु० | श० | वार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | तिथि |

## अथ दश महा दोषानि ।

लत्ता पातो युतिर्वेधो यामित्रं बुध पंचकं ।
एकार्गलोपग्रहौ क्रांति साम्यं निगद्यते ॥ ४४ ॥
दग्धातिथि श्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः ।
एता न्दोषा न्परित्यज्य लग्नं संशोधये द्बुधः ॥ ४५ ॥

**भाषाः**—लत्ता १ पात २ युति ३ वेध ४ यामित्र ५ बुधपंचक ६ एकार्गल ७ उपग्रह ८ क्रान्तिसाम्य ९ दग्धातिथि १० यह दश दोष महा बलवान् हैं इन को छोड़ कर बुद्धिमान् पुरुष लग्न को सोधें ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

| सू० | चं० | मं० | बु० | वृ० | शु० | श० | रा० | ग्र० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ७ | ३ | २२ | ६ | २४ | ८ | ९ | नं० |

भौमा त्र्याकृति षड् जिनाष्ट नखभं हन्त्य ग्रतो लत्तया ।
खेटो र्कोऽर्कमितं शशी मुनिमितं पूर्णोन्सन्मालवे ॥ ४६ ॥

**भाषाः**—भौम जिस नक्षत्र का होय तिससे तीसरे नक्षत्र में लत्ता दोष । और बुध जिस नक्षत्र का होय तिससे २२ बाईसवें नक्षत्र में शुक्र से २४ में नक्षत्र में शनि के नक्षत्र से ८ वें नक्षत्र में राहु के नक्षत्र से २० में नक्षत्र में लत्ता दोष रवि के नक्षत्र से १२ वें नक्षत्र में पूर्ण चद्रमा होय तो सातवें नक्षत्र में यह दोष मालव देश में अशुभ होता है अन्य में शुभ ॥

## अथ पात दोषः ॥

| अ० | भ० | कृ० | रो० | मृ० | आ० | पु० | चि० | ऽनु. | ज्ये० | उ०षा | श्र० | ध० | श० | पू०भा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऽनु० रे० म० | उ०षा. उ०भा ह० | उ०फा स्वा० | मू० | ह० म० | मृ० उ०फा ऽनु० | रो० उ०षा | उ०भा उ०षा उ०फा | उषा | ह० मृ० म० | उ०षा ऽनु० | स्वा | स्वा० मू० रे० मृ० | उ०षा उ०भा रो० | ह० ऽनु० उ०भा |

### पात देखने की रीति ।

जेकर ऊपर के नक्षत्रों पर रवि हो और नीचले नक्षत्रों पर विवाह हो तो पात दोष होता है, यह विवाह श्रेष्ठ नहीं है ॥

यत्र ग्रहे भवेच्चन्द्रो ग्रह स्तत्र यदा भवेत् ।
युतिदोष स्तदा ज्ञेया विना शुक्रं शुभा शुभम् ॥४७॥

भाषा.—जिस नक्षत्र का चन्द्रमा होय उसी नक्षत्र का कोई और ग्रह हो तो उस को युति दोष कहते हैं, अकेला शुक्र न हो तो शुभ अत्यन्य शुभ है ॥ ४७ ॥

### वेध दोषः ।

| ऽभि. | उषा | श्र० | रे० | उभा | श० | भ० | पुन० | मृ० | ह० | उ०फा० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रो० | मृ० | म० | उफा | ह० | स्वा० | ऽनु० | मू० | उषा० | उभा | रो० |

नीचे के नक्षत्र विवाह के हों और ऊपर के नक्षत्रों पर यदि कोई ग्रह हो तो वेध दोष जानना ।

## सप्त शलाका वेध चक्रम् ।

जिस नक्षत्र के सन्मुख जो नक्षत्र है उसका उसी के साथ वेध जानो यथा ज्येष्ठा का पुष्य का ।

## ( सप्तशलाका वेध फलम् )

**यस्याः शशी सप्त शलाक भिन्नः पापैरपापैरथवा विवाहैः ।**
**विवाह वस्त्रेण च सा वृतांगी श्मशान भूमिं रुदती प्रयाति ॥४८॥**

**भाषा**:—जिस स्त्री के विवाह में चन्द्रमा पाप ग्रहों के सप्तशला का से विद्ध हो तो वह स्त्री विवाह के वस्त्रों को लेकर रोती हुई श्मशान भूमि में जावे (अर्थात्) शीघ्र ही विधवा होकर सकाम न होवे, ॥ ४८ ॥

## [ अथ यामित्र दोषः ]

**चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं लग्नभा स्मृतम् ।**
**शुभ युक्तं तदिच्छंति पाप युक्तं च वर्जयेत् ॥ ४६ ॥**

**भाषा**:—जो लग्न के नक्षत्र से चौदह नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है यदि सौम्य ग्रह का होय तो शुभ है ॥ ४३ ॥

चन्द्राद्धा लग्नतो वा पि ग्रहा वर्ज्या श्च सप्तमे ।
तत्रास्थिता ग्रहा नूनं व्याधि वैधव्य कारकः ॥ ५० ॥

भाषाः—चन्द्रमा के वा लग्न के नक्षत्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो भी यामित्र दोष होता है, यह निश्चय से व्याधि और विधवा करता है ।

## ॥ अथ पंचक दोषः ॥

धार्या तिथिर्मासदशाष्टवेदा संक्रान्ततो यात दिनैश्च योज्या ।
ग्रहैर्विभक्ता यदि पंचकस्याद्रोगस्तथाग्नि नृपचौर मृत्युः ॥५१॥
यद्यर्क वारे किलरोग पंचकं सोमे च राज्यं क्षितिजेन बह्निः ।
शौरी च मृत्यु सुरमंत्रचौरो बिवाहकाले परिवर्जनीयाः ॥५२॥
रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजाग्नि पंचकम् ।
उभयो संध्ययोर्मृत्यु मन्यकाले न निन्दितः ॥ ५३ ॥

इति पंचक दोषः ॥

भाषाः--तिथि १५ मास १२ दश १० अष्ठ ८ बेद ४ इन में संक्रान्ति के गत दिन जोड़े ( ग्रह )को अर्थः ९ से भाग ले शेष बचे तो पंचक जानिये, ऐसे ही पाँचों अंक विचार के रोग पंचक १२ में राज्य पंचक १० में चोर पंचक ८ में मृत्यु पंचक ४ में रविवार को जो रोग पंचक भौमको अग्निपंचक शनिको मृत्यु पंचक गुरु को चौर पंचक यह विवाह में वर्जित है । राज्य पंचक और अग्नि पंचक दिन में वर्जित हैं, और दोनों संधियों में मृत्यु-पंचक निन्दित है और समय वर्जित नहीं ॥ ५१ । ५२ । ५३ ॥

## अथ एकार्गल दोषः

| ऽगं | वि | श० | गं | व्या | व | व्या | प | वै | योगः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन विरुद्ध योगों मे सूर्य्य के नक्षत्र सहित अभिजित् के विवाह का नक्षत्र यदि विषम हाय तो एकार्गल दोष जानना ( अलम् ) | | | | | | | | | |

## अथ उपग्रह दोषः ॥

| विद्युत | शूल | सन्निपात | केतु | उल्का | निर्घात | कंप | वज्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ८ | १४ | १८ | ११ | २२ | २३ | २५ |

रवि के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र पर्य्यंत गिने पूर्वोक्त संख्या हो तो उपग्रह दोष जानना यह अशुभ फल के देने वाला है,

## इति उपग्रह दोषः

## ॥ अथ क्रान्ति साम्य दोषः ॥

| मे० | वृ० | मि० | क० | कं० | तु० | रवि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | म० | ध० | वृ० | मी० | कुम्भ | चन्द्र |

नीचे और ऊपर की राशियों पर यदि सूर्य और चन्द्रमा हों तो क्रांतिसाम्य दोष जानना यह बिवाह में निन्दित है,॥

दग्धातिथि प्रथम ही कह चुके हैं ॥

## ॥ इति दशदोषाः ॥

## अथ केषांचिद्दोषानां देशभेदेन परिहारः ।

उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु कलिङ्ग भङ्गेषु च पाततंभम् ।
सौराष्ट्र शाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे ॥५४॥

भाषाः—कुरुदेश वाह्लिक देश ( पश्चिम में हैं ) में उपग्रह नक्षत्र त्याज्य है, कालिंग वंग ( पूर्व में है ) मागधादि देशो में पात दोष चंडीश चंडायुध ) त्याज्य हैं, सौराष्ट्र शाल्व ( पश्चिम में ) लत्ता त्याज्य है, और वेध सर्वत्र त्याज्य है, कहीं युति दोष गौड़ मेयामित्रो यामुन प्रदेश में कहा है ॥ ५४ ॥

ना स्यान्मृक्षं न तिथिकरणं नैवलग्नस्य चिंता ।
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा ॥
नो वा योगो न मृति भवनं नैव जामित्रदोषो ।
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु शस्ता ॥५५॥

भाषा:—गोधूलि में नक्षत्र तिथि करण की कुछ जरूरत नहीं लग्न का विचार भी नहीं तथा वार अंशक मुहूर्त्त की भी चर्चा नहीं दुष्टयोग अष्टम शुद्धि जामित्र दोष कुछ नहीं होते यह मुनियों ने सर्व कार्य्यों में शुभ कही है, ॥ ५५ ॥

पिण्डी भूते दिन कृति हेमन्तर्तौ स्यादर्द्धा स्ते तप समये गोधूलिः ॥ सम्पूर्णा स्ते जलधरमाला काले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥ ५६ ॥

भाषा:—कि हेमंत शीतल काल मार्ग शीर्ष से ४ महीने सूर्य जब सायं काल में नीहारादि रहित किरण शून्य पिंडा कार हो तथा ( तप ) उष्ण काल चैत्र से ४ मास (अर्द्धास्त ) सूर्य विम्ब आधा अस्त होने में ( जलधरमाला ) वर्षाकाल श्रावण से ४ महीने सूर्य के सम्पूर्ण अस्त हुए में गोधूली होता है, समस्त शुभकृत्यों में गुण दाता है, ॥ ५६ ॥

अस्तं याते गुरु दिवसे सौर सार्के लग्ना न्मृत्यौ रिपुभवने लग्ने वेन्दौ । कन्या नाश स्तनु मदमृत्युस्थे भौमे वोढु र्लाभे धन सहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥ ५७ ॥

भाषा:—गोधूली का और प्रकार है कि गुरु वार के दिन सूर्यास्त हुए में गोधूली होती है, सूर्यास्त के पूर्व आधी घटी अर्द्धयाम होने से छोड़ दिया शनिवार में सूर्य देखे हो रहे में है, क्योंकि सूर्यास्त में कुलिक हो जायगा तथा सायं कालीन लग्न से ८ । ६ । १ वां लग्न में चन्द्रमा हो तो कन्या का नाश होवे, लग्न ७ । ८ भौम हो तो वरका नाश होवे, ऐसे मुख्य दोष गोधूली में भी वर्जित हैं, पंचाङ्ग शुद्धि भी मुख्य विचार्य है, और २ । ३ भाव में चन्द्रमा हो तो सुख देता है, गोधूली में हो तो और भी विशेषता है, ॥ ५७ ॥

## ॥ इति विवाह प्रकरणम् ॥

# अथ वधू प्रवेश प्रकरणम् ।

समाद्रि पंचांक दिने विवाहा द्वधू प्रवेशो ष्टिदि न्मन्तराले ॥
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमास दिनर्त्तवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥ १ ॥

भाषा:विवाह कर के विवाहिता कन्या का वरके घर में प्रवेश करने को वधू प्रवेश करते हैं, वह विवाह से १६ दिन के भीतर सम २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । १४ । १६ दिन में तथा ५ । ७ । ९ दिनों में यदि १६ दिन के भीतर न हो तो विषम मास विषम वर्षों में उक्त दिन में करना यदि५ वर्ष भी व्यतीत हो जांय तो समविषम नियम नहीं जब इच्छा हो शुभ पंचांग में करे ॥ १ ॥

ध्रुव क्षिप्र मृदु श्रोत्र वसु मूलमघा निले ।
बधू प्रवेशः सन्नेष्टो रिक्ता रार्के बुधैपरैः ॥ २ ॥

भाषा:—ध्रुव क्षिप्र मृदु श्रवण धनिष्ठा मूल स्वाती नक्षत्र तथा रिक्ता।४ । ९ । १४ तिथि भौम रवि बुधवार रहित दिन में बधू प्रवेश शुभ होता है, ॥ २ ॥

## ॥ अथ द्विरा गमन प्रकरणम् ॥

चरे दथौ जहायनं घटा लि मेषगं ।
रवौ रवीज्य शुद्धि योगतः शुभग्रहस्य वासरे ॥
नृ युग्म मीन कन्यका तुला वृषे विलग्नके ।
द्विरागमं लघुध्रुवे चरे स्रपे मृदूडनि ॥ १ ॥

भाषा:—वधू प्रवेश करके यदि वधू पिता के घर में जाकर फिर पति के गृह में आवे तो उसे द्विरा गमन कहते हैं, वह विषम १ । ३ । ५ । वर्ष में ११ । १ । ८ के रवि विवाहोक्त सूर्य शुद्धि गुरु शुद्धि हुए में शुभ ग्रहों के वार में ३ । १२ । ६ । ७ । २ ध्रुव लग्नों में लघु-ध्रुव चर मूलः मृदु-नक्षत्रों में करना।

दैत्ये ज्यो ह्यभिमुख दक्षिणे यदि स्या द्गच्छे युर्नहि शिशु गर्भिणी न वोढाः । वाल श्चे द्व्रजति विपद्यते नवोढा चे द्वन्ध्या भवति गर्भिणी स्वगर्भा ॥ २ ॥

भाषा:—विवाह में भर्ता के घर जाने में पत्रोक्त शुक्र संमुखादि शुद्धि नहीं देखते इस लिये द्विरागमन में देखना आवश्यक होने से शुद्धि कहते हैं, कि शुक्र संमुख तथा दक्षिण हो तो बालक, गर्भवती नव विवाहिता गमन न करे, इस प्रति शुक्र में बालक गमन करे तो विपत्ति (मृत्यु) पावे गर्भिणी गर्भ रहित होवे, नवोढा बांझ होवे,

अस्तंगते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ ।
दीपोत्सवदिने चैव कन्या भर्तृगृहं विशेत् ॥

भाषा.—किसी का मत है कि गुरु अस्त हो वा शुक्र अस्त हो वा संमुख दक्षिण हो व सिंहस्थ गुरु हो इन दोषों में भी आवश्यकता होने में (कन्या) नव वधू (दीपोत्सव) दीपमालिका से २ दिन प्रथम या २ दिन पिछे के दिन में भर्ता के घर जावे दोष नहीं ॥ २ ॥

नगर प्रवेश विषया ह्युपद्रवे करपीडने विबुध तीर्थ यात्रयोः ॥
नृपपीडने नववधू प्रवेशने प्रति भार्गवो भवति दोषकृन्नहि ॥३॥

भाषा:—पर चक्रागम-राजविद्रोह नृपपीडनादि उपद्रव से स्वनगर प्रवेश में किंवा दुर्भिक्षादि कष्टसे अन्यत्र गमन में तथा विवाह में (एवं) नगर कोट यात्रा देव यात्रा तीर्थ यात्रा में राजा के निकालने में और नव विवाहिता कन्या भर्ता के गृह में प्रवेश करने में संमुख शुक्रादि दोष नहीं होता ॥ ४ ॥

इति ज्योतिषदिवाकरे द्विरागमन प्रकरणम्

## विद्यारम्भ मुहूर्तः ।

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थ दायी ।
कर्त्तुश्चायुश्चिरमपि करोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ॥
नीहारांशौ भवति जड़ता पंचता भूमि पुत्रे ।
छायासूनावपि च मुनयः कीर्तयन्त्येवमाद्याः ॥ १ ॥

भाषा:--गुरु, शुक्र, बुध इन में विद्यारम्भ करने से उत्तम विद्या शीघ्र ही प्राप्त होती है और अधिकायु होता है, रविवार मध्यम हैं, चन्द्रवार को जड़ बुद्धि हो जाती है, भौम और शनि के दिन विद्यारम्भ करने से मृत्यु होती है । यह नारद, गर्गादि मुनियों का कथन है ॥ १ ॥

## चक्रमिदम् ।

| वारों के नाम | रवि वार | चन्द्र वार | भौम वार | सौम्य वार | गुरु वार | शुक्र वार | शनि वार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वारों के पति | शिव | रमा | स्कंध | विष्णु | ब्रह्मा | इन्द्र | काल |
| देवता | अग्नि | जल | पृथ्वी | हरि | इन्द्र | इन्द्राणी | ब्रह्मा |
| विचारयोग्य समय | ८ प्रहर | २ रात्री ४ प्रहर | ८ प्रहर | ८ प्रहर | ८ प्रहर | ८ प्रहर | ८ प्रहर |
| दोषादोष | रात्रिदोष | दिनदोष | दिनदोष | दिनदोष | रात्रिदोष | रात्रिदोष | दोष |
| [illegible] | उक्त कर्म सिद्ध | सर्वकाम सिद्ध | उक्तकर्म सिद्ध | कर्मसिद्ध | कर्मसि [illegible] | कर्मसिद्ध | उक्तकर्म सिद्ध |
| तैलाभ्यंग | ज्वर प्रद | कांतिप्रद | मृत्युप्रद | लक्ष्मीप्रद | वित्त नाशक | दुःखद | संपत्ति प्रद |
| वस्त्र परिधान | जीर्णहोय | सदा गीलारहे | शोकप्रा० | धन प्रा० | ज्ञान प्राप्ति | इष्ट सन्मान | मलिन रहे |
| श्मश्रु कर्म | १ मास आयुन्यून | ७ मास आयु वृ० | ८ मास आयुन्यून | ५ मास आयु वृ० | १० मास आयुवृ० | ११ मास आयुवृ० | ७ मास आयुन्यून |
| विद्या रंभ | मध्यम | जडत्व | मृत्यु | आ० वृ० अर्थसि० | तथैव | तथैव | मृत्यु |

## नक्षत्र परिज्ञान ॥

द्विनिघ्न मासस्तिथियुक् विधूनो ।
अशेषतः स्यादुडुशेष संख्या ॥
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः ।
कृष्णेद्विहीने मुनयो वदन्ति ॥ २ ॥

भाषा:—चैत्र से लेकर गत मास चलते मास तक दूने करे और उस में गत तिथि चलते दिवस समेत मिलावे मास दिन जोड़ एक न्यून करे शेष में २७ का भाग द शेष नक्षत्र को संख्या जाने ॥ २ ॥

## लता औषधी वा वृक्षारोपण ॥

सावित्र तिष्याश्विन वारुणानि मूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि ।
लतौषधी पादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥ ३ ॥

भाषा—हस्त, पुष्य, अश्विनी, शततारका, मूल, विशाखा, मृदु, ध्रुव, इन नक्षत्रों में लता औषधी और वृक्षों का लगाना शुभ है ॥

## कूपारम्भ के नक्षत्र ।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च शैवं पैत्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ।
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥४॥

भाषा:-हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शततारका, आर्द्रा, मघा, तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में पहले मुनीन्द्रों ने कूपारम्भ श्रेष्ठ कहा है ॥ ४ ॥

## द्रव्य देना वा स्थापित करना ॥

साधारणोग्र ध्रुव दारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तम् ।
हस्तेन विन्यस्त वसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्नियतं कदाचित् ॥ ५ ॥

भाषा:-साधारण उग्र ध्रुव और दारुण संज्ञक नक्षत्रों में जो दूसरे को द्रव्य दे वा स्थापित करे तो वह द्रव्य फिर प्राप्त हो न होय ॥ ५ ॥

## पुष्य नक्षत्र के गुण दोष ॥

परकृतमखिलं निहन्ति पुष्यो न खलु निहन्ति परन्तुपुष्यदोषम् ।
ध्रुवममृतकरोष्टमेपि पुष्ये विहितमुपैति सदैव कर्मसिद्धिम् ॥ ६॥

भाषा:-पुष्य दूसरे के दोष और अष्टमस्थ चन्द्र के दोष को हरता है, परन्तु उसी नक्षत्र का दोष हो तो वह दूर नहीं होता और इस नक्षत्र में किया हुआ कार्य्य सिद्ध होता है ॥ ६ ॥

हस्ताश्वि पुष्योत्तर रोहिणीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु ।
स्वातौ धनिष्ठा सुमघा सुमूले बीजोप्तिरुत्कृष्ट फल प्रतिष्ठा ॥७॥

भाषा:-हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृगशिर रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मघा, मूल इन नक्षत्रों में बीज बोनेसे खेत अधिक फलते हैं । ७॥

## हस्ती लेना वा देना ॥

हस्तेषु चित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौच पुष्ये च पुनर्वसौ च ।
प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुंजराणां कर्माणि गर्ग प्रमुखैः शुभानि ॥८॥

भाषा.—हस्त, चित्रा, अश्विनी, स्वाती, पुष्य, और पुनर्वसु इन नक्षत्रों में हस्ती लेना और देना और उस के अलङ्कार शृङ्गारादि सकल कर्म करना गर्गादि मुनियों ने शुभ कहे हैं ॥ ८ ॥

## अश्व लेना वा देना ॥

पुष्य श्रविष्ठाश्विन सौम्यभेषु पौष्णानिलादित्य करा ह्वयेषु ।
सर्वारुणर्क्षेषु बुधैः स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमानाम् ॥९॥

भाषा:—पुष्य, धनिष्ठा अश्विनी, मृगशिर, रेवती, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, शतभिषा इन नक्षत्रों में तुरङ्ग ले और दे और शृङ्गारादि कर्म करे ॥ ९ ॥

## गवादि पशुओं के क्रय विक्रय में वर्जित ॥

शुक्र वासव करेषु विशाखा पुष्य वारुण पुनर्वसु भेषु ॥
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रय क्रयविधिः सुरभीणाम् ॥१०॥

भाषा:—ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिषा, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों में गाय का बेचना और मोल लेना दोनों वर्जनीय है ॥ १० ॥

## तृण काष्ठादि संग्रह में वर्ज्य ॥

वासवोत्तरदलादि पंचके याम्यदिग्गमन गेह गोपनं ।
प्रेत दाह तृण काष्ठ संग्रहः शय्यका वितरणं च विवर्जयेत्॥११॥

भाषा: धनिष्ठा के उत्तरार्द्ध से लेकर पांच नक्षत्रों को पंचक कहते है इनमें दक्षिण दिशा का गमन और घर बनाना प्रेत दाह तृण काष्ठ संग्रह शय्यादि निर्माण करना वर्जित है ।। ११ ।।

## राज्याभिषेक नक्षत्र ॥

मैत्र शाङ्कर पुष्य रोहिणी वैष्णवेषु तिसृषूत्तरासु च ।
रेवती मृगशिरा श्विनीषु च क्ष्माभृतां समभिषेक इष्यते ॥१२॥

भाषा:--अनुराधा-ज्येष्ठा-हस्त पुष्य-रोहिणी-श्रवण तीनों उत्तरा-रेवती-मृगशिर अश्विनी इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक करना उचित है ।। १२ ।।

## अथ पंथा राहु चक्रम् ॥

स्युः धर्मे दस्रपुष्यो रग वसु जलप द्वीश मैत्राणयथार्थे याम्या ज्यां घ्रीं द्रकर्णा दिति पितृपवनो इन्यथो भानि कामे । वह्न्या द्रीं बुध्न्यचित्रा निर्ऋति विधिभगा स्त्यानिमोचोऽध्यरोहिण्यर्य म्णाब्जेन्दु विश्वातिमभादिन करर्क्षाणि पंथादिराहौ ॥ १३ ॥

| धर्म | अश्विनी | पुष्य | अश्लेषा | विशाखा | अनुराधा | धनिष्ठा | शतभिषा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अर्थ | भरणी | पुनर्वसु | मघा | स्वाती | ज्येष्ठा | श्रवण | पूर्वाभाद्रपदा |
| काम | कृतिका | आर्द्रा | पूर्वाफा० | चित्रा | मूल | अभिजि. | उत्तराभाद्रपदा |
| मोक्ष | रोहिणी | मृगशिर | उत्तराफा | हस्त | पूर्वाषाढ | उत्तराषा. | रेवती |

भाषा:--नक्षत्र २८ तिन के भाग ४ तिन के नाम प्रथम धर्म मार्ग के नत्रक्ष ७ दूसरे अर्थ मार्ग के नक्षत्र ७ तृतीय काम मार्ग के नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्ष मार्ग के नक्षत्र ७ इस प्रकार चार मार्गों के नक्षत्र जानिये तिन में मार्ग के नक्षत्र में सूर्य होय तो चन्द्रमा चार वर्गों के नक्षत्र में फिरता है तिन के फल कहते हैं ।। १३ ।।

## ( धर्म मार्गियों के फल )

धर्म मार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि ।
तदा शत्रु भयं तस्य ज्ञेयं तु विबुधै शुभम् ॥१४॥

भाषा:—धर्म मार्गी नक्षत्र में सूर्य और अर्थ मार्गी नक्षत्र में चन्द्रमा होय तो गमन करने से मार्ग में शत्रु भय होय ॥ १४ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
संहार श्च भवेत्तत्र भंगो हानि प्रजायते ॥ १५ ॥

भाषा—धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और चन्द्रमा दोनों होय तो संहार भंग हानि प्राप्ति होय ॥ १५ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये कामांशे चन्द्रमा यदि ।
विग्रहो दारुणं चैव चौरा कुल समुद्भवं ॥ १६ ॥

भाषा—धर्म मार्गियों में सूर्य और काम मार्गियों में चन्द्रमा होय तो विग्रह दारुण और चोर भय ॥ १६ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगते सति ।
ग्रह लाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः ॥ १७ ॥

भाषा:--धर्म मार्गी सूर्य और मोक्ष मार्गी चन्द्रमा ऐसे योग का फल गृह लाभ वा मार्ग सुख ॥ १७ ॥

## अर्थ मार्ग के फल ।

अर्थ मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्म स्थिते सति ।
गज लाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीः सर्वतो सुखी ॥ १८ ॥

भाषा:--अर्थ मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चन्द्रमा ऐसे योग का फल लाभ और लक्ष्मी प्राप्ति और सर्वदा सुखी होय ॥ १८ ॥

अर्थ मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
प्रथमं जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ १९ ॥

भाषा:--अर्थ मार्गी सूर्य और चन्द्रमा दोनों हों तो प्रथम कार्य सिद्धि हो और पीछे से भंग होजाय ॥ १९ ॥

अर्थ मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामांश संस्थिते ।
सर्व सिद्धि र्भवेत्तस्य जानीया न्नात्र संशयः ॥ २० ॥

भाषा:--अर्थ मार्गी सूर्य और काम मार्गी चन्द्रा होय तो सर्व कार्य सिद्धि होय॥२०॥

अर्थ मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्ष स्थिते यदि ।
भूमि लाभो भवेत्तस्य हर्ष युक्तः सुखीभवेत् ॥ २१ ॥

भाषा:--अर्थ मार्गी सूर्य और मोक्ष मार्गी चन्द्रमा होय तो भूमि लाभ व हर्ष युक्त सुख मार्ग में स्थिर पावै ॥ २१ ॥

## काम मार्गी के फल ।

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।
गजाश्वश्च विलभ्यंते राजसन्मान संभवात् ॥२२॥

भाषा:-काम मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चन्द्रमा होय तो हाथी घोड़ा-भूमि इनका लाभ और राज सन्मान पावै ॥ २२ ॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे चैवार्थ संस्थिते ।
सकलं जायते तस्य विघ्नभंगो विनिर्दिशेत् ॥ २३ ॥

भाषा:--काम मार्गी सूर्य और अर्थ मार्गी चन्द्रमा ऐसा योग होय तो सब विघ्नों का नाश होय ॥ २३ ॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव कार्य नाशं विनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥

भाषा:--काम मार्गी सूर्य और चन्द्रमा होय तो विग्रह और कार्य नाश होय॥२४॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगते पिवा ।
राज्ञो लाभो भवे तस्य स्वर्ण लाभं विनिर्दिशेत् ॥ २५ ॥

भाषा:--काम मार्गी सूर्य और मोक्ष मार्गी चन्द्रमा होय तो राजा से लाभ वा सुवर्ण लाभ होय ॥ २५ ॥

## मोक्ष मार्गी के फल ।

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्म स्थिते सति ।
हेम लाभो भवे तस्य सर्व कार्यं प्रसिद्ध्यति ॥ २६ ॥

भाषा:--मोक्ष मार्गी सूर्य व धर्म मार्गी चन्द्रमा होय तो हेम लाभ और सर्व सिद्धि हो ॥ २६ ।

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि ।
विफलं तस्य कार्यं च चोर राज रिपो भयम् ॥ २७ ॥

भाषा:--मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थ मार्गी चन्द्रमा हो तो राजा से चोर से और रिपु से भय होवे ॥ २७ ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामस्थितेसति ।
सर्व सिद्धि मवाप्नोति कार्ये च जयमेव हि ॥ २८ ॥

भाषा:--मोक्षमार्गी सूर्य और काम मार्गी चन्द्रमा होय तो सर्व कार्य सिद्धि और जय प्राप्ति हो ॥ २८ ॥

मोक्ष मार्ग गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव विघ्न स्तस्य भविष्यति ॥ २९ ॥

भाषा:--मोक्ष मार्गी सूर्य और चन्द्रमा हों तो दारुण विग्रह और विघ्न प्राप्ति होय ॥ २९ ॥

## ( पंथा राहु कर्म्म करने योग्य )

यात्रा युद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ।
व्यापारेषु च सर्वेषु पंथा राहुः प्रशस्यते ॥ ३० ॥

भाषा:—यात्रा युद्ध और विवाह में तो नगरादि प्रवेश में और व्यापार ( अर्थात् ) वस्तु लेने देने में राहु मार्ग में शुभदायक है ॥ ३० ॥

## अथ चौपहरा मुहूर्त्त श्री मच्छुन्दुर गोरख नाथ कृत-यात्रानिमित्तारम्भः

तृतीया त्रयोदशी का फल १ चौथ चतुर्दशी का १ पंचमी पूर्णमा का १ अमावस्या के दिन गमन न करे-मूल काम अच्छा न करे-कृष्ण वा शुक्ल पक्ष को तिथि को फल एक जिस मास की तिथि को जाय तो अपने चित्त से गमन करे- चन्द्रमा को बल भरणी भद्रा दिशा शूल योगिनी कालवास तिथि घात-नक्षत्र घात चन्द्रमा घात व्यतीतपात कल्याणी संक्रांति अनेक कुयोगों के दोष न होंगे यह गोरख नाथ ने कहा है जो तिथि साधि के यात्रा करेगा वह सुख पूर्वक कार्य साध अपने घर आवेगा--

## मुहूर्तचक्रमिदम् ॥

| पौष | माघ | फाल्गुण | चैत्र | वैशाख | ज्येष्ठ | आषाढ | श्रावण | भाद्रपद | आश्विन | कार्तिक | मार्गशिर | प्रथम प्रहर | द्वितीय प्रहर | तृतीय प्रहर | चतुर्थ प्रहर | तिथि | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | अर्थ लाभ | सौख्य | ऽति सुख | राज पद | १ | सुख | क्लेश | शुभ | गमनार्थ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | भला न हो | क्लेश | विघ्न होय | अति सुख | २ | दुःख | नेष्ट | विघ्न | मध्यम |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | अर्थप्राप्ति | राजपद | अति सुख | विघ्न होय | ३ | द्रव्यक्लेश | दुःख | अर्थ प्रा० | धन प्राप्त |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | ०३ | क्लेश हो | अशुभ | कार्य सिद्धि | अति भय | ४ | लाभ | सुख | मंगल | धन लाभ |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | अर्थ लाभ | मित्रलाभ | शत्रु भय | कार्य सिद्धि | ५ | लाभ | धनलाभ | धनागम | सुख हो |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | संकटहोय | क्लेश | सर्व सुख | ऋण देना | ६ | शून्य | लाभ | मित्र लाभ | अर्थ प्राप्ति |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | विलम्बहो | ऽर्थाप्तिः | यमघंट | सर्व सुख | ७ | लाभ | कष्ट | द्रव्य लाभ | सुख प्राप्ति |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | यमघंट | अशुभ | सर्व सुख | यमघंट | ८ | कष्ट | सुख | क्लेश | सौख्य |
| ९ | १० | ११ | १२ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | अर्थलाभ | अशुभ | सुखसे आ० | सर्व सुख | ९ | सुख | लाभ | कार्य सि० | कष्ट |
| १० | ११ | १२ | १ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | चिंताव्याधि | चिंता होय | कार्य सिद्धि | सुखसे आ० | १० | क्लेश | दुःख | अर्थ गवन | धन प्राप्ति |
| ११ | १२ | १ | २ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | विग्रह | विघ्न होय | सुख पावै | सुखाप्तिः | ११ | मृत्यु | लाभ | द्रव्य नाश | मृत्यु प्रद |
| १२ | १ | २ | ३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | मृत्यु | मृत्यु | अशुभ | कार्य सिद्धि | १२ | सुख | मृत्यु | अशुभ | कष्ट प्रद |

इति ज्योतिष दिवाकर मुहूर्ताध्यायः ॥

## आयादि साधन।

**गृहेश करमानेन गृहस्या यादि साधयेत् ।**
**करोऽश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥ ३१ ॥**

**भाषा**;-गृह के स्वामी के हस्तमान से वा अंगुलोमान करके इष्ट आयादि साधन करे ॥ ३१ ॥

## क्षेत्रफलम् ॥

**विस्तार गुणितं दैर्घ्यं गृह क्षेत्र फलं लभेत् ।**
**तत्पूर्ववसुभिर्भक्तं शेषमायोध्वजादिकः ॥ ३२ ॥**

**भाषा** —चौड़ाई लम्बाई को परस्पर गुणने से क्षेत्रफल जानिये और उसी को ८ का भाग देने से शेष ध्वजादि आय जानिये ।। नाम चक्र में देखना ।। ३२ ॥

| ध्वजा १ | धूम २ | सिंह ३ | श्वान ४ | बैल ५ | गर्दभ ६ | हस्ती ७ | काक ८ | नाम शेषः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विप्र को | | क्षत्रिय | | वैश्यको | | शूद्रादि | | वर्णविहित आय |
| कृतार्थता | मरण | जय | कोप | राज्य | दुःख | सुख-प्राप्ति | मृत्यु | फल |

## अथ योगिनी दिशाशूलादि लिख्यते ।

**योगिनीचक्रमिदम् ॥** **कालचक्रमिदम् ॥**

| ८।३०ई. | १।९पूर्व | ३।१०आ. | ई० | पूर्व शनि | आग्नेय शु० |
|---|---|---|---|---|---|
| २।१०उ. | | ५।१३द. | उ० सू० | | द० बृ० |
| ७।१५वा. | ६।१४प. | ४।१२नै. | वा.चन्द्रमा | प० भौ० | नै० बु० |

**योगिनी फलम् ॥**
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछित दायिनी । दक्षिणे धनहन्त्री च सन्मुखे मरणप्रदा ॥

**दिक्शूल फलम् ॥**
शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वं दक्षिणस्यां दिशां गुरौ । सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तरे ॥

## चन्द्रवासचक्रम् ॥

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर |
|---|---|---|---|
| मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
| सिंह | कन्या | तुल | वृश्चिक |
| धन | मकर | कुंभ | मीन |

## चन्द्रवासफलम् ॥

सन्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा ।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्र धन क्षयम् ॥

## इति तृतीयोऽधिकारः सम्पूर्णः ॥

ओ३म्

# अथ प्रश्नाधिकारः

## अथ कार्याकार्य प्रश्नः ।

दिशा प्रहर संयुक्ता तारका वार मिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ १ ॥
फल—पंचैके त्वरिता सिद्धिः षट तुर्ये च दिनत्रयम् ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥२॥

**भाषा:**—पृच्छक का मुख जिस दिशा को हो वह दिशा और प्रहर वार-नक्षत्र-इन सब को एकत्र करके ८ का भाग दे शेष बचे तो शुभाशुभ फल जानिये ॥ १ ॥ फल— एक १ वा ५ बचे तो शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होय और ६ वा ४ बचें तो ३ दिनों तक और ३ वा ७ बचें तो बिलम्ब से कार्य सिद्धि होय और २ वा ८ बचें तो कार्य सिद्धि न होय॥२॥

## अंकप्रश्न ॥

अंकं द्विगुणितं कृत्वा फलना माक्षरैं युतं ।
त्रयोदश युतं कृत्वा नवभि र्भाग माहरेत् ॥ ३ ॥
फल—एके हि धन वृद्धि श्च द्वितीये च धनक्षयः ।
तृतीये क्षेम मारोग्यं चतुर्थे व्याधिरेव हि ॥ ४ ॥
स्त्रीलाभः पंच शेषे स्यात्षष्ठे बन्धु बिनाशनम् ।
सप्तमे ईप्सिता सिद्धिरष्टमे मरणं ध्रुवम् ॥
नवमे राज्य संप्राप्ति र्गर्गस्य वचनं तथा ॥ ५ ॥

**भाषा:**—जितने अंक का नाम होय उनको दूना करे फल और नाम के अक्षरों को मिलावे । ३ और जोड़े १ नव से भाग ले शेष बचे का फल कहे, एकसे वृद्धिधन २ से धनक्षय ३ से आरोग्य ४ से व्याधि ५ से स्त्रीलाभ ६ से बन्धुनाश ७ से कार्यसिद्धि ८से मरण ९ से राज्याप्ति यह गर्ग मुनि का वचन है, ॥ ५ ॥

नवग्रहात्मक चक्रम् ॥

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ३ | ८ |
| ९ | ५ | १ |
| २ | ७ | ६ |

नवग्रहात्मकं यंत्रं कृत्वा प्रश्नं निरीक्षयेत् ।
फलं पूर्वोक्त मेवात्र द्रष्टव्यं प्रश्नको विदैः॥६॥

नवग्रहात्मक यंत्र बना के उस में अवलोकन करे जो अंक आवे उस का फल पूर्वोक्त प्रकार से जानना ॥६॥

## दूसरामत ॥

सप्त त्रयांके कथयंति वार्ता नवैक पंचत्वरितं वदन्ति ।
अष्टौ द्वितीये नहिकार्यसिद्धी रसाश्च वेदा घटिका त्रयं च ॥७॥

भाषा:—पूर्व जो अंक कहे हैं, तिन के प्रमाण से कृत्य परन्तु फल भिन्न है, शेष ७ वा ३ रहैं तो वार्ता करना जानिये, और ९ । १ । ५ रहैं तो शीघ्र कार्य होय २ । ८ बचे तो कार्य नहीं होय ६ । ४ रहैं तो ३ घडी में कार्य होय ॥ ७ ॥

## वार नक्षत्रयुक्त पन्था प्रश्न ॥

बुधे चन्द्रे तथा मार्गे समीपे गुरुशुक्रयोः ।
रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परि पीड्यते ॥
निर्जीवः सप्त ऋक्षाणि सजीवो द्वादशे भवेत् ।
व्याधितो नवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्या तु चान्द्रभम् ॥८॥

भाषा:—बुध अथवा शुक्र को प्रश्न करे तो मार्गमें जानना और जो गुरु तथा शुक्र को प्रश्न करे तो समीप आया जानिये रवि तथा भौम को दूर जानिये ॥ और शनि को पीडा युक्त जानिये सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम प्रथम ७ नक्षत्र पर्यंत चन्द्रमा आवे तो निर्जीव द्वितीय १२ नक्षत्र तक चन्द्रमा आवे तो जीवता जानिये तृतीय नव नक्षत्र पर्यंत चन्द्रमा आवे तो रोगोत्पत्ति जानिये इस तरह पंथा प्रश्न जानिये ॥ ८ ॥

## नष्ट वस्तु प्रश्न ॥

तिथि वारं च नक्षत्रं लग्नं वन्हि विमिश्रितम् ।
पंचभि स्तुहरे द्भागं शेषं तत्वं विनि र्दिशेत् ॥ ९ ॥

फल-पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयं अप्सु क्योक्षि न लभ्यते ।
तेजस्तु राजसंज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत् ॥ १० ॥

भाषा:—प्रश्न तिथिवार नक्षत्र लग्न इन में ३ मिला के ५ का भाग दे शेष १ बचे तो पृथ्वी में २ बचे तो जल में परन्तु मिले नहीं ३ रहे तो आकाश में वह भी न मिले ४ बचे तो तेज में वह राज में गई ५ बचे तो वायु इस में शोक जानिये ॥ १ ॥१० ॥

## गर्भिणी प्रश्न ॥

तत्पृच्छलग्ने रवि जीव भौमे तृतीय सप्ते नव पञ्चमे च ।
गर्भः पुमांचै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीता ॥११॥

भाषा:—गर्भिणी जिस लग्न में प्रश्न करे उसी लग्न से ज्योतिषी प्रश्न का फल कहे कि लग्न के तृतीय वा सप्तम का नवम पंचम स्थान में रवि भौम गुरु होंय तो पुत्र और इन्हीं स्थानों में अन्य ग्रह पड़े होंय तो कन्या कहै ॥ ११ ॥

## अन्यदपि

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितम् ।
मुनिभक्तं समेशेषं कन्या च विषमे सुतः ॥ १२ ॥

भाषा – जिस समय कोई प्रश्न करे कि अमुक स्त्री के कन्या होगी या पुत्र तब उसी समय के तिथि वार- नक्षत्र और उस स्त्री के नाम के अक्षरों को जोड़ कर ७ सात से भाग ले जो शेष सम बचे तो कन्या विषम बचे तो पुत्र कहै, ॥ १२ ॥

## मुष्टिप्रश्न

मेषं रक्तं वृषे पीतं मिथुने नील वर्णकं ।
कर्के च पांडुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितम् ॥ १३ ॥
कन्यायां नीलमिश्रं तु तुलायां पीत मिश्रितं ।
वृश्चिके ताम्र मिश्रं च चापे पीतं विनिश्चितम् ॥
नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णं मीने पीतं वदेत्सुधीः ॥ १४ ॥

भाषा – प्रश्न कर्ता की मुष्टि में किस रंग की वस्तु है, तिस के बताने की युक्ति जो मेष लग्न होय तो लाल वृष होय तो पीत मिथुन होय तो नील, कर्क पांडुर-सिंह धूमवर्ण कन्या नील मिश्रित तुला पीतमिश्रित वृश्चिक ताम्रमिश्रित धन पीतमिश्रित मकर और कुम्भ लोहमय मीन पीतवर्ण की वस्तु कहनी स्पष्ट चक्र में देखना ॥ १४ ॥

( चक्र मिदम् )

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | रक्त वर्ण होता है | पीत वर्ण होता है | नील वर्ण होता है | पांडुर वर्ण होता है | धूम्र वर्ण होता है | नील मिश्रित वर्ण | पीत मिश्रित वर्ण | ताम्र मिश्रित वर्ण | पीत मिश्रित वर्ण | लोह मय वर्ण | लोह मय वर्ण | पीत वर्ण |

## [ लग्न से मन चिंतित प्रश्न कहना ]

मेषे च द्विपदां चिंता वृषे चिंता चतुष्पदां ।
मिथुने गर्भचिंता च व्यवसायस्य कर्कटे ॥
सिंहे च जीव चिंता स्यात्कन्यायां च स्त्रिया स्तथा ।
तुले च धनचिंता हि व्याधिचिंता च वृश्चिके ॥
चापे च द्रव्य चिंता स्या न्मकरे शत्रु चिंतनम् ।
कुम्भे स्थानस्य चिन्ता स्यान्मीने चिंता च दैविकी॥१५॥१६॥१७

**भाषा**:-लग्न से प्रश्न का उत्तर-मेष में प्रश्न करे तो मनुष्य की चिन्ता कहिये-वृष में-गाय भैंसादि की-मिथुन में गर्भ की कर्क में व्यापार की सिंह में जीव की कन्या में स्त्री की तुला में धन की वृश्चिक में रोग की धन में द्रव्य की मकर में शत्रु की-कुम्भ में स्थान की मीन में भूत पिशाचादि बाह्य बाधा की चिंता कहनी ॥१५॥१६॥ १७ ॥

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृ० | धन | मकर | कुम्भ | मीन | राशि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मनुष्य | चतुष्पद | गर्भ | व्या-पार | जीव | स्त्री | धन | रोग | द्रव्य | शत्रु | स्थान | पिशाचादि. | चिंता |

## [ रोगी प्रश्न ]

तिथिवारं च नक्षत्र लग्नं प्रहर एव च ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फल मादिशेत् ॥१८॥

भाषाः-तिथि वार नक्षत्र प्रहर और लग्न इन सब को एकत्र करके ८ का भाग देना शेष बचे से फल कहना ॥ १८ ॥

हयाग्नौ देवता बाधा पैत्री वै नेत्र दंतिषु ।
षट् चतुर्षु भूत बाधा न बाधा एक पंचके ॥१९॥

७ वा ३ बचें तो देवबाधा २ । ८ । पितरों की । ६ । ४ भूतों की १ । ५ बचें तो बाधा नहीं ॥ १९ ॥ चक्र में देख लेना ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शे० अं० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं बाधा | पितृ बाधा | देव बाधा | भूत बाधा | बाधा नहीं | भूत बाधा | देव बाधा | पैतृ बाधा | फल |

## [ मेघ प्रश्न ]

आषाढस्या सितेपक्षे दशम्यादि दिनत्रये ।
रोहिणी काल माख्याति सुखं दुर्भिक्ष लक्षणम् ॥२०॥
रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघ डम्बरम् ।
मध्यान्हे जलविन्दुस्या त्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥२१॥

भाषाः—आषाढ़ कृष्ण पक्ष की दशमी वा एकादशी वा द्वादशी इन तीनों दिनों में रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष, मध्यम, दुर्भिक्ष, यह तीन फल तिथि क्रम से जानने और रात्रि मेघ रहित होय प्रातःकाल मेघ गर्जे मध्यान्ह में बून्दें पड़ें ऐसे लक्षण जिस सम्वत्सर में होंय उस में महर्घता जानिये ॥ २० ॥ २१ ॥

कुंभः कर्कवृषौ मीनमकरौ वृश्चिकस्तुला जललग्नानि चोक्तानि
लग्ने च्वेतेषु सूर्यभम् । लभत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ॥२२॥

भाषाः—कुम्भ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक, तुला, यह ७ जल लग्न है, इन में जो सूर्य नक्षत्र मिलै तो वर्षा जानिये ॥ २२ ॥

## [ अथ नष्ट धन प्रश्नः ]

लग्नेश जाया धिपतीत्थशाली लग्ने श्वरं यच्छति तस्करोर्थम् ।
सूर्ये विलग्ने स्तमिते शशांके न लभ्यते यद्द्रविणं विनष्टम् ॥२३॥

भाषाः—लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो तो चोर आप ही देदेगा जो सूर्य लग्न में चन्द्रमा सप्तम में हो तो नष्ट धन न मिले ॥ २३ ॥

कर्मेशलग्ना धिपतीत्थ शाले चौरः स्वमादाय पुरात्पलायते ।
चन्द्रे स्तये चार्ककरप्रविष्टे तल्लभ्यते नष्ट धनं सत स्करम् ॥२४॥

भाषाः कर्मेश और लग्नेश इत्थशाली हो तो चोर द्रव्य लेकर नगर से भाग गया चंद्रमा और सप्तमेश अस्तंगत हो तो धन सहित चोर पकड़ा जायगा ॥ २४ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले तल्लभ्यते राज कुला च चौर्यम् ॥
त्रि धर्म पद्यून पतीत्थशाले त्वन्यत्र देशा द्गमने तदाप्तिः ॥२५॥

भाषाः—दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो तो राज कुल से चोर पकड़ा जावे तृतीय नवम के स्वामी सप्तमेश से इत्थशाली हों तो और किसी देश में पकड़ा जावेगा ॥२५॥

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तम गते पि वा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीये नैव चोरितम् ॥ २६ ॥

भाषाः—लग्न में स्थिर राशि वा स्थिर नवांश वा वर्गोत्तमांश हो तो वह धन वहीं है किंतु अपने ही मनुष्य ने चोरी करी ॥ २५ ॥

आदि मध्या वसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशेथवा मध्ये गृहांते च वदे द्धनम् ॥ २७ ॥

भाषा:—लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो घर के द्वार समीप वस्तु है, मध्य द्रेष्काण हो तो घर के मध्य में है तृतीय द्रेष्काण हो तो गृह के पीछे होगा ॥ २७ ॥

नष्टं क दिशि प्राप्यं पृच्छाया लग्नगे विधौ प्राच्याम् ।
स्व स्थाने याम्यायामस्तते वारुण्यां वा भुव्युदीच्याम् ॥२८॥

भाषा:नष्ट वस्तु कहां मिलेगी ऐसे प्रश्न में चन्द्रमा लग्न में हो तो पूर्वदिशा में दशम हो तो दक्षिण में सप्तम हो तो पश्चिम में चतुर्थ हो तो उत्तर में मिलेगी ॥ २८॥

यदिनेन्दुःकेन्द्रेत चत्वारिंशांशकै श्च पंचयुतैः ।
भागोदिक् क्रम उक्तो वह्नय वनी वायु वारि राशौ वा ॥२९॥

भाषा:—जो चन्द्रमा केन्द्र में न हो तो चन्द्रस्थित अंशक से ४५ वें अंश में जो राशि है, उस को जो दिशा वा उपदिशा वा अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, में से जो उपराशि का तत्व है, उस में नष्ट द्रव्य कहना ॥ २१ ॥

इत्थं चौरज्ञाने चौरः सूर्ये गृहेश्वरस्य पिता ।
चन्द्रे माता शुक्रे भार्या मन्दे सुतो भवेन्नीचे ॥ ३० ॥
जीवे गृहप्रधानं भौमे पुत्रोथवा भ्राता ।
ज्ञे स्वजनो मित्रं वा ज्ञात्वेत्थं पुण्य सह ममावेश्यम् ॥ ३० ॥

भाषा.—उक्त प्रकारों से चोर जानने के और विधि है, कि वह सूर्य हो तो उस घर के स्वामी का पिता चोर है, एवं चन्द्रमा से माता शुक्रसे स्त्री शनि से पुत्र वा दास बृहस्पति से घर का श्रेष्ठ मंगल पुत्र भाई सौम्य ( बुध ) मित्र होगा ऐसा ज्ञान कर पुण्य सहम देखना ॥ ३० । ३१ ॥

प्रति कुंचिकयोपहृतं सिते तिथि ज्ञे प्रपंच करः ।
चौरस्य वयो ज्ञाने सिते युवाज्ञे शिशुर्गुरौ मध्यः ।
तरुणो भौमे मन्दे वृद्धोर्के स्यादति स्थविरः ॥ ३२ ॥

भाषा;—सप्तम में शुक्र चन्द्र दृष्ट हो तो दूसरी (कुंचो) चाबी से खोल कर चोरी भई तथा बुध हो तो अपूर्व मनुष्य प्रपंचो चोर है, और चोर की अवस्था ज्ञान में शुक्र से युवा-बुध से बालक- बृहस्पति से मध्य वयस्था मंगल से-तरुण शनि से बूढ़ा सूर्य्य से अति बूढा जानना ॥ ३१ ॥

अथ चतुर्थ गृहे तुर्यंश्वरोथ यः स्याद् ग्रह हस्ततो ज्ञेयम् ।
मन्द मलिन स्थानं चन्द्रेम्बुनि गीष्पतौ स्वरारामे ॥ ३२ ॥
भौमे वह्नि समीपे रवौ गृहाधीश श्वरासन स्थाने ।
तल्पेशुक्रे सौम्ये पुस्तक वित्ता न्नयान पार्श्वे च ॥ ३३ ॥

भाषाः—चतुर्थांश चतुर्थ में जो ग्रह हो वा तूर्यंश वलो जो हो उस से चोरी द्रव्य को स्थान कहना ( यथा ) शनि से मलिन स्थान चन्द्रमा से जलाशय वा हाथ पैर धोने के स्थान- बृहस्पति से देव समीप वा बगीचा भौम से अग्नि समीप सूर्य्य से गृहपति के बैठने का स्थान शुक्र, से शयन का स्थान बुध से पुस्तक धन अश्व वा डोला आदि सवारी के समीप कहना ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

## ( अथ ग्रन्थान्तरे स्वामि भृत्य प्रश्नः )

शीर्षोदये सौम्ययुते क्षिते वा साम्यै द्वितीया ष्टम सप्तमस्थैः ।
तृतीय लाभा रिगतै श्च पापै सौख्यार्थ लाभो नृपसेवकस्य ॥ ३५ ॥

भाषाः—स्वामी भृत्य प्रश्न में शुभग्रह शीर्षोदय राशि में शुभग्रहों से दृष्ट वा युक्त २ । ८ । ७ में हों और ३ । ११ । ६ स्थानों में पापी हों तो राज सेवी को सुख तथा धन लाभ होवे ॥ ३५ ॥

लग्ना द्वितीये मदने ष्टमर्क्षे वित्त च्चयं संभ्रम मार्ति मृत्युम् ।
कुर्वंति पापाः क्रमशो नरेंद्रा द्भृत्यस्य तस्मा त्परि वर्जयेत्तं ॥ ३ ॥

भाषाः—लग्न से दूसरे हों तो भृत्यका राजासे धनक्षय होवे जो सप्तम हो तो संभ्रम अष्टम हो तो मृत्यु होवे इस से इन स्थानों में पापी हों तो सेवा न करनी चाहिये॥३६॥

## ( अथान्य स्वामि प्रश्नः )

षष्ठे श्वरेण व्ययपेन केन्द्रे यदीत्थशालं कुरुते विलग्नप ।
प्रष्टु स्तदान्यः प्रभु रर्थदःस्यादतःप्रतीपन्न भवे त्परः प्रभुः॥३७॥

भाषा—लग्नेश से वा व्ययेश से जो केन्द्र में इत्थशाल लग्नेश करे तो प्रष्टा को और स्वामी धन देने वाला होगा विपरीत में और प्रभु न होवे ॥ ३७ ॥

लग्ने श्वरे स्वर्क्ष गते स्वतुंगे केन्द्रे स्थिते शीत करे स्य शाले।
शुभ ग्रहैः दृष्ट युते बलान्विते प्रष्टुर्निज स्वाम्य मितार्थ लाभः॥३८॥

भाषाः—लग्नेश अपनी राशि वा उच्च में केन्द्र स्थित १।४।७।१०। हो कर चन्द्रमा से इत्थशाली हो तथा शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान हो तो प्रष्टा को अपने ही स्वामी से असंख्य धन मिले ॥ ३८ ॥

## अथ स्वप्न प्रश्न

लग्नेर्के नृपतिः वन्हि शस्त्रं पश्यति लोहितम्।
श्वेतं पुष्पं सितं वस्त्रं गंधं नारीं च शीतगौ ॥ ३९ ॥

भाषाः—लग्न में सूर्य हो तो राजा अग्नि शस्त्र और लाल रंग देखे। चन्द्रमा हो तो श्वेत रंग के पुष्प. चंदन, और स्त्री देखे ॥ ३९ ॥

रक्तं मांसं प्रवालं च सुवर्णं धरणीसुते बुधे खे गमनं जीवे धनं बंधु समागमम् ॥ ४० ॥

भाषाः—भौम हो तो रुधिर मांस मूंगा सुवर्ण बुध होतो आकाश पर्वत शृङ्गारादि में गमन बृहस्पति से धन तथा बंधु से मेलन ॥ ४० ॥

जला वगाहनं शुक्रे शनौ तुंगावरोहणम्।
लग्न लग्नांश पवशात्स्वप्नो वाच्योथवा बुधैः ॥४१॥

भाषाः—शुक्र हो तो जल क्रीडा शनि हो तो ऊंचे स्थान पर आरोहण होवे अथवा लग्न तथा लग्न नवांशपति से पंडितों ने स्वप्न कहा है ॥ ४१ ॥

सर्वोत्तम बलाद्वापि खेटा द्बुध्या विचिंतयेत्।
बलसाम्ये फलंमिश्रं दुःस्वप्नो निर्बलै खगैः ॥४२॥

भाषाः—अथवा सर्वोत्तम बली ग्रह से बुद्धि से विचार करना जो बहुतों का बल समान हो तो फल मिश्रित और निर्बल से दु स्वप्न होवे ॥ ४२ ॥

शुभं कार्य्य मिदं मे सिद्धयति लग्ने श्वरेथ चन्द्रमसि।
शुभ मुथशिलगे.केन्द्रे तन्निकटे वाथ सिद्धिः स्यात् ॥४३॥

भाषाः—मेरा गुप्त कार्य्य सिद्ध होगा वा नहीं ऐसे प्रश्न में लग्नेश तथा चन्द्रमा शुभ ग्रह से मुथशिलो केंद्र में वा उस के समीप हो तो गुप्त कार्य्य सिद्ध होगा ॥४३॥

## उत्पातों का फल ॥

रात्रौ धनु र्दिने उल्का तारा चैव दिने तथा ।
रात्रौ तु धूम केतुश्च भूकंपश्च तथै वहि ॥
एतानि दुष्ट चिन्हानि देश क्षय कराणि च ॥४४॥

भाषाः—रात्रि में धनुष दिन में उल्का तथा नक्षत्र पात और रात्रि में धूम केतु का उदय तथा भूमि कंप ऐसे दुष्ट चिन्ह लक्षित होंय तो देश क्षय कारक जानिये ॥४४॥

## अथ केरल मतेन प्रश्नः ।

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हेतु फलं वदेत् ।
सायं काले वदेन्नद्यः रात्रौ देवतां वदेत् ॥ ४५ ॥

कोई पूछे कि यह मास मेरे को कैसा होगा उसका ज्ञान

संक्रान्त्या धर नक्षत्रा दात्म भावादि गण्यते ।
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकंषट्कं पुनः पुनः ॥
पंथा भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥ ४६ ॥

भाषाः—संक्रांति के नक्षत्र से अपने नक्षत्र पर्य्यंत गिने ।

फिर उनका फल—अगर तीन तक हों तो उस को मार्ग चलना होगा ९ नव तक हों तो भोग १२ तक हों तो व्यथा १८ पर्य्यन्त हों तो वस्त्र २१ तक हों तो हानि २७ पर्य्यन्त अधिक धन ॥ १ ॥

# अथ केरलमतेन प्रश्नः ॥

| अष्टकवर्गः | ध्वज | धूम्र | सिंह | श्वान | वृष | खर | गज | ध्वांक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रश्नाक्षराणि | अइउएओ | कखगघङ | चछजझञ | टठडढण | तथदधन | पफबभम | यरलव | शषसह |
| प्रश्ननिर्णय | अस्ति | नास्ति | अस्त्येव | नहिं | अस्ति | नास्ति | अस्ति | नास्ति |
| किं प्रश्नः | धातु | धातु | मूलस्य | जीवस्य | जीव | जीव | मूल | जीवस्य |
| प्रवासी प्रश्नः | क्षेम | रोगग्रस्त | आनन्द | दुःखी | सुखी | दुंखी | सुख | कष्ट |
| प्रवासीचरस्थिरप्र. | स्थिर | अतिकष्ट | चंचल | चंचल | अति | दुःख | चर | दुःख |
| ,, गमनागमनप्र. | समीपेव | समीपेव | दूरस्थ | पुनर्गता | मार्गस्थ | मार्गस्थ | दूरस्थ | पुनर्गता |
| मुष्टि प्रश्नः | पत्र | अस्थि | फल | दारु | धान्य | तृण | जीव | पुष्प |
| धान्यज्ञानम् | कनक | तिल | पीतान्न | दाल | अक्षत | चणे | गुड | जौ |
| मुष्टिवर्णज्ञानम् | कौसुंभ | श्वेत | लोहित | मिश्रनील | पीत | ख० | श्याम | मिश्रित |
| रोगीप्रश्नः | सुखी | दुःखी | सुखी | दुःखी | सुखी | दुःखी | सुख | दुःख |
| कष्टदिवसानि | १॥मास | २ मास | १॥ मास | १ मास | अर्धमास | १ मास | सप्ताह | २ मास |
| नष्टलाभप्रश्नः | लाभ | हानि | लाभ | हानि | लाभ | हानि | लाभ | हानि |
| नष्टदिकज्ञानम् | पूर्व | आग्नेय | दक्षिण | नैर्ऋत | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान |
| वस्तुस्थानज्ञानम् | ऊखले | अग्निसमीपे | वने | अन्तरिक्ष | मांडगते | कमस | स्वगृह | मुविस्थ |
| चौरजाति प्रश्नः | विप्र | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | धानक | भृत्य | सेवक | नाई |
| देवपूजा | भैरव | भगवती | रविः | यवसुत | रुद्रगण | शारदा | विनाय. | पितर |
| जयहानि | हानि | जय | हानिः | जय | हानि | जय | हानि | हानि |
| अभगमागमौ | आगम | नआगम | आगम | नआगम | आगम | नआगम | आगम | नआगम |
| बन्दीमोक्ष प्रश्नः | नमोक्षः | मोक्ष | नमोक्ष | मोक्षः | नमोक्ष | मोक्ष | नमोक्ष | मोक्षणं |
| दिवसज्ञानम् | सप्ताह | १ वर्ष | १५दिन | षटमास | १ मास | षटमास | १मास | १ वर्ष |
| कार्यसिद्धि प्रश्नः | स्थिर | नसिद्धि | कलह | अतिकाल | शीघ्र | दीर्घकाल | स्थिर | नास्थिर |
| विवाह प्रश्नः | लाभः | हानिः | लाभ | हानिः | लाभः | हानि | लाभ | हानिः |
| व्यवहार प्रश्नः | शुभः | कलहः | श्रेष्ठः | कलह | शुभः | कलह | श्रेष्ठ | कलह |
| पुत्रहोगा वा कन्या | पुत्र | कन्या | पुत्र | कन्या | कन्या | कन्या | पुत्र | कन्या |
| प्रवासीदिनानि | स्वल्प | सप्ताह | एकविंश. | १ मास | १॥मास | २ मास | २मास | १ वर्ष |
| आयुप्रश्नः | १०० | १ वर्ष | १०० | २० | ६० | ४५ | ७५ | १६ |
| वर्षादिनानि | २७दिन | सप्ताह | १ मास | २०दिन | १०दिन | २ मास | १मास | २ मास |
| वर्षाप्रश्नः | विलम्ब | श्रेष्ठ | विलम्ब | उत्तम | उत्तम | नवर्षा | उत्तम | नवर्षा |
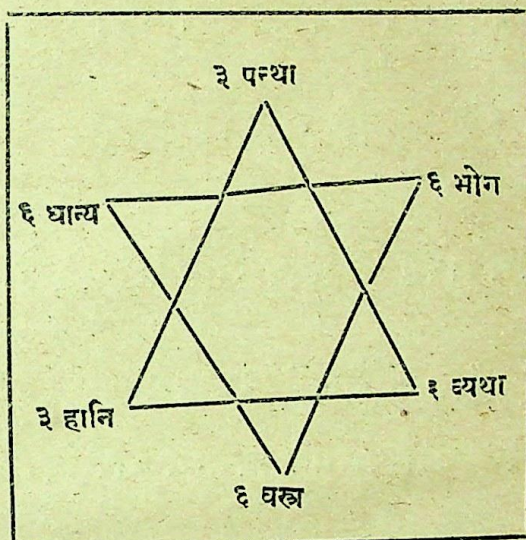
कोई प्रश्न करे कि अमुक दिन मुझे कैसा होगा इस के लिए—

प्रश्नाक्षरं रुद्रयुतं सप्तभिर्भाग मा दिशेत् ।
अति नास्तिस्मृति लाभ क्षेम वै कीर्ति नाशकम् ॥४७॥

भाषाः—प्रश्न के अक्षरों में ११ और जोड़ दे ७ सप्त से भाग दे शेष का फल जानिये १ बचेतो अस्ति २ बचे तो नास्ति ३ शेष स्मृति ४ लाभ ५ कुशल ६ कीर्त्ति ७ नाश ।

इति पण्डित लाहौरीराम विरचिता ज्योतिष दिवाकरे
प्रश्न तन्त्रः ।

# अथ वर्ष प्रकरण प्रारम्भः

## प्रथम वर्षेष्ट के लिये रीति लिखते है,

गताब्द बृन्दै भुवि खाभ्रचन्द्रैर्निघ्नेनभो व्योम गजैः सुभक्ता।
त्रिधा फलं वार घटी पलानि स्वजन्म वारादि युतानि इष्टम् १.

भाषा—वर्तमान सम्वत् में से जन्म सम्वत् हीन करे तो गताब्द संज्ञा होती है,। गताब्दों को भुवि १ ख० अभ्र० चंद्र १ ( अर्थात् १०० से गुणना और नभ० व्योम० गज ८ अर्थात् ८०० का भाग दे ३ जगह स्थापना करै जो फल प्राप्त होय सो वार इष्ट होय उस में जन्म का वार इष्ट जोड़ देय और ऊर्ध्वांक में ७ का भाग देय तो वर्ष का वारेष्ट सिद्ध होगा ॥ १ ॥

और एक वर्ष से १०० वर्ष तक सारिणी भी लिखो है उस से जितने गत वर्ष हों उस वर्ष के नीचले कोष्ठ में अपना जन्मेष्ट वारादि युत करने से वर्षेष्ट होगा ॥

## अब तिथि बनाने का क्रम कहते है।

याताब्द बृन्दो गुणवेद रामै ३४३ र्निघ्नः कुरामै ३१ र्बिहृतो दिनाद्यम्। घस्रैः सहोत्थैः सहितं खरामै३०र्भक्तंच शेषात्तिथि-रत्रवर्षे ॥ २ ॥

भाषाः—गत वर्षों को ३४३ से गुणा करे फिर ३१ का भाग देय जो अङ्क प्राप्ति होय सो तिथि जानना इस में जन्म को तिथि युक्त करे फिर ३० से भाग ले जो शेष रहे सो वर्ष की तिथि होगी परन्तु कहीं २ तिथि में १ ऊनाधिक हो जाता है ॥२॥

## क्षेष्टसारणीयम् ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | वर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०१ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | वार |
| १५ | ३१ | ४६ | ०२ | १७ | ३३ | ४८ | ०४ | १९ | ३५ | ५० | ०६ | २१ | ३७ | ५२ | ०८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ | घटी |
| ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २६ | ५८ | ३० | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | पल |
| ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | विपल |
| २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | वर्ष |
| ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०० | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | वार |
| ४३ | ५९ | १४ | ३० | ४५ | ०१ | १६ | ३२ | ४७ | ०३ | १८ | ३४ | ४९ | ०५ | २१ | ३६ | ५३ | ०७ | २३ | ३८ | ५४ | ०९ | २५ | ४० | ५६ | घटी |
| ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २४ | ५४ | २६ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | पल |
| ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | वि० |
| ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | वर्ष |
| ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | वार |
| ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ०० | १५ | ३१ | ४७ | ०२ | १८ | ३३ | ४९ | ०४ | २० | ३५ | ५१ | ०६ | २२ | ३७ | ५३ | ०८ | २४ | घटी |
| ४६ | १८ | ४२ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | पल |
| ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | वि० |
| ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | वर्ष |
| ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | वार |
| ३९ | ५५ | १० | ३६ | ५१ | १७ | ३२ | ४८ | ०३ | १९ | ३५ | ५० | ०६ | २१ | ३७ | ५२ | ०८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | २५ | ४१ | ५६ | १२ | घटी |
| ५४ | २५ | ५७ | २८ | ५० | २१ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | पल |
| ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | वि० |

## नक्षत्र क्रम वा योग क्रम।

व्योमेन्दु १० भिर्सगुणिता गताब्दाः ख शून्य वेदाब्धि २४० लवैर्विहीनाः। जन्मर्क्ष योगैः सहिता प्रवस्था नक्षत्र योगौ भव-तो भ२७तष्टौ॥ ३॥

गत वर्षों को १० गुणा करे फिर दो जगह रक्खे एक जगह में २४० का भाग दे जो फल प्राप्ति होय वह दूसरे में घटादे और जन्मर्क्ष वा योग जोड़ दे और उस नक्षत्र में २७ का भाग दे जो शेष रहे सो वर्ष नक्षत्र वा योग होता है॥ ३॥

और ग्रह वा भाव स्पष्टो करने की रीति पहिले लिख चुके हैं, उसी रीति से स्पष्ट करने

## ( अथ मुंथा )

सैका गताब्दा विरताः पतंगै स्तच्छेष भावे मुथहा जनुर्भात्॥४॥

भाषाः—गताब्द में एक १ युक्त करना १२ से भाग देना जो शेष रहे सो जन्म से मुन्था को स्थान जानना॥ ४॥

## ( अथ पञ्चाधिकारी )

मुंथेशो १ वर्ष लग्ने २ श स्तत्त्रैराशिक नायकः।
दिवार्क राशि नाथश्च रात्रौ चन्द्रर्क्षनायकः॥
जन्म लग्ने श्वर ५ श्चैव वर्ष पंचाधि कारिणः॥ ५॥

भाषाः—मुंथेश १ वर्ष लग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिन में वर्ष प्रवेश होय तो सूर्य की राशि का स्वामी रात्रि में वर्ष प्रवेश होय तो चन्द्र की राशि का स्वामी ४ जन्म लग्नेश ५ वर्ष में यह पंचाधिकारी शुभा शुभ फल के लिये ग्रहाधिकार देखना जिसके अधिक अधिकार हों सो बलवान् जानना॥ ५॥

त्रिराशिपाः सूर्य्यसितार्क शुक्रा दिने निशीज्येन्दु बुध क्षमाजाः।
मेषाचतुर्णां हरि भाद्विलोमंनित्यं परेष्वार्कि कुजेज्य चन्द्राः॥६॥

भाषाः—त्रिराशि पति सूर्य शुक्र और शनि शुक्र दिन में मेष से आदि लेकर कर्क राशि तक चक्र से प्रतीत होगा॥ ६॥

( त्रैराशिप चक्र मिदम् )

| राशयः | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिवास्वामी | सू० | शु० | श० | शु० | शु० | बु० | श० | शु० | सू० | सू० | श० | शु० |
| रात्रिस्वामी | बृ० | चं० | बु० | चं० | बृ० | चं० | बु० | मं० | बु० | चं० | बु० | मं० |
| हद्दास्वामी | श० | मं० | बृ० | मं० | श० | चं० | बृ० | मं० | श० | मं० | बृ० | मं० |

## अथ त्रिपताकी चक्र की बिधीः ।

रेखा त्रयं त्रिर्यगधोर्ध्व संस्थ मन्योन्य विद्धाग्रकमीशकोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताक चक्रं प्राङ् मध्यरेखा ग्रह वर्ष लग्नात् ॥७॥

भाषाः—रेखा ३ टेढ़ी ३ सीधी करै और परस्पर ईशान कोण से रेखा हर का वेध करे इस को पण्डित जन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इस में पूर्व की मध्य रेखा में हर वर्ष लग्न का न्यास करना ॥ ७ ॥

## अथ ग्रहन्यासः ।

न्यसेद्ग्रचक्रं च विलग्नकार्या ताराब्द संख्या विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मग चारराशे स्तुल्येचराशौ विलिखेच्छशांके ॥
परेचतुर्भाजित शेषतुल्ये स्थाने खरांशे खचरास्तु लेख्याः ॥ ८॥

भाषाः—त्रिपताकी चक्र पर १२ राशि न्यास करना और गत वर्ष में १ युक्त करना ९ से भाग लेना शेष जो बचे सो जन्म राशी से उतनी ही संख्या में चन्द्रमा लगाना और ग्रह को ४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे वहां अपने स्थान से लिखना और राहु केतु अपने स्थान से पीछे लिखना तो त्रिपता की चक्र स्पष्ट होता है ॥ ८ ॥

## वेध विचार ।

स्वर्भानु विद्धे हिमगौ त्व रिष्टं तपोर्कविद्धे रुगिनोर्ध्वविद्धे ।
महीज विद्धेतु शरीर पीड़ा शुभैश्च विद्धे जयसौख्य लाभाः ॥
शुभा शुभव्योमगवीर्य गोत्र फलंतु वेधस्य वदेत् सुधीमान् ९

भाषा:-त्रिपताकी चक्र में वेध देखने की रीति सर्व ग्रहों का वेध चन्द्रमा से देखना और से चन्द्र का वेध होय तौ अरिष्ट जानना सूर्य से वेध हो तो ताप जानना शनि से वेध होय तो रोग जानना-भौम से शरीरपीड़ा और शुभ ग्रह से वेध होय तो जय प्राप्ति सौख्य लाभ वा शुभ ग्रह का बल देखकर वेध में कहना ॥ ९ ॥

## मुद्दा दशारीति ।

जन्मर्चसंख्या सहिता गताब्दा द्विगूनिता नन्दहृता विशेषात् ।
श्राचंकुराजीं शबुकेशुपूर्व भवन्ति मुद्दा दशिका क्रमोयम् १०

भाषा:—जन्म नक्षत्र की जो संख्या उस में गताब्द की संख्या मिलानी और दोनों की जो संख्या हो उस में से २ दो अङ्क ऊन करने ९ नव से भाग देना जो अङ्क शेष रहे वह दशा जानना ॥ १ ॥ १ शेष हो तो सूर्य को २ चं ३ कु० ४ राहु० ५ जीव ६ शनि ७ बुध ८ केतु ९ शुक्र यह मुद्दा दशा का क्रम ज्योतिशास्त्र के आचार्यों ने कहा है, स्पष्ट चक्र में मासादि देख लेने ॥ १० ॥

## मुद्दादशा चक्रम् ॥

| सू० | चं० | कु० | रा० | जी० | श० | बु० | के० | शु० | दशानाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ०१ | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०० | ०२ | मास |
| १८ | ०० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ०० | दिन |

## अथ ग्रहाणामुच्चनीच चक्रम् ॥

| सू० | चं० | मं० | बु० | बृ० | शु० | श० | ग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मेष | २ वृ० | १० | ६ | ४ | १२ | ७ | उच्च राशि |
| ७ | ८ | ४ | १२ | १० | ६ | १ | नीचराशि |
| १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० | अंश |

सूर्यादिग्रह जितने अंशों में जिस राशि के परमोच्च होते हैं उतने ही अंशों पर उच्च राशि से सप्तम राशि के परम नीच होते है, (यथा) सूर्य मेष राशि के १० अंशों पर परमोच्च है तो उस से सप्तम राशि तुला का १० अंशों पर परम नीच होगा।

## अथ राशीनामीशः ॥

| सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | बृ० | शुक्र | शनि | ग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | १ | ३ | ९ | २ | १० | राशिः |
| ० | ० | ८ | ६ | १२ | ७ | ११ | राशिः |

## [ अथ स्त्री जातकाऽध्यायः ]

यद्यत्फलं नरभवे क्षम मङ्गनानां-
तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम् ।
तासां तु भर्तृमरणं निधनेव युयुस्तु-
लग्नेन्दुगं सुभगतारतमये पतिस्तु ॥ १ ॥

भाषा.—जन्म में जो २ फल पुरुषों के कहे हैं वह स्त्रियों के असम्भव है इस लिये स्त्री जातक जुदा कहते हैं कि जो वृत्ता ताम्रादिगित्यादि लक्षण हैं वह तो स्त्रियों के जुदे कहना जो राज्य योगादि है वह उनके भर्त्ता के होगें कहना जो नामसादि हैं वह दोनों को फल देते हैं, अथवा समस्त फल पुरुषों को कहना और अष्टम स्थान से स्त्रियों के भर्त्ता को मृत्यु का विचार भी कहा जायगा और स्त्रियों के लग्न चन्द्र राशि का फल और सप्तम स्थान का फल सौभाग्य और पति के रूपादिक पृथक् होते हैं, वह भी कहे जायेंगे ॥ १ ॥

**कन्यैव दुष्टा व्रजती हदास्यं साध्वी समाया कुचरित्र युक्ता ।**
**भूस्या त्मजर्क्षे क्रमशोंशकेषु वक्रार्कि जीवेन्दुजभार्गवानाम्॥२॥**

भाषाः—जिस स्त्री के लग्न वा चन्द्रमा मंगल की राशि १ । ८ में हों और वह भौम के त्रिशांशक में हों तो वह स्त्री विना विवाह पुरुष संगम करे शनि के त्रिशांशक में हों तो विना ही विवाहो दासी होवे । बृहस्पति त्रिशांशक में हो तो पतिव्रता होवे और बुध के त्रिशांशक में तो माया वाली हो शुक्र के त्रिशांशक में हो तो दुष्टा हो (अर्थात्) दुष्ट काम करे ॥ २ ॥

**दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुर पूजितर्क्षे ।**
**स्यात्कापटी क्लीब समासती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्ण कामा ३**

भाषाः--जिस स्त्री का लग्न वा चन्द्रमा शुक्र क्षेत्र २ । ७ का हो और भौम त्रिशांशक में हो तो वह स्त्री दुष्ट स्वभाव की हो शनि त्रिशांश में हो तो एक भर्त्ता के जीवते ही दूसरा पति करे बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो गीत, वाद्य, नाच, चित्र, कारीगरी के काम जानै शुक्र त्रिशांश में हो तो गुण शीलादि से ख्यात हो जो लग्न वा चन्द्रमा सौम्य क्षेत्र । ३ ।६ का हो तो नपुंसक जैसी सूरत हो बुध त्रिशांश में तो गुणवती शुक्र त्रिशांश में व्यभिचारिणी होवे ॥ ३ ॥

**दृक् संस्था वसित सितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घट राशि सम्भवोंशः । स्त्री भि स्त्री मदन विषानलं प्रदीप्तं संशान्तिं नयति नरा कृति स्थिताभिः ॥४॥**

भाषाः—जिस के जन्म में शुक्र शनि के अंशक का और शनि शुक्र के अंशक का हो और दोनों की परस्पर दृष्टि भी हो तो वह स्त्री अति कामातुर होवे ( बदिक )

चमड़े वा किसी वस्तु का लिंग बनाकर दूसरी स्त्री के हाथ से कामदेव रूपी विषाग्नि को शमित करावे और वृष वा तुला लग्न हो और तत्काल कुम्भ का नवांशा हो तोभी वही फल है ॥ ४ ॥

वृद्धो मूर्खः सूर्य जर्वेशकेवा स्त्रीलोलः स्यात् क्रोधन श्चावनेये ।
शौक्रे कांतोतीव सौभाग्य युक्तो विद्वान्भर्त्ता नैपुणज्ञश्च वौधे ५

भाषाः—जिस के जन्म से सप्तम स्थानमें शनिका अंशक वा राशि हो तो उस का भर्ता बूढ़ा और मूर्ख होगा जिस के भौम का अंशक वा राशि सप्तम में हो उस का भर्त्ता स्त्रियों की अति इच्छा करने वाला और क्रोधी होगा ऐसे ही शुक्र के राश्यंश होने से भर्त्ता स्वरूपवान् और गुणवान् होवे बुध की राशि अंश में भर्त्ता पण्डित और सब काम जानने वाला होवे ॥ ५ ॥

सौरे मध्यबले बलेन रहितै शीतांशु शुक्रेन्दुजैः ।
शेषैर्वीर्य समन्वितैः पुरुषिणी यद्योज राश्युद्गमः ॥
जीवा रास्फुजि दैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्न राशौ समे ।
विख्याता भुवि नैक शास्त्र निपुणा स्त्री ब्रह्म वादिन्यपि ॥६॥

भाषाः—जिसका शनि मध्यम बली हो और चन्द्रमा शुक्र-बुध निर्बल हों और सूर्य मंगल बलवान् हों और विषम राशि लग्न में हो तो वह स्त्री बहुत पुरुषों का गमन करने वाली होवे। जो गुरु-भौम-शुक्र-बुध बलवान् हों और सम राशि लग्न में हो तो सर्वत्र गुणों से विख्यात और शास्त्र जानने वाली मुक्ति को मार्ग जानने वाली होवे ॥६॥

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः ।
मृयते चाष्टमे वर्षे चन्द्रः षष्ठाष्ठमेयदि ॥ ७ ॥

भाषा—स्त्री के जन्म काल में लग्न में पाप ग्रह हों तो ७ वर्ष में पति नाश जानना और चन्द्र षष्ठ वा अष्टम स्थान में होय तो अष्ठ वर्ष में विधवा होगी ॥ ७ ॥

रवि सुतो यदि कर्क मुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ।
किल जलो दर संजनिता तदा निधनता वनिता सत कीर्तिता ८

भाषाः—जो शनि कर्क राशि में होय और चन्द्रमा मकर राशि का होय तो जलो-दर रोग से स्त्री का नाश जानिये ॥ ८ ॥

इति स्त्री जातकम् ।

## ( अथ स्त्रीणां द्वादश भाव फलम् )

| स्थान | सू० | चं० | मं० | बु० | वृ० | शु० | श० | रा० | के० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | विधवा | आयु नाश | विधवा | पति व्रता | पति व्रता | पति व्रता | दरिद्रा | पुत्र नाशक | पुत्र नाशक |
| २ | दरिद्र दुःख | बहु पुत्रवती | दरिद्र दुःख | सौभाग्य संपत्ति | सौभा- ग्यवती | सौभा- ग्यवती | दरिद्र दुःख | दारिद्र दुःख | दरिद्र दुःख |
| ३ | पुत्रवती धनयुक्त | पुत्रवती धन० | " | " | " | " | लक्ष्मी वती | " | " |
| ४ | दरिद्रा | दुर्भगा | अल्प संतान० | अति सुखव० | " | " | अल्प दुग्ध० | पुत्र नाश० | पुत्र नाश० |
| ५ | शिशु नाशका | कन्या धिका | शिशु नाशका | बहु फलप्रा० | " | " | रोगि- णी | अति दुखिनी | " |
| ६ | धन वती | विधवा | धन वती | कलह रूपा | धन वती | वेश्या | धन वती | " | " |
| ७ | रोगि- णी | प्रसा विनी | विधवा | क्षय वती | भय युक्ता | मृत्यु वती | वैधव्य मरण | अर्थ हीना | " |
| ८ | विधवा | वियो गिनी | धन वती | वियो- गिनी | " | " | अति पुत्र० | मरणांत वियोग | " |
| ९ | धर्मपुष्- कलकरे | पुत्र वती | धर्म शीला | उत्तम भोगव० | धर्म वृद्धि० | " | वंध्या | " | " |
| १० | पापिनी | व्यभि चारि० | मृत्यु० | धन वती | धन वती | " | दुष्टा | विधवा | " |
| ११ | बहुपुत्र वती | लक्ष्मी वती | बहु पुत्र० | सखि- नी | आयु ष्मती | पुत्र वती | धन वती | सौभाग्य वती | " |
| १२ | द्रव्य हीना | दिनां- न्ध | बंध्या व्यभि. | सुपुत्रा | सुशी- ला | पति व्रता | व्यय करी० | कुलटा | " |

## जन्म कुण्डली से संवत् वा पक्ष वार तिथि नक्षत्र योग वा इष्ट की रीति।

### ॥ सम्बत् की रीति ॥

जन्मांग चक्रास्थित मन्दराशेः संजात सम्बत्सर मन्दराशिम्।
गणेच सार्धद्वयवत्सरैश्च गुण्या तदंकं गत वत्सरंस्यात् ॥ १ ॥

भाषाः—जन्म चक्र में शनि जिस राशि का हो उस से आगे को राशि से वर्तमान सम्वत् को राशि तक गिने अढाई गुण करने से गत वर्ष होतो है गत वर्षों को वर्तमान संवत् में घटाने से जन्म का सम्वत् निकलता है ॥ १ ॥ फिर सम्वत् में से १३५ घटाने से शाका होतों हैं,

### अयन रीति।

मकरादि भषट् सुसंस्थिते द्युमना वुदगयनं प्रचक्षते।
कर्कादि भषट् सवैयदाह्ययनं दक्षिणगं वदेत्सदा ॥२॥

भाषाः—मकर के सूर्य्य से कुछ पहिले उत्तरायण और कर्क के सूर्य से कुछ पहिले दक्षिणायन सूर्य्य होता है ॥ २ ॥

### पक्ष जानने की रीति।

तथैव सूर्य्याद्गणयेच्च चन्द्रं चेज्जायते सप्तम राशिवर्त्ती।
तदा भवेजन्मनि शुक्ल पक्षो ह्यतः परस्तात्प्रवदेच्च कृष्णम् ॥३॥

भाषा—जिस के जन्मचक्र में सूर्य से सात राशि के भीतर चन्द्रमा होय तो शुक्ल पक्ष का जन्म अगर सात राशि से अधिक हो तो कृष्ण पक्ष का जन्म कहना ॥३॥

### तिथि की रीति।

सदाऽमायुतो जन्म पत्र्यां रविः स्यात्तथा सार्धद्वेदू तिथिं यः स्सुगुण्यात्। हिमांशोस्समीपं तिथि यत्प्रसंख्या लभेतां वदे द्वाक् पतेस्सुप्रणीतम् ॥ ४ ॥

भाषाः—जन्मांग चक्र में जहां सूर्य हो वहां अमावस जाने वहां से हरेक कोठे में अढाई २ तिथि समझ चन्द्रमा तक गिने सब को एकत्र कर फल तिथि होती है ॥४॥

## जन्मवार की रीति ।

मधोस्सितात्संगणितं चमासं सार्धैक गुण्यं गत वत्सराढ्यम् ।
भजैन्नगै ७ श्चापिगणे च शेषं वर्षे सवारात्स्फुट वासरस्यात् ॥५॥

भाषाः-- चैत्र शुक्ल की पड़वा से जन्म मास तक गिन ड्यूढ़ा करे फिर बीते पक्ष के दिन जोड़ सात का भाग दे शेष वार जानना ॥ ५ ॥

## नक्षत्र की रीति ।

कार्त्तिका द्विगुणं मासं कृत्वा च तिथि संयुतम् ।
सप्तविंशति हरेद्भागं नक्षत्रं प्रवदेत्क्रमात् ॥ ६ ॥

भाषाः-- कार्तिक से जन्ममास तक गिने फिर उनको द्विगुण करे बीते पक्ष के दिन जोड़ २७ सत्ताईस का भाग दे शेष जन्म नक्षत्र जाने ॥६॥

## योग रीति ।

भानुभं गणयेत्पुष्या च्छ्रवणां चान्द्रभं तथा ।
चैकी कृत्वा क्रमाद्योगान्विष्कुम्भादीन् वदेत्क्रमात् ॥७॥

भाषाः--पुष्य नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्र पर्यंत गिने और श्रवण से जिस दिन का योग जानना हो उस दिन के नक्षत्र तक गिने इकट्ठा करे २७ से भाग ले शेष विष्कुम्भादि योग जानने ॥ ७ ॥

## अथेष्ट की रीति ।

जन्मांगस्थ हिमांशु लग्न नृपते गिनती गिनावों तुझे ।
स्याच्चेनन्द गृहेऽथवा शर गृहे खाने अगर सातवे ॥
तस्माद् गेह त्रिकोणकेपि च यदा पैदा हुआ वक्तहो ।
इष्टा वाक्पतिना स्फुटं विरचितं होवे सही लग्नसो ॥ ७ ॥

भाषाः - चन्द्रमा से ५ या ९ तहां से ७ या वहां से ५ या ९ के भीतर हो तो लग्न सही है नहीं तो अशुद्ध कहदेना ॥ ७ ॥

## दिन या रात्रि के जन्म की रीति।

सूर्याच्च लग्नं यदि षड् ग्रहान्तरे भवेत्तदा जन्म दिवा वदेद्बुधः।
स्यात्सप्तमे यस्य च तस्य सायं तदन्यथा चेज्जननं निशायाम् ॥८॥

भाषाः--सूर्य से जो लग्न छः ६ घर के भीतर होय तो दिन का जन्म है जो सात में होय तो श्याम का जन्म सात से उपरांत होय तो रात्रि का जो लग्न में सूर्य होय तो प्रातः काल का ॥ ८ ॥

## स्त्री पुरुष का जन्मांग जानने की रीति।

रवि राहु कुजांकानि लग्नांकेन च योजयेत्।
त्रिभिर्भागावशेषे च खैके नारी द्वये पुमान् ॥ ९ ॥

भाषाः-सूर्य राहु भौम यह तीनों ग्रह जिन २ राशि अङ्कों में होंय उन तीनों अङ्कों को, और जन्मलग्न को एकत्र करे ३ से भाग लेय जो शेष १ वा ० रहै स्त्री की और २ दो बचें तो पुरुष की कोई २ आचार्य मंगल के अङ्कों को नहीं जोड़ते ॥ ९ ॥

## मरे वा जीते पुरुष का जन्मांग जानने की रीति।

प्रश्नांकरं प्रस्थभ जन्मलग्नमेकत्र युक्तं वसुनाथ गुण्यम्।
लग्नेश भक्तं सम शून्य शेषे मृतंभवेज्जीवित मन्यथात्वे ॥१०॥

भाषाः- प्रथम जब कोई प्रश्न करे कि यह जन्म पत्र मरे का है या जीवत पुरुष का तब उसी प्रश्नलग्न के अङ्क को लिख लेय फिर अष्टमभाव का अङ्क और जन्म लग्न अङ्क इन सब को एकत्र करे और इन को अष्टमेश से गुणे फिर लग्नेश से भाग ले जो शेष सम या शून्य रहै तो मृतक का और जो विषम बचे तो जीवित पुरुष का जन्म पत्र जानना ॥ १० ॥

## तेजी मन्दी वस्तु देखने की रीति ॥

### अथ ध्रुवांकानि ॥

| १५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | ३० | तिथयः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | ३० | ध्रुवांकानि |

### अथ वाराणां ध्रुवांकानि ॥

| रविः | चन्द्रः | भौमः | बुधः | गुरुः | भृगुः | शनिः | वाराणि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१ | १५ | १२ | २ | १३ | १४ | ०० | ध्रुवांकानि |

### नक्षत्राणां ध्रुवांकानि ।

| नक्षत्राणां नामानि | ध्रुवांकानि | नक्षत्र | ध्रुवांक | नक्षत्र | ध्रुवांक | नक्षत्र | ध्रुवां | नक्षत्र | ध्रुवां |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | १८ | पुनर्वसु | २८ | हस्त | १८ | मूला | १८ | पू०भा। | ९ |
| भरणी | ५ | पुष्य | २८ | चित्रा | २५ | पूर्वाषाढा | १३ | उ०भा० | ४१ |
| कृत्तिका | ३२ | आश्लेषा | ३६ | स्वाती | १४ | उत्तराषा | १० | रेवती | २८ |
| रोहिणी | १४ | मघा | १५ | विशाखा | २४ | श्रवण | २५ | | |
| मृगशिर | ४ | पूर्वा फाल्गुनी | ३ | अनुराधा | २१ | धनिष्ठा | २३ | | |
| आर्द्रा | १३ | उत्तराफा. | ३१ | ज्येष्ठा | ३७ | शतभिषा | २४ | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वि० | १३ | सिद्धि | २२ |
| प्री० | १२ | व्यतिपात | १३ |
| आ० | ४७ | बरियान | ३९ |
| सौ० | ४९ | परिघ | १५ |
| शो० | ३६ | शिव | १३ |
| ऽतिगं | ४७ | सिद्ध | १९ |
| सुकर्मा | १८ | साध्य | १३ |
| धृति० | ४४ | शुभ | २५ |
| शूल० | ४३ | शुक्ल | २२ |
| गण्ड० | २५ | ब्रह्म | १३ |
| बृद्धि० | १७ | ऐन्द्र | २७ |
| ध्रुव० | २२ | वैधृत | २ |
| व्याघात० | १५ | योगाः | |
| हर्षण | ३५ | | |
| वज्र | १४ | ध्रुवां का | |
| योग | ध्रुवां | | |

| मेष | वृष | मि० | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृ० | धन | मकर | कुंभ | मीन | राशयः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २२ | ३३ | २५ | १६ | १७ | २२ | १२ | १६ | १९ | २३ | २५ | ध्रुवांकानि |

| धान्य | कुनक | ज्वार | मूंग | चने | चीना | तुरी | सुंठी | तैल | घृत | [illegible] | गुड़ | शक्कर | सुपारी | धान्य ना० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७७ | १०९ | १३३ | १४१ | ३५ | ३० | ७७ | ७५ | ६२ | ४२ | ९९ | ४७ | १०१ | ६५ | ध्रुवां. |
| नारियल | मजीठ | कपास | रुई | सूत्र | वस्त्र | कस्तूरी | चन्दन | बैल | गौ | भैंस | घोड़ा | बकरी | | धान्य वा पशु |
| १०४ | १२८ | १२० | ४४ | १०७ | १०९ | १३४ | १८७ | १७६ | ४७ | ९३ | ८ | ७० | | ध्रुवां. |

( विधीः ) एते ध्रुवां का संक्रमणादिने गणनीयः ।

इस ध्रुवां के को संक्रांति के दिन तिथि वारादियों को इकट्ठे करना ३ से भाग देना १ शेष रहे तो समभाव २ बचें तो सस्ते ३ रहें तो महिंगे शुभं भूयात् ॥

इति चतुर्थाधिकारः ।

इति श्रीमन्महाराज विद्ववर पण्डित रामकृष्ण सुत लाहौरी राम विरचिता ज्योतिष दिवाकर सम्पूर्णः ॥